₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

अगस्त 2013

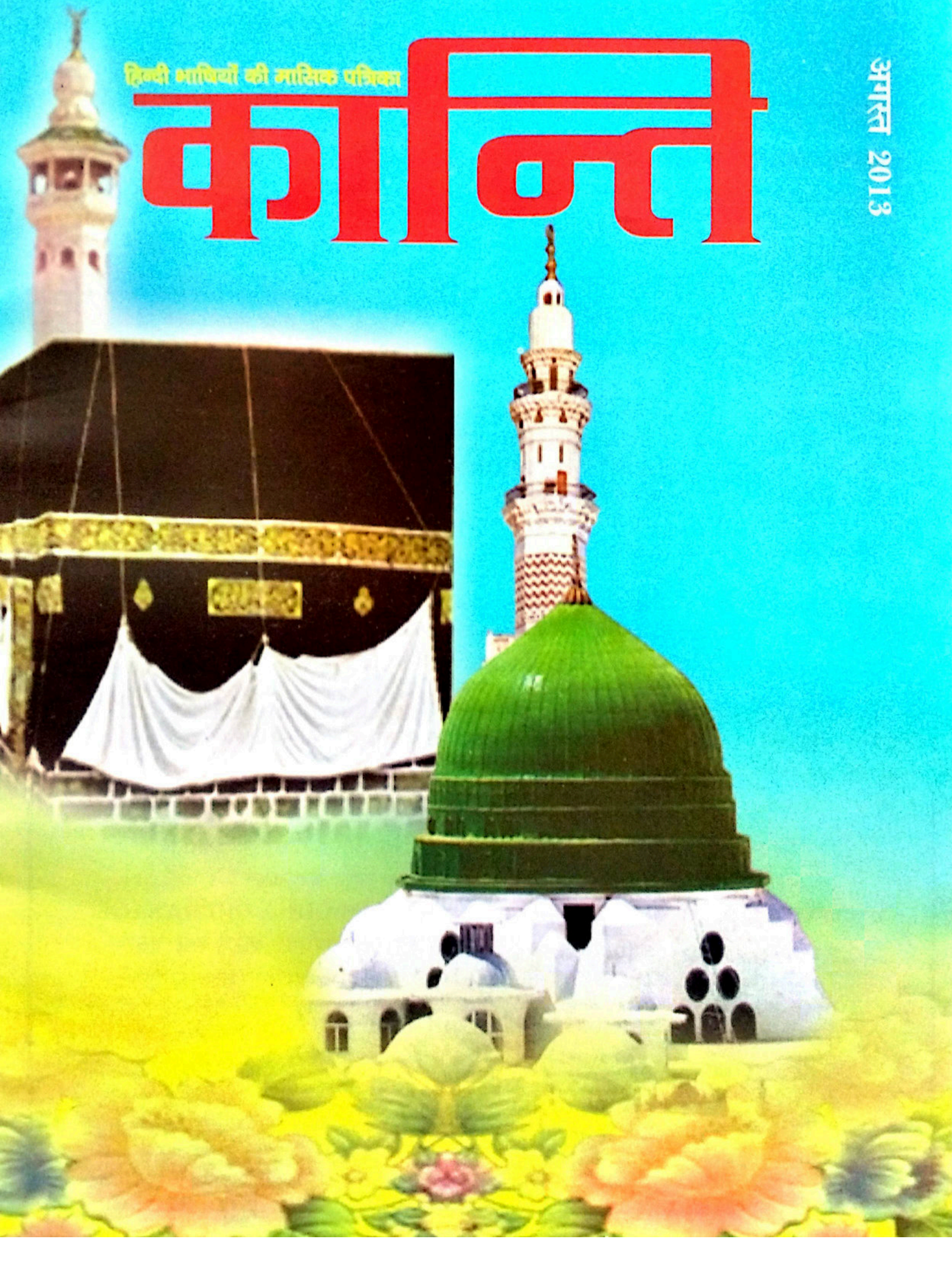

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

संक्षिप्त परिचय

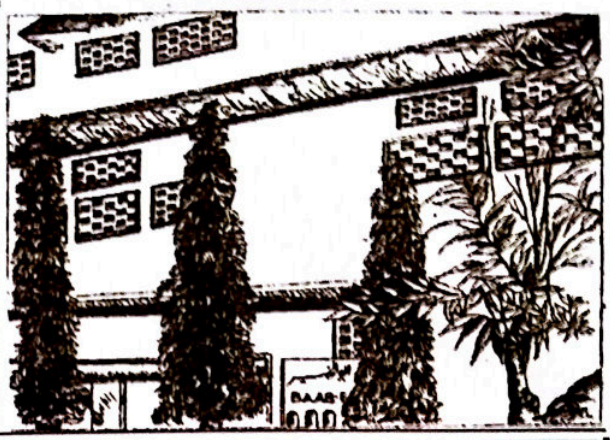

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में ही पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2012 ई॰ तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 2 अगस्त 2013

रमज़ान वह महीना है जिसमें क़ुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

धन का है अतिरेक विनाशक

संग्रह से बढ़ती चिन्ताएं
चिन्ता ही पीड़ा का कारण,
धन का है अतिरेक विनाशक
जो दूषित करता है जीवन ।

❖

सुखमय हों दिन-रात हमारे
यदि हम बांट के जीना सीखें,
निज 'अमृत' परहित में देकर
औरों का विष पीना सीखें ।

❖

छोड़ बनावट, आडम्बर को
सबसे मिलें भेदों को भूल
ध्यान रहे इतना ही मन में
कि वाणी से बरसे फूल ।

❖

पुरस्कार या प्रतिदान की
इच्छाएं न कभी घटित हों
श्रम-सेवा की सबल भावना
हर कलाप में सदा फलित हों ।

❖

ईश्वर से हम डरें हृदय से
दोषी को भी क्षमा करें,
हाथ बढ़ें तो बढ़ें मदद को
हर झोली उपकार भरें ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
हथुवा, बिहार-841436



कहां क्या है ?

धन का है अतिरेक विनाशक (कविता)	–अभिराम सत्यज्ञ जयशील	3
क़ुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
रमज़ान के रोज़े और चरित्र निर्माण (संपादकीय)		7
जीवन का सार्थक उद्देश्य (आपके पत्र)		8
अफ़सर (कविता)	–डॉ॰ शरद नारायण खरे	11
इस्लाम में नेकी की अवधारणा (आस्था)	–हमूदा अब्दलती	13
इन्सान और उसकी समस्याएं	–मौलाना सैयद हामिद अली	15
अल्लामा इक़बाल और हिन्दुस्तान (विचारणीय)	–वसीम अकरम त्यागी	17
आध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए (अभिमत)	–डॉ॰ जगदीश गांधी	21
स्वाभिमान (कहानी)	–डॉ॰ सलीम ख़ान	23
रमज़ान : नेकियों का मौसमे बहार (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	26-27
रमज़ान के रोज़े का महत्व	–मौलाना राबेअ हसनी नदवी	28
रमज़ान में क़ुरआन उतारा गया		30
ईदुल फ़ित्र इस्लामी संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक	–मुहम्मद अली शाह शुऐब	31
अमीरी रेखा की ज़रूरत (दृष्टिकोण)	–रोशनलाल अग्रवाल	33
ऐच्छिक है वंदे मातरम् (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	35
जीवन उद्धार (कविता)	–सुनीता शर्मा	35
भारत बंगलादेश सीमा पर सिसकती इन्सानियत (ज्वलंत सामयिक)	–मुशर्रफ़ अली	37
हकीम अब्दुल हमीद देहलवी (प्रेरक)	–मौलाना सिराजुद्दीन नदवी	39
हिन्दी कविता की प्रीतभरी सुवास (पुस्तक-समीक्षा)	–गिरीश पंकज	41
मुक्तक	–कमल किशोर 'भावुक'	42
तंत्र-मंत्र के चक्कर में फंसते हताश लोग	–सी॰ के॰ रहमानी	43
हिन्दी ग़ज़ल	–डॉ॰ यायावर	44
शीतल पेय के रूप में बिक रही बीमारियां (स्वास्थ्य चर्चा)	–विद्या प्रकाश	45
मोक्ष की प्राप्ति क्यों और कैसे ?	–श्याम नारायण चौहान	47
ख़तरे में है डाल्फ़िन (बालवीथी)		50

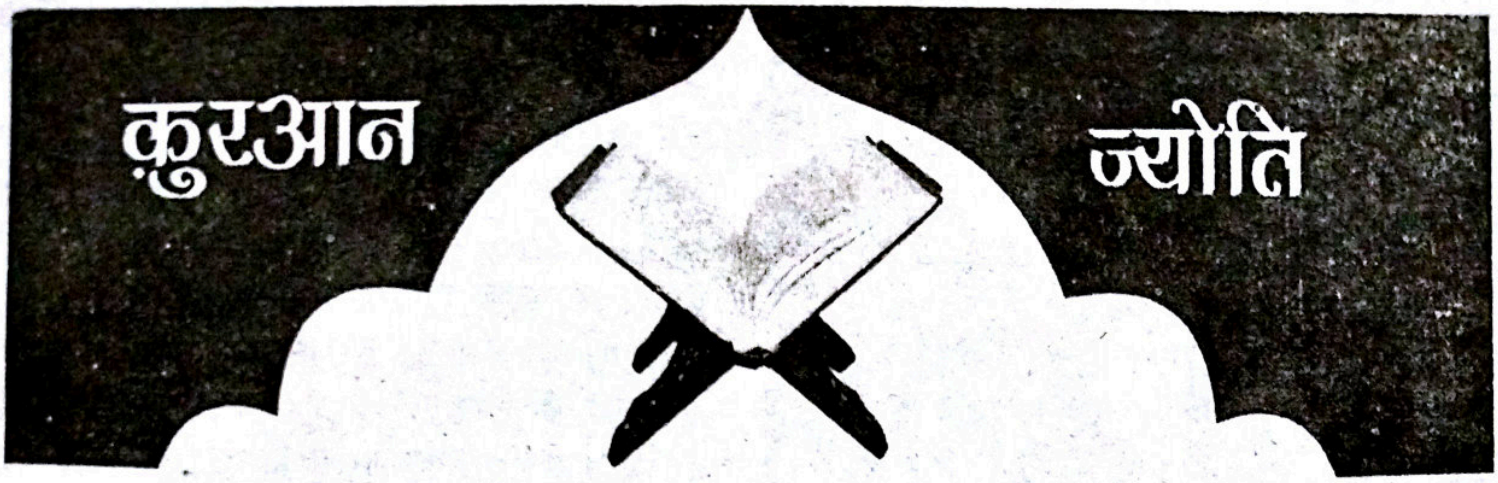

(32) ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूंकों से बुझा दें। परन्तु अल्लाह अपना प्रकाश पूर्ण किए बिना मानने वाला नहीं है, भले ही वह इन्कार करने वालों को कितना ही अप्रिय हो। (33) वह अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा है, ताकि उसे दीन की पूरी जिंस पर ग़ालिब कर दे[32] चाहे मुशरिकों को यह कितना ही अप्रिय हो।

(34) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, इन किताब वालों के अधिकतर विद्वानों और संतों का हाल यह है कि वे लोगों के माल ग़लत तरीक़ों से खाते हैं और उन्हें अल्लाह की राह से रोकते हैं।[33] दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी दो उनको जो सोने और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते।

–क़ुरआन, 9 : 32,34

---

32. मूल अरबी में 'अद-दीन' शब्द इस्तेमाल हुआ है जिसका अनुवाद हमने दीन की पूरी जिंस किया है। 'दीन' का शब्द, जैसा कि हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं, अरबी भाषा में उस जीवन-व्यवस्था या 'जीवन बिताने का तरीक़ा' के लिए प्रयुक्त होता है जिसके स्थापित करने वाले को विश्वसनीय और माननीय स्वीकार करके उसका पालन किया जाए। अतएव रसूल के भेजे जाने का उद्देश्य इस आयत में यह बताया गया है कि जिस मार्गदर्शन और सच्चे धर्म को वह अल्लाह की ओर से लाया है, उसे दीन (धर्म) का स्वरूप रखने वाले तमाम तरीक़ों और व्यवस्थाओं पर ग़ालिब कर दे।

दूसरे शब्दों में रसूल कभी इस उद्देश्य के लिए नहीं भेजे गए कि जो जीवन-व्यवस्था लेकर वह आया है, वे किसी दूसरी जीवन-व्यवस्था के अधीन और उसके वशीभूत होकर और उसकी दी हुई रियायतों और गुंजाइशों में सिमटकर रहें, बल्कि वह धरती और आकाश के बादशाह का प्रतिनिधि बनकर आता है और अपने बादशाह की सत्य व्यवस्था को ग़ालिब देखना चाहता है। अगर कोई दूसरी जीवन-व्यवस्था दुनिया में रहे भी तो उसे अल्लाह की व्यवस्था की दी हुई गुंजाइशों में सिमटकर रहना चाहिए, जैसा कि जिज़्या अदा करने की शक्ल में ज़िम्मियों की जीवन-व्यवस्था रहती है।

33. अर्थात ज़ालिम केवल यही ज़ुल्म नहीं करते कि फ़तवे (धर्मादेश) बेचते हैं, रिश्वतें खाते हैं, नज़राने लूटते हैं, ऐसे-ऐसे धर्म-विधान और रस्में गढ़ते हैं जिनसे लोग अपनी मुक्ति इनसे ख़रीदें और इनका मरना-जीना और शादी व ग़म कुछ भी इनको खिलाए बिना न हो सके, और वे अपने भाग्य बनाने और बिगाड़ने का ठेकेदार इनको समझ लें, बल्कि इसके साथ ही अपने इन्हीं स्वार्थों के लिए ये लोग अल्लाह के बंदों को गुमराहियों के चक्कर में फंसाए रखते हैं और जब कभी कोई सत्य की दावत सुधार के लिए उठती है तो सबसे पहले यही अपनी विद्वतापूर्ण धोखाधड़ी और मक्कारी के हथियार ले-लेकर उसका रास्ता रोकने के लिए खड़े हो जाते हैं।



अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने हर नमाज़ के बाद तैंतीस बार सुबहानल्लाह' (महान है अल्लाह) और तैंतीस बार 'अलहम्दुलिल्लाह (प्रशंसा अल्लाह के लिए है) और तैंतीस बार 'अल्लाहु अकबर' (अल्लाह से बड़ा है) कहा और एक बार यह कहकर सौ की गिनती पूरी कर ली : अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है, तो उसके गुनाह क्षमा कर दिये जाते हैं चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों।" –मुस्लिम

● हज़रत काअब बिन उजरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "नमाज़ के बाद पढ़े जाने वाले कुछ सूत्र-वाक्य हैं जिनको उच्चारित करने वाला–या इन पर अमल करने वाला–कभी असफल नहीं होता, प्रत्येक अनिवार्य नमाज़ के बाद (पढ़े जाने वाले सूत्र–वाक्य ये हैं): तैंतीस बार 'सुबहानल्लाह', तैंतीस बार 'अलहम्दुलिल्लाह' और चौंतीस बार 'अल्लाहु अकबर'।" –मुस्लिम

● हज़रत साअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) नमाज़ों के बाद इन शब्दों के द्वारा अल्लाह से पनाह चाहते थे : "ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कायरता और कंजूसी से बचने के लिए, और मैं तेरी पनाह चाहता हूं इस चीज़ से कि मैं ऐसी अवस्था की तरफ़ लौटा दिया जाऊं कि असहाय होकर रह जाऊं और मैं तेरी पनाह चाहता हूं दुनिया की आज़माइश से बचने के लिए, और मैं पनाह चाहता हूं क़ब्र की आज़माइश से बचाव के लिए।" –मुस्लिम

● हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनका हाथ पकड़कर कहा : "ऐ मुआज़ अल्लाह की क़सम, मैं तुमसे प्रेम करता हूं।" फिर आपने कहा : "ऐ मुआज़, मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि हर नमाज़ के बाद यह पढ़ना कभी न छोड़ना : 'अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्ने इबादतिका' (ऐ अल्लाह, तू इसमें मेरी सहायता कर कि मैं तुझे याद करूं और तेरे आगे कृतज्ञता दिखलाऊं और तेरी अच्छी इबादत करूं)।" –अबू दाऊद। अबू दाऊद ने इसे सहीह सनदों से रिवायत किया है।

● हज़रत अली (रज़ि॰) से रिवायत है। वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब नमाज़ पढ़ते, तो 'तशहहुद' (गवाही के शब्दों) और सलाम के बीच जो अंतिम शब्द पढ़ते वे ये होते : "ऐ अल्लाह, मेरे गुनाहों को क्षमा कर दे जो मैंने पहले किये और जिनको मैंने बाद में किया, और जो मैंने छुपाकर किये और जो खुले रूप में किये, और जो मर्यादा का उल्लंघन मुझसे हुआ हो और उसे भी जिसको तू मुझसे अधिक जानता है, तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है।" –मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

रमज़ान के रोज़े और चरित्र-निर्माण

इन्सान के नैसर्गिक गुणों के विकास के लिए आवश्यक है कि उसकी अच्छी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया जाए । इसके अभाव में उसकी स्वाभाविक क्षमता और शक्ति के उभरने व विकसित होने का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है । इस्लामी शिक्षाओं की एक और उभरी हुई विशेषता यह भी है कि वह इन्सान के अन्तर को निखार कर उसे उसका स्वाभाविक व्यावहारिक रूप प्रदान करने पर ज़ोर देती है । रोज़ा इस शिक्षा-दीक्षा की एक कड़ी है । रोज़ा आध्यात्मिक और नैतिक प्रशिक्षण का एक उत्तम उपाय है । यह पवित्रतम इबादत है । इसका वास्तविक उद्देश्य यह है कि मन विकारों से मुक्त होकर शुद्ध हो, लोगों में संयम व परहेज़गारी पैदा हो और वे ईशपरायण बन सकें । इस कर्म को अनिवार्य घोषित किया गया है । क़ुरआन में है : ''ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस प्रकार तुम से पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे आशा है कि तुम में धर्मपरायणता का गुण पैदा होगा (2:183)।'' रोज़ा इस्लाम का चौथा स्तंभ है । यह इस्लामी कलेन्डर के नवें माह रमज़ान भर रखा जाता है, रोज़े के लिए क़ुरआन ने जो शब्द प्रयोग किया है, वह है ''सौम'' । ''सौम'' का शब्दार्थ है : बचना, पार्थक्या और मौन । रोज़े के सन्दर्भ में ''सौम'' किसी चीज़ से रुक जाने की स्थिति का नाम है । रोज़ा वास्तव में उसी व्यक्ति का है जो रोज़े की हालत में (उषाकाल से सूर्यास्त के मध्य) तो खाने-पीने और विषय भोग से रुक जाए, लेकिन गुनाहों और अप्रिय कार्य को सदैव के लिए छोड़ दे ।

रोज़ों का एक विशेष लाभ यह है कि इनसे इन्सान के मन-मस्तिष्क और हृदय में अल्लाह का डर एवं परहेज़गारी पैदा हो जाती है । उसमें मन की इच्छाओं और कामनाओं को अपने वश में रखने की शक्ति आ जाती है । इनसे आत्मिक शक्ति बढ़ती और निखरती है । लेकिन ये सब लाभ उस समय प्राप्त हो सकते हैं, जब रोज़ेदार ख़ुद भी अपने अन्दर ये बातें पैदा करनी चाहे और इनके लिए कोशिश करे एवं उन बातों का पालन करे, जिनके आदेश अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दिये हैं । रोज़ेदार को इसका आदेश दिया गया है कि वह अपनी ज़ुबान और अपने अंगों को शरीअत विरोधी कामों में न लाए और गाली-गलौज आदि से दूर रहे । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया : ''जब तुम में से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाए और न शोर मचाए । और यदि कोई उसे गाली दे या लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं (बुख़ारी, मुस्लिम)।'' एक हदीस में है : ''जिस व्यक्ति ने (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा तो अल्लाह को इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि वह (रोज़ा रखकर) अपना खाना-पीना छोड़ दे (बुख़ारी)।''

इन्सानों पर यूं तो अल्लाह के अनेक उपकार हैं । लेकिन उसका सबसे बड़ा उपकार यह है कि उसने हमें क़ुरआन प्रदान किया, जिसने इन्सानों के सांसारिक और पारलौकिक जीवन की सफलता का मार्ग दिखाया, इन्सानों को मुक्ति और शाश्वत कल्याण का मार्ग दिखाया । रमज़ान मास में ही क़ुरआन अवतरित होना आरंभ हुआ था । अत: क़ुरआन के अवतरण उद्देश्यों और रोज़े में बड़ी समानता पायी जाती है । क़ुरआन जिन उद्देश्यों के अंतर्गत अवतरित हुआ है, उसकी प्राप्ति में रोज़ा सहायक होता है । यदि रोज़े से वास्तविक रूप से फ़ायदा उठाया जाए, तो वह इन्सान को उस स्थान पर खड़ा कर देता है कि उसे सदैव अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास रहता है । वह किसी समय भी अपने को अनुत्तरदायी नहीं समझेगा । वह सदैव गुनाहों और बुरे कर्मों से बचेगा एवं अपने जीवन-लक्ष्य को सामने रखेगा । अपेक्षित है कि वह एक ओर जहां सत्य के समर्थन और असत्य व अनैतिकता के उन्मूलन के लिए जानतोड़ कोशिश करे और दूसरी ओर ग़रीबों, मुहताजों और ज़रूरतमन्दों को सहायता पहुंचाए एवं उनके साथ सहानुभूति का मामला करे । इस्लाम का मौलिक उद्देश्य इन्सान की पूरी ज़िन्दगी को अल्लाह की इबादत बना देना है । ईद के दिन आत्मिक ख़ुशी से परिपूर्ण बन्दा अपने पैदा करने वाले के आगे झुकता और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है । सभी को ईदुल फ़ित्र की हार्दिक मुबारकबाद ।

जीवन का सार्थक उद्देश्य

मानव जीवन को उत्तम गुणों से समावेश करना ही उज्ज्वल चरित्र के निर्माण की प्रमुख भूमिका है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो मनुष्य महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तत्पर हो जाता है, उचित-अनुचित का विचार छोड़कर जैसे भी बने, वैसे अपना स्वार्थ सिद्ध करने की नीति जब अपनायी जाने लगती है, तो मनुष्य का व्यक्ति असुरता से परिपूर्ण हो जाता है । जहां राक्षसी भावना में वृद्धि होगी वहां सुख-शांति का ठहर सकना संभव नहीं होगा ।

सच्चा विद्यार्थी जीवन ही मानव के चरित्र को ऊंचा उठाने में सहायक होता है । हमारे देश में चारों तरफ़ अपराधों, अभावों, चिंताओं और समस्याओं का घटाटोप अंधेरा छाया हुआ है । इसका प्रमुख कारण मानव जीवन में बढ़ रही संकुचित भावना, स्वार्थपरता व चरित्रहीनता है । यदि हम दुनिया के इतिहास के पन्नों को उलटकर देखें तो यह पता चलेगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उनमें अहंकार, क्रोध, मोह, स्वार्थ आदि की कलुषित भावनाएं नहीं थीं ।

व्यक्ति स्वयं तो पाप करता ही है साथ ही दूसरों को भी अपने साथ पाप में ले डूबता है । आज कोई भी व्यक्ति ईमानदारी एवं निस्वार्थ भावना से कार्य नहीं करना चाहता है । सब जगह मुनाफ़ाख़ोरी, रिश्वत व घोटाला करने की प्रवृत्ति जारी है । इसी कारण से हमारे देश की प्रगति अवरुद्ध बनी पड़ी है ।

यह जानते हुए भी कि हम हाड़-मांस के पुतले हैं । कुछ ही ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कि निस्स्वार्थ भावना से जीवन भर कार्य करते हैं । उच्च भावनाओं के आधार पर वह श्रेष्ठ व्यक्ति भविष्य में बन जाता है परंतु अधिकांश व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसे घिनौने कार्य करता है कि वह स्वयं का नहीं समाज व राष्ट्र का अनुचित बोझ बन जाता है । जिससे देश की प्रगति का ह्रास होता है । यदि हमें आत्म-कल्याण के लक्ष्य की पूर्ति करनी है तो हमें सत्प्रवृत्तियों को अपनाना होगा । कुकर्मी और पापवृत्तियों में डूबे हुए लोग चाहे कितना ही धार्मिक कर्मकांड क्यों न करते रहें, कितना भजन-पूजन कर लें, उन्हें परमेश्वर के दरबार में प्रवेश न मिल सकेगा । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अपनी संकुचित भावना को बिल्कुल त्याग दे और यह शपथ ले कि भविष्य में जो भी कार्य करूंगा वह निस्स्वार्थ भावना से ही, उसमें किसी भी प्रकार का अहंकार, क्रोध, लोभ आदि का समावेश होगा ही नहीं । व्यक्तिगत संकीर्णता को छोड़ना होगा । अपने में परमार्थ की भावना उत्पन्न करनी पड़ेगी । तभी समाज व देश ऊंचा उठ सकेगा ।

रामस्वरूप झैवर
9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार,
भीलवाड़ा (राज॰)

इस्लाम की दावत

इस्लाम अरबी शब्द है, जिसका अर्थ है शांति शुद्धता प्रतिग्रहण समर्पण और वचनबद्धता । इस तरह इस्लाम धर्म अल्लाह की रहनुमाई और उसकी शिक्षाओं का पूर्ण प्रतिग्रहण है ।

भाइयों जिस प्रकार ईश्वर ने अपनी सृष्टि और उसकी एक-एक वस्तु के लिए अटल प्राकृतिक नियम बना दिये हैं जिनकी पाबन्दी करने और उन्हें मानने से ही इन्सान के लिए शांति, सफलता और उन्नति है । ठीक उसी प्रकार इन्सान के नैतिक और सामाजिक जीवन के लिए भी ईश्वर ने निर्धारित अटल और निश्चित नियम और क़ानून बनाये हैं, जिनकी ठीक-ठीक पैरवी करने से ही मानवजाति को इस संसार में पूर्ण शांति और सुकून का जीवन और मरने के बाद मुक्ति तथा सुखी जीवन प्राप्त हो सकता है । जैसा कि कुरआन मजीद में इरशाद है-"लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है । यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों का उपचार है और जो उसे अपना ले उसके लिए मार्गदर्शन और रहमत है । (कुरआन, 10:57)

इस्लाम की दावत ही हर नबी का मिशन रहा है जिसके लिए उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी है । ठीक वही काम उनकी उम्मत यानी मुसलमानों का भी है । इस्लाम की दावत में माल की क़ुरबानी तथा जिद्दोजेहद का

बड़ा अहम मक़ाम है । कभी ऐसा भी समय आता है कि जनसेवा में अपनी अज़ीज़ चीज़ों की क़ुरबानी करनी पड़ती है और सब्र और हिक्मत से भी काम लेना पड़ता है ।

"तुम नेकी के मक़ाम को नहीं पहुंच सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें अल्लाह की राह में ख़र्च न करो जिन्हें तुम प्रिय रखते हो और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे अल्लाह उससे बेख़बर न होगा ।" (क़ुरआन, 3:92)

हर मुसलमान पर यह फ़र्ज़ है कि वह ख़ुद इस्लाम की राह पर चले और अपने घर वालों को भी उस पर चलाने की कोशिश करे । इस्लाम की दावत की पहल ख़ुद अपने घर से अपने लोगों से किया जाए, जिसे देखकर अन्य लोग प्रभावित हों । अपने ही घर से लोग तैयार किये जाएं ।

इसी कार्य के लिए हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ मांगी थी कि ऐ पालनहार मुझे ऐसी औलाद दे जो मेरा उत्तराधिकारी तेरा ज़िक्र करने वाला एवं शुक्रगुज़ार हो तथा इस शहर मक्का को अमन और शांति का नगर बना दे ।

अल्लाह ने उनकी दुआएं शब्दत: क़बूल की । अल्लाह का शुक्र है कि आज इतिहास गवाह है कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के कुनबे में पीढ़ी दर पीढ़ी नबियों का सिलसिला जारी रहा । इस तरह अल्लाह की राह में जान खपाने तथा उसके आदेशों के अनुसार जीवन बसर करने वालों की वह दुनिया और आख़िरत दोनों संवार देता है । जैसा कि क़ुरआन में है–

"और हमने उनको इमाम बना दिया जो हमारे आदेश से लोगों को रास्ता बताते थे और हमने उन्हें वह्य के ज़रिये नेक काम करने और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने की हिदायत की और वे हमारे इबादत गुज़ार थे ।"

(क़ुरआन, 21:73)

फिर फ़रमाया : "वही है जिसने उम्मियों के अन्दर एक रसूल ख़ुद उन्हीं में से उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है, उनकी ज़िन्दगी संवारता है और उनको किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है । हालांकि इससे पहले वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे ।"

(क़ुरआन, 62:2)

श्यामनारायण चौहान
ग्रा०-विशुनपुरा, पो०-मधेला,
चन्दौली (उ०प्र०)

आध्यात्मिक शिक्षा

आज सम्पूर्ण समाज लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया को आशा भरी नज़रों से देख रहा है । व्यवस्था से निराश लोगों को यह विश्वास है कि मीडिया के माध्यम से उनकी बात ज़्यादा प्रभावी तरीक़े से शासन-प्रशासन तक पहुंच सकती है और उन्हें न्याय मिल सकता है । अत: मीडिया के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती है कि समाज के उस भरोसे, उस विश्वास को टूटने न दें । और मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि आप अपनी पत्रकारिता धर्म का पालन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ कर रहें हैं । इस महान कार्य के लिए आप हमारी ओर से ढेर सारी बधाइयां स्वीकार करने की कृपा करें ।

हमारा यह सामाजिक उत्तरदायित्व है कि हम अभिभावकों के सहयोग से बच्चों को भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करें क्योंकि ऐसे बालक आगे चलकर स्वस्थ व सभ्य समाज की आधारशिला रखेंगे । इसलिए मेरी गोवा सरकार के साथ ही भारत के अन्य प्रान्तों की सरकारों के साथ ही भारत सरकार से भी अनुरोध है कि वे जगत गुरु कहे जाने वाले इस देश की संस्कृति एवं सभ्यता को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालयों में बच्चों को अनिवार्य रूप से यौन शिक्षा की जगह आध्यात्म की शिक्षा दें ।

डॉ० जगदीश गांधी
संस्थापक-प्रबंधक
सिटी मॉंटेसरी स्कूल, लखनऊ

अनूठी पत्रिका

मैं लगभग एक वर्ष से 'कान्ति' का नियमित पाठक हूं । निश्चित रूप से यह अनूठी पत्रिका है । जो अपने हर अंक में समाज में व्याप्त कुरीतियों व समस्याओं पर लेख के साथ-साथ विविध पाठ्य सामग्री को पूर्णत: अपने में समेटे हुए है । यही व एकमात्र कारण है जिससे 'कान्ति' अन्य

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

मासिक पत्रिका से अलग है ।

पत्रिका के कई अंकों में स्त्री समस्या के विभिन्न पहलू पर लेख जैसे 'नारी सुरक्षा का ज्वलंत एवं गंभीर प्रश्न', फ़रवरी 13 का संपादकीय, साथ ही महिला सशक्तीकरण पर डॉ॰ मुहम्मद अहमद का लेख तथा स्त्री अस्मिता कुछ विचारणीय बातें', रचना त्यागी 'आभा' का विमर्श तथा कन्या भ्रूण हत्या पर जून 2013 का लेख काफ़ी प्रभावशाली है । साथ ही मार्च 2013 अंक में शराब पर विस्तृत जानकारी जैसे उपयोगी संदर्भ प्रकाशित कर सामाजिक बुराइयों तथा उनके निराकरण की बातें द्वारा भी यह पत्रिका समाज को उचित मार्गदर्शन देती है । और आगे भी देती रहें, इसी शुभकामनाओं के साथ ।

अतुल कुमार
(अधिवक्ता)
चर्च रोड, चन्दवारा,
मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार)

महिला सम्मान

टी॰वी॰ और फ़िल्मों में महिलाओं को भोग की वस्तु बनाकर पेश किया जा रहा है । विज्ञापनों में नारी जाति को नंगा किया जा रहा है । महिलाओं से ऐसे-ऐसे फूहड़ दृश्य कराये जाते हैं कि जिसे देखकर शरीफ़ आदमी की नज़रें शर्म से झुक जाएं ।

इनका ही प्रभाव है कि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ और बलात्कार की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं । महानगरों में ही नहीं अब यह बीमारी छोटे शहरों और गांवों में भी फैल गयी है । और ख़तरनाक बात यह है कि आम लोग इसके प्रति संवेदनहीन हो गये हैं । लोग न गंदे फ़िल्मी दृश्यों और विज्ञापनों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं और न ही महिलाओं के अपमान का विरोध करते हैं ।

यह स्थिति बदलनी चाहिए । हमें अपनी इन्सानियत को जगाना होगा और महिलाओं के सम्मान का भूला हुआ पाठ फिर से याद करना होगा । औरत हर हाल में सम्माननीय है । औरत मां है, बहन है, बेटी है और पत्नी है और हर रूप में सम्माननीय है । समाज में एक बार फिर से इस सत्य को स्थापित करना होगा, केवल तभी इसे टूटने से बचाया जा सकता है ।

ज़ाकिर हुसैन बैलिम
फैंसी बाज़ार, गुवाहाटी, असम

सद्व्यवहार

'कान्ति' का जून अंक (2013) वक़्त से मिल गया । आश्चर्य भी हुआ क्योंकि अपनी डाक व्यवस्था राम भरोसे ही चल रही है । ख़ैर अंक बहुत ही अच्छा निकला है । कई-कई विचारों से हम अवगत होते हैं । हमारे धर्म ग्रंथों में अच्छी बातों का ही समावेश होता है पर उन्हें हम अपने जीवन में नहीं उतार पाते । कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि हमारे व्यवहार से सामने वालों को कोई तकलीफ़ न पहुंचे । इतना ही हो तब भी समाज में सकून व अम्न आ सकता है । कन्या भ्रूण हत्या के बारे में अब इस गंदी मानसिकता को क्या कहा जाए ? हमारा समाज हमारी सरकार, मानवाधिकार वाले सबके सब घड़ियाली आंसू बहाते हैं । जो व्यक्ति इन भ्रूण हत्याओं में शामिल होता है उसे आजीवन कारावास या फिर फांसी की सज़ा क्यों नहीं दी जाती ? जिस देश का क़ानून इतना लचर हो उस देश की प्रगति हो नहीं सकती । शर्म आती है ऐसी सरकार पर जो हाथ पर हाथ धरे बैठी है ।

माला वर्मा
हाजीनगर, प॰ बंगाल

आज भी ऐसे लोग हैं

मैं एक दुकान पर बैठा था–वहां का व्यापारी आया और दुकान मालिक को 6500/- रुपये देने लगा तो दुकानदार बोला ये किस बात के हैं । आने वाले ने कहा कि 5 दिन पूर्व मेरा लड़का आया था और आप से सामान लेकर गया था परंतु भुगतान उसने नहीं किया, अब मैं देने आया हूं । आने वाले अंसारी समाज के मुस्लिम बंधु थे । उन्होंने कहा आपका सामान मैंने ऐसे ही रखा है, यह भुगतान होने के बाद मैं उसका उपयोग करूंगा । भुगतान तो ले लिया परंतु जब उससे चर्चा हुई तो कहा यह तो हमारा फ़र्ज़ था–हम ईमान कैसे खोते ।

इस पर मुझे क़ुरआन की आयत का ध्यान आया जिसमें फ़रमाया गया है कि सच्चा मुसलमान वही है जो ईमान पर चले । ख़ुदा ऐसे आदमियों को पसन्द करता है और उसकी हमेशा मदद को तैयार रहता है । क़ुरआन पर काफ़ी चर्चा हुई और यह सोचने को भी बाध्य होना पड़ा कि आज भी ऐसे लोग हैं जो ईमान पर चलते हैं वरना कौन देता है 5 दिन पूर्व लिए गये सामान का पैसा । हमने व्यापारी बंधु को कहा भाई ऐसे सज्जन पुरुष का मुंह तो मीठा करो जो ईमान पर चलते

हैं तो तुरंत सभी के लिए रसगुल्ले मंगाये गये और खुदा का लाख-लाख शुक्र अदा किया गया ।

घर को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है, इसे ऐसे समझने की ज़रूरत है । जब बोलना नहीं आता था तब माता-पिता लाड करके बोलते थे, क्योंकि वे बोलना चाहते हैं । आज जब हमें बोलना आता है तो हम उनसे नहीं बोलते । कितने कृतघ्न हो गये हैं हम । जबकि माता-पिता से दिन में 5-7 मिनट बोलकर कृतज्ञ बनने की ज़रूरत है । प्राय: हम दूसरों से, दूसरों की स्त्रियों से, दूसरों के मां-बाप से, दूसरों के बच्चों से बातें करते हैं उतने ही अच्छे से, यदि अपनों से हम बात करने लगें तो हमारा घर स्वर्ग बन जाएगा ।

घेवरचन्द गोदीका
639, सिरमोर हाउस, बारड़ी का रास्ता,
किशनपोल बाज़ार, जयपुर-302003

तम्बाकू से मौत

संयुक्त राष्ट्र संघ के सोशल एवं इकानोमिक काउंसिल द्वारा प्रकाशित जानकारी के अनुसार विश्व भर में प्रत्येक वर्ष होने वाली मौतों में लगभग 10 प्रतिशत अर्थात 50 लाख लोगों की मृत्यु हमारे देश में धूम्रपान तम्बाकू सेवन के कारण हो रही हैं । हमारे देश में धूम्रपान के नाम पर 12 करोड़ लोग इस व्यवसन को अपनाते हैं । इस संबंध में चार सौ पचास अरब रुपये का कारोबार होता है जबकि जगज़ाहिर है कि इनके सेवन से टी०बी०, श्वसन विकार, फेफड़े-गले तथा मुख के कैंसर के अलावा अन्य जानलेवा रोग उत्पन्न होते हैं । वैसे भी तम्बाकू को हृदय का शत्रु माना जाता है । रोग ग्रस्त होने पर रोगी चिकित्सकों एवं अस्पतालों के चक्कर काटते हैं जहां उनकी जमापूंजी ख़र्च होने लगती है, किन्तु ऐसे रोगी रोग ग्रस्त होने के पूर्व उन उत्पादों से होने वाले गंभीर रोगों की बाबत ज़रा भी भय नहीं खाते । उन्हें जब मौत के मुंह में ले जाने वाले रोग उत्पन्न हो जाते हैं, रोगी की दशा बिगड़ जाती है तब अनुभवी चिकित्सक भी अपना हाथ खड़ा कर देते हैं । किसी पर ऐसा समय न आये । इन विषैले तत्वों को त्यागने के प्रति कठोर मन बनाना चाहिए तथा अपने स्वास्थ्य एवं पूंजी को बचाने का सकारात्मक प्रयास भी करते रहना चाहिए ।

मलिक
नागपुर

अफ़सर

रिश्वत खाने वाले अफ़सर,
दिल के होते काले अफ़सर ।

खा जाते सरकारी पैसा,
तोड़ें सारे ताले अफ़सर ।

अफ़सर पर अफ़सर की कृपा,
करते ख़ूब घोटाले अफ़सर ।

माल कमा लें इक दस्तख़त से,
देखो बैठे-ठाले अफ़सर ।

योजनाओं से है ख़ुशहाली,
हैं बरसाती नाले अफ़सर ।

किसी भी दल की होती सत्ता,
सबका नग़मा गा ले अफ़सर ।

ज़मीं भले ही हो सरकारी,
बस्ती निजी बसा ले अफ़सर ।

दिखते ऊपर से जो भोले,
अन्दर से वे भाले अफ़सर ।

ये भी खा ले, वो भी खा ले,
इन्सां को भी खा ले अफ़सर ।

रहम, दया का नाम नहीं है,
निष्ठुर, हृदय वाले अफ़सर ।

'शरद' देश के हर कोने पर,
चिपके बनकर जाले अफ़सर ।

प्रो० (डॉ०) शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय
मंडला (म०प्र०)-481661

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(क़ुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

इस्लाम में नेकी की अवधारणा

■ हमूदा अब्दलती

इस्लाम ने सदैव अंधविश्वासों और कुसंस्कारों से बचने के लिए मानवजाति को सचेत किया है । उसने निष्प्राण रस्मों और अप्रभावी विश्वासों से बचने पर भी ज़ोर दिया है । नेकी क्या है, कुरआन की यह आयत इस पर पूरी रोशनी डालती है–'नेकी और वफ़ादारी यह नहीं है कि बस तुम अपने चेहरे पूरब या पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि वफ़ादारी उनकी वफ़ादारी है, जो अल्लाह पर, अंतिम दिन पर, फ़रिश्तों पर किताब पर और नबियों पर ईमान लाए और माल का (स्वाभाविक) मोह होने पर भी नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और गरदनें छुड़ाने में ख़र्च करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें और जब कोई वचन दे तो अपने वचन को पूरा करने वाले हों और तंगी, शारीरिक कष्टों और युद्ध के समय धैर्य से काम लेने वाले हों । यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही लोग हैं, जो (अल्लाह का) डर रखने वाले हैं ।' (कुरआन, 2:177)

इस आयत में नेक व्यक्ति का एक सुन्दर और सुस्पष्ट वर्णन मौजूद है । यहां बताया गया है कि एक भले और नेक व्यक्ति को चाहिए कि वह हितकारी नियमों का पालन करे और पूरी निष्ठा के साथ यह उद्देश्य कि वह अल्लाह के प्रति और उसकी मख़लूक़ (अन्य जीवों) के प्रति उसी की प्रसन्नता के लिए प्रेम करगा, इसे अपना ले ।

इन्हीं बातों को हम यहां चार भागों में बांट सकते हैं–

1. हमारा ईमान सच्चा और निष्ठापूर्ण होना चाहिए ।

2. अपने ही जैसे इन्सानों के प्रति दयालुता और सेवा का प्रदर्शन करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए ।

3. परोपकारी संस्थाओं और सामाजिक संगठनों से सहयोग करके हमें अच्छा नागरिक बनना चाहिए, और

4. हालात कैसे भी हों, हम ने जिसे सही समझा है, उस पर अडिग डटे रहना चाहिए ।

अतएव यह बात साफ़ हो गयी कि नेकी कोई व्यर्थ की बकवास नहीं है । इसे सुदृढ़ विश्वास (मज़बूत अक़ीदे) और स्थायी कर्म पर आधारित होना चाहिए । इसका क्षेत्र एक व्यक्ति के विचारों से लेकर उसके कर्मों तक, उसके भीतर से लेकर बाहर तक, व्यक्तिगत मामलों से लेकर सामाजिक समस्याओं तक, फैला हुआ होना चाहिए । नेकी के इस्लामी सिद्धांत को जब भी क़ायम किया जाता है, व्यक्तिगत जीवन आम हालात में शांति से भर जाता है, समाज हर स्तर पर सुरक्षा का अनुभव करता है, राष्ट्र एकता और अखंडता से परिपूर्ण हो जाता है, और अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी आशा और सौहार्द-भाव का अनुभव करने लगती है । कैसा शांतिमय और आनन्दमय जीवन होगा, जब लोग नेकी की इस्लामी धारणा को अपना लेंगे ! मेहरबान ख़ुदा में आस्था से बढ़कर क्या चीज़ होगी जो आशाओं को जन्म दे और इन भले उद्देश्यों में इन्सान को लगाए ! इससे बढ़कर मानवता को विकसित करने वाली क्या चीज़ होगी कि दलितों को गहरे दुखों से निजात दिलायी जाए, शोषितों की परेशानियों को दूर किया जाए और बेसहारों की ज़रूरतें पूरी की जाएं ! इससे बढ़कर और क्या चीज़ व्यवस्थित और सत्य पर आधारित होगी कि वचन निभाया जाए, अन्तरात्मा की आवाज़ की रक्षा की जाए और सत्य, निष्ठा को क़ायम किया जाए ! और इससे बढ़कर और क्या चीज़ जीवन को आनन्द से भर देगी कि इन तमाम नेक कामों को, एक जीवन-दिशा समझ कर और अल्लाह की प्रसन्नता के लिए, पाबन्दी से किया जाता रहे ।

निष्ठा और संयम

ईमान और नेकी के बारे में अब तक जो कुछ कहा गया है, आम तौर से वही बात निष्ठा और संयम के बारे में कही जाती है । इसे याद कर लीजिए कि ये बातें सुविधा को जन्म देने के लिए और ज़ुबानी तौर पर मान लेने के लिए नहीं हैं । इन्हें गंभीरता से लेना चाहिए । किसी विषय को समझने और जानने के लिए कुरआन हमारा सबसे अच्छा साधन है ।

कुरआन मजीद में जब भी निष्ठावान और संयमियों का उल्लेख हुआ है, वह उनके गुणों का भी उल्लेख करता है । जैसे कुरआन के नज़दीक–

"यह (अल्लाह की) किताब है, इस (के आसमानी

किताब होने) में कोई संदेह नहीं, उन लोगों के लिए मार्गदर्शन है, जो अल्लाह का डर रखते हैं (संयमी और निष्ठावान हैं), जो बिन देखे ईमान लाते, नमाज़ क़ायम करते और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं। और (हे पैग़म्बर !) जो किताब तुम पर उतारी गयी है और जो तुम से पहले उतारी गयी थी, सब पर वे ईमान लाते हैं और आख़िरत पर यही लोग विश्वास रखते हैं। यही वे लोग हैं जो अपने पालनहार के सीधे मार्ग पर हैं और यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।'' (कुरआन, 2:2-5)

''(संयमी और निष्ठावान वे हैं) जो संपन्नता और तंगी, हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकने वाले हैं और लोगों को क्षमा करने वाले हैं और अल्लाह उत्तमकारों से प्रेम करता है और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई अश्लील काम कर गुज़रते हैं या अपने हक़ में कोई ज़ुल्म कर बैठते हैं, तो अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की क्षमा चाहते हैं–और कौन है सिवा अल्लाह के जो गुनाहों को क्षमा कर सके और जानते-बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते। ये लोग हैं कि इनका बदला इनके पालनहार की ओर से क्षमा और ऐसा बाग़ है, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें सदैव रहेंगे–और क्या ही अच्छा प्रतिदान है काम करने वालों का।'' (कुरआन, 3:132-136)

इन आयतों में हम पाते हैं कि सत्यनिष्ठा और संयम तक़ाज़ा करता है कि अल्लाह के अक़ीदे और ज़िन्दगी की सच्चाई के ज़रिये बुद्धि का उचित उपयोग किया जाए, हर प्रकार के हालात में अल्लाह के रास्ते में लगाकर दौलत का सही इस्तेमाल किया जाए और इबादत के ज़रिये इन्सान की आध्यात्मिक तथा भौतिक योग्यताओं का उचित उपयोग किया जाए। इसका यह तक़ाज़ा भी है कि हर व्यक्ति काम-क्रोध पर ज़बरदस्त कंट्रोल रखे, क्षमा-सहनशीलता की क्षमता बढ़ाये और इतना सचेत रहे कि गुनाह हो जाने के बाद तुरंत एहसास हो और तौबा करके अपने मालिक के हुज़ूर पलटे। तक़वा वाला (पवित्र और संयमी) होने का अर्थ है कि एक व्यक्ति दृढ़ निश्चयी हो, आचरण का शुद्ध हो, साहसी हो, वीर हो, इन सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह का दास और भक्त हो। पवित्रता, संयम, सच्चाई और सार्थक अक़ीदा (विश्वास) ये सभी एक-दूसरे से संबद्ध हैं और ये सभी एक ही धारा में बहते हैं, ये सभी इस्लाम की ओर ले जाते हैं और सच्चा मुसलमान बनाते हैं।

दर्पण

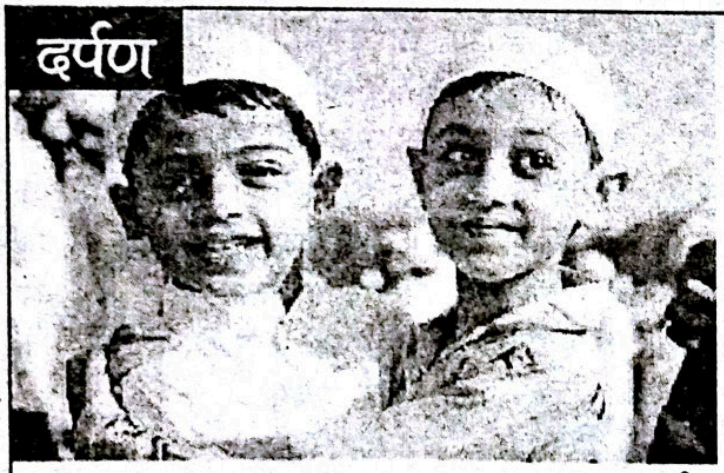



ईद के दृश्य

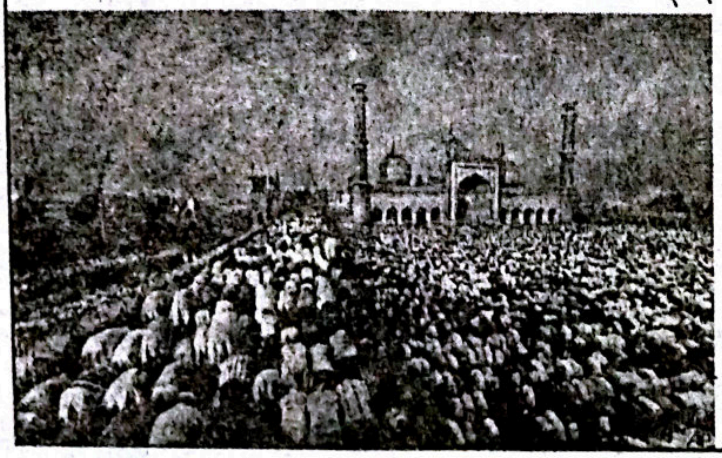



इन्सान और उसकी समस्याएं

■ मौलाना सैयद हामिद अली

यदि थोड़ी-बहुत दिलचस्पी होती भी है तो व्यवहारत: वे उससे अलगे रहते हैं । इन परिस्थितियों में विभिन्न पार्टियां और कुछ व्यक्ति अपना कार्यक्रम एवं योजना प्रस्तुत करते हैं । जिस पार्टी को मत देने वालों का बहुमत प्राप्त होता है, उसी को शासन करने का अधिकार प्राप्त होता है, चाहे यह 'बहुमत' विरोधी पार्टियों के मुक़ाबले में 'अल्पमत' ही क्यों न हो । मान लीजिए किसी स्थान पर मत देने वालों की संख्या पचास हज़ार है और उनके सामने दस पार्टियां हैं, यदि उनमें से किसी को पांच हज़ार से कुछ ही अधिक मत प्राप्त हो गये तो लोकतंत्र के अनुसार वह पचास हज़ार लोगों की प्रतिनिधि पार्टी मान ली जाएगी ।

तात्पर्य यह कि लोकतंत्र के बताये हुए तरीक़े के अनुसार अधिक से अधिक दस प्रतिशत व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व होता है । इस दस प्रतिशत व्यक्तियों के संबंध में क्या विश्वास कि वे शेष नव्वे प्रतिशत व्यक्तियों का भी सही प्रतिनिधित्व करेंगे और उनका भला चाहने वाले होंगे, फिर लोकतंत्र जनता को मतदान के लिए जो अवधि तय करती है, उसमें उन दस प्रतिशत लोगों की रायें भी बदलती रहती हैं जिनके प्रतिनिधि प्रतिनिधित्व करते हैं । और ऐसे लोग तो बहुत होते हैं जो इस अवधि के प्रारंभ होने के समय मत देने के योग्य नहीं होते और इस अवधि के बीच में इसके योग्य हो जाते हैं, आख़िर इन सब का प्रतिनिधित्व ये प्रतिनिधि कैसे कर सकते हैं ?

इन आपत्तियों को आज तक लोकतंत्र का बड़ा से बड़ा समर्थक भी हल न कर सका । वास्तविकता यह है कि लोकतंत्र अधिनायक तंत्र या राजतंत्र का ही एक परिष्कृत रूप है । राजतंत्र में सत्ता एक व्यक्ति के अन्दर केन्द्रित होती है और लोकतंत्र एक छोटे-से समूह के प्रतिनिधि ग्रुप में हस्तांतरित हो जाती है । किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था को चलाने के लिए जन-समर्थन की जितनी ज़रूरत होती है, एक डिक्टेटर (तानाशाह) भी अपनी सत्ता को बचाने के लिए उतने ही समर्थन का मुहताज होता है । वह भी राष्ट्र के एक वर्ग विशेष को ख़ुश रखने पर मजबूर है, अन्यथा उसकी सत्ता क़ायम नहीं रह सकती ।

दृष्टिकोण, सामाजिक संबंध और क़ानून, इन्सान हमेशा इन्हीं तीन समस्याओं में उलझा रहा है । वह इनका एक समाधान ढूंढ़ता है । जब वह व्यवहार की दुनिया में ग़लत सिद्ध होता है तो पश्चाताप एवं निराशा के साथ एक नये समाधान की तलाश में जुट जाता है । जब उससे भी उसकी उलझनें दूर नहीं होतीं तो अपनी असफलता का ऐलान करके एक तीसरा समाधान ढूंढ़ने लगता है । इस प्रकार वह ग़लत दृष्टिकोण, ग़लत नैतिक मूल्यों और ग़लत क़ानून के भंवर से निकलने नहीं पाता कि फिर उसी में फंस जाता है ।

इतिहास बताता है कि इन्सान को किसी आसमानी और ज़मीनी मुसीबत ने उतना नुक़सान नहीं पहुंचाया जितना उन दृष्टिकोणों ने पहुंचाया, जिन्हें स्वयं उसने गढ़ा था । महामारियों और रोगों ने उसे जितना तबाह किया उससे कहीं अधिक मानव निर्मित विचारधाराओं ने उसे नष्ट किया है ।

इतिहास बताता है कि इन्सान को किसी आसमानी और ज़मीनी मुसीबत ने उतना नुक़सान नहीं पहुंचाया जितना उन दृष्टिकोणों ने पहुंचाया, जिन्हें स्वयं उसने गढ़ा था । महामारियों और रोगों ने उसे जितना तबाह किया उससे कहीं अधिक मानव निर्मित विचार-धाराओं ने उसे नष्ट किया है । कुछ लोगों का यह कुतर्क है कि यदि इस ब्रह्माण्ड को किसी एक हस्ती ने पैदा किया होता तो विपरीत शक्तियां काम करती हुई नहीं पायी जातीं, बल्कि एकता और समानता होती । रचनात्मक क्रियाओं के साथ-साथ विघटनकारी क्रियाएं भी बताती हैं कि सत्ता एवं सामर्थ्य का स्वामी यहां अकेले कोई एक हस्ती नहीं है, बल्कि बहुत-सी हस्तियों का आदेश यहां चल रहा है । शिर्क यह नहीं सोच सकता कि जिसके हाथ ने किसी आकृति को उभारा हो वही उसे मिटा सकता है । वह यदि यह स्वीकार भी करता है कि यह ब्रह्माण्ड केवल एक हस्ती की रचना है, तो इस पर नियंत्रण एवं सत्ता एक से अधिक हस्तियों की मानता है ऐसी सत्ता जिन्हें ब्रह्माण्ड का अस्ल रचयिता भी चुनौती नहीं दे सकता ।

इस ब्रह्माण्ड के भिन्न-भिन्न प्रकार के परिदृश्यों को देखकर यह समझना कि इनके पीछे विभिन्न शक्तियां कार्यरत हैं, नादानी है । क्योंकि यहां परिदृश्य विभिन्न हैं, यथार्थ विभिन्न नहीं है । यह ब्रह्माण्ड एक नियम और उसूल के तहत चल रहा है, इसमें मतभेद नहीं हो सकता । इसमें संदेह नहीं कि इस ब्रह्माण्ड में विकास एवं विनाश दोनों ही हैं, परन्तु एक क़ानून के अधीन हैं । फूल जिस नियम के तहत खिलता है, वही नियम उसके मुरझा जाने का कारण बनता है । यह ब्रह्माण्ड विपरीत शक्तियों का अखाड़ा तब समझा जाता जबकि वह किसी एक उसूल पर क़ायम न होता ।

शिर्क की परिकल्पना इस ब्रह्माण्ड की जो व्याख्या करती है वह वास्तविकता के विपरीत तो है ही, इन्सान का अब तक का अनुभव भी इसे ग़लत क़रार देता है, क्योंकि इन्सान ने इतिहास में अब तक जो सबसे बड़ा अनुभव प्राप्त किया है, वह यह है कि जब सत्ता दो बराबर के हिस्सों में बंटी तो उसमें अनिवार्य रूप से विरोध एवं बिखराव भी पाया गया ।

परन्तु हम इस ब्रह्माण्ड में असाधारण संतुलन एवं सामंजस्य देखते हैं । यहां कई ख़ुदाओं का आदेश चलता तो इस संतुलन एवं एकता का पाया जाना असंभव था । जिस प्रकार किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं कि एक समय में दो मालिकों के आदेशों का पालन करे, उसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड में एक से दूसरी सत्ता नहीं चल सकती, यदि ज़मीन की व्यवस्था एक के हाथ में और आसमान की दूसरे के हाथ में है तो दोनों में एकता कैसे पैदा हो गयी ? उनकी व्यवस्था में कहीं टकराव नहीं है । सूरज जिसके आदेश से परिक्रमा कर रहा है, यदि चांद पर भी उसका आदेश लागू नहीं है तो कौन-सी शक्ति दोनों को एक व्यवस्था में जकड़े हुए हैं । समुद्र एवं थल पर दो अलग-अलग प्रशासक शासन कर रहे हैं, तो वे एक-दूसरे पर विजयी होने का प्रयास क्यों नहीं करते ?

ज़मीन पर जो जीवन हम देखते हैं, यह उस समय तक पाया नहीं जा सकता जब तक कि उसके लिए समुचित वातावरण एवं पर्यावरण न मिले । सूरज एक निश्चित मात्रा में ऊष्मा न पहुंचाए, बादल से पानी न बरसे, रात एवं दिन की आवृति न हो । यदि सूरज और बादल की व्यवस्था और रात एवं दिन की आवृति किसी एक हस्ती के क़ब्ज़े में नहीं है, तो एक छोटे-से पौधे के विकास के लिए ये सारी चीज़ें एक विशेष अनुपात के साथ कैसे एकत्रित हो जाती हैं ?

उसी प्रकार इन्सान एवं अन्य प्राणियों के जीवन के लिए आवश्यक है कि उन्हें समुचित हवा, पानी, आहार एवं अन्य आवश्यकताएं प्राप्त हों । यदि ये आवश्यकताएं एक विशेष अनुपात में प्राप्त न हों तो इनका अस्तित्व असंभव है । हम देखते हैं कि प्रत्येक प्राणी अपने अस्तित्व एवं विकास के लिए जिन चीज़ों का जिस मात्रा में मुहताज है, वे उसी मात्रा में उसे मिल रही हैं । न उनमें कमी होती है, न अधिकता । कभी ऐसा नहीं होता कि पानी ज़रूरत से ज़्यादा प्राप्त हो और हवा ज़रूरत से कम मिले । उसके पास सोने और चांदी, लोहे और कोयले का भंडार तो बहुत हो, परन्तु अनाज से वह वंचित रहे ।

यह इस बात का प्रमाण है कि इस ब्रह्माण्ड को केवल एक हस्ती अपने सामर्थ्य एवं विवेक से चला रही है । वरना इन विभिन्न चीज़ों में संतुलन नहीं पाया जाता । कभी हवा इतनी बढ़ जाती कि उससे ज़मीन की नमी समाप्त हो जाती और कभी पानी इतना बढ़ जाता कि ज़मीन निवास-स्थल न बन पाती ।



अल्लामा इक़बाल और हिन्दुस्तान

■ वसीम अकरम त्यागी

'हंस' के मई अंक में अशोक कुमार जी ने अल्लामा इक़बाल पर ख़ूब कीचड़ उछालने की कोशिश की वैसे ये कोई नया नहीं है कि किसी कथित बुद्धिजीवी ने उनकी 'हुब्बुल वतनी' (देश प्रेम) को ललकारा हो बल्कि इससे पहले भी कई बार उन पर इस तरह के अनर्गल आरोप लग चुके हैं चाहे वे 'दैनिक जागरण' के स्तंभ लेखक एस॰ शंकर ने लगाये हों या भाजपा के राज्यसभा-सदस्य बलबीर पुंज या तरुण विजय ने । ख़ैर अहम सवाल यह है कि पाकिस्तान बन चुका है, बिखर चुका है, जिसको पाकिस्तान जाना थे वे चले गये, जिनको भारत आना था वो भारत आ गये तो फिर इस तरह का शोधपरक लेख लिखने का औचत्य ही क्या था ? अब जब बात निकल ही गयी है तो फिर दूर तक जानी चाहिए, लेखक को कोफ़्त है कि पाकिस्तान में उनके जन्मदिवस पर बाक़ायदा अवकाश रहता है, वे वहां के राष्ट्रीय कवि हैं, इसमें तो कोई कोफ़्त या ग़मज़दा होने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि ऐसा तो भारत में भी होता है तुलसीदास, वाल्मीकि जयंती, रविदास जयंती पर अवकाश रहता है ।

ख़ैर बात पहले करते हैं अल्लाम इक़बाल और उन आरोपों की जो अशोक कुमार ने लगाये हैं । मुहम्मद अल्लामा इक़बाल 9 नवम्बर, 1877 को तत्कालीन भारत के सियालकोट में पैदा हुऐ । उनके पूर्वज कश्मीरी ब्राह्मण थे, लेकिन क़रीब तीन सौ साल पहले उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया था और कश्मीर से पंजाब जाकर बस गये थे । उनके पिता शेख़ नूर मुहम्मद कारोबारी आदमी थे । इक़बाल की शुरुआती तालीम मदरसे में हुई । बाद में उन्होंने मिशनरी स्कूल से प्राइमरी स्तर की शिक्षा शुरू की । लाहौर से स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने अध्यापन कार्य भी किया । 1905 में दर्शनशास्त्र की उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए वह इंग्लैंड चले गए । उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री हासिल की । इसके बाद वह ईरान चले गए, जहां से लौटकर उन्होंने द डेवलपमेंट ऑफ़ मेटाफ़िज़िक्स इन परशियन नामक एक किताब भी लिखी । इसी को आधार बनाकर बाद में जर्मनी के म्युनिख विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि दी ।



इक़बाल की तालीम हासिल करने की फ़ितरत ने उन्हें चैन नहीं लेने दिया । बाद में उन्होंने वकालत की भी पढ़ाई की । वह लंदन विश्वविद्यालय में छह माह तक अरबी के शिक्षक भी रहे । (स्रोत 'कुल्लियात-ए इक़बाल)।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ां ग़ालिब के बाद इक़बाल की शायरी ने ही लोगों के ज़ेहनों पर राज किया है । उनकी शायरी ऐसी शायरी है जिसमें हर उम्र को ढूंढ़ा जा सकता है, मस्जिद और शिवालों को ढूंढ़ा देखा जा सकता है । उन्होंने प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य को भी अपनी नज़्मों में जगह दी । पहाड़ों, झरनों, नदियों, लहलहाते हुए फूलों की डालियों और ज़िंदगी के हर उस रंग को उन्होंने अपने कलाम में शामिल किया, जो इंसानी ज़िंदगी को मुतास्सिर करता है । उनकी नज़्म बच्चे की दुआ 'लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी' का आज भी आकाशवाणी से प्रसारण होता है, और मुस्लिम स्कूलों में इसे प्रार्थना के तौर पर रोज़ाना पढ़ा जाता है ।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
ज़िंदगी शमा की सूरत हो ख़ुदाया मेरी
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए

उनकी वतन से मुहब्बत और उसकी फ़िक्र को सिर्फ़ इन्हीं मिसरों से समझा जा सकता है कि–

वतन की फ़िक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है
तेरी बर्बादियों के मश्विरे हैं आसमानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिंदोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में
गुलामी में न काम आतीं हैं तदबीरें न तक़दीरें
जो हो ज़ौक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़ंजीरें

इन मिसरों को पढ़कर भी अगर कोई अल्लामा इक़बाल की वतनपरस्ती पर शक करता है तो यक़ीनन वह अपने दिमाग़ी दिवालियापन का सबूत दे रहा है या फिर उसकी परवरिश संघी घराने में हुई है जिसकी नज़र में उनके अलावा कोई और राष्ट्र से प्रेम ही नहीं करता ।

अब ज़रा बात करते हैं उस तराने की जिसके ऊपर लेखक ने यहां तक कह दिया कि इस गीत को आख़िर राष्ट्र गीत का दर्जा किस लिए दे दिया गया ? दरअस्ल उनकी बातों से लगता है कि उन्हें इस गीत से नहीं बल्कि वे अल्लामा इक़बाल की तरफ़ से पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं, जिसकी वजह से उन्हें उनमें एक दूरदर्शी नहीं बल्कि एक कट्टर धर्म प्रचारक दिखायी देता है । अल्लामा इक़बाल एक सच्चे मुसलमान थे लेकिन वे अपने जीवन के आख़िरी पल तक भारतीय ही रहे, क्योंकि पाकिस्तान तो उनके मरने के 9 साल बाद अस्तित्व में आया था । तो फिर वे पाकिस्तानी कैसे हो गये ? वे तो पैदा भी हिंदुस्तान में हुए और उनकी मृत्यु भी यहीं हुई ।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ां ग़ालिब के चले जाने के बाद इक़बाल की शायरी ने ही लोगों के ज़ेहनों पर राज किया है । उनकी शायरी ऐसी शायरी है जिसमें हर उम्र को ढूंढ़ा जा सकता है, मस्जिद और शिवालों को ढूंढ़ा देखा जा सकता है । उन्होंने प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य को भी अपनी नज़्मों में जगह दी । पहाड़ों, झरनों, नदियों, लहलहाते हुए फूलों की डालियों और ज़िंदगी के हर उस रंग को उन्होंने अपने क़लाम में शामिल किया ।

जिस तराना-ए हिंदी पर अशोक जी ने अपनी भड़ास निकाली है पहले, उसके जन्म को जानना भी ज़रूरी है क्योंकि उसके जन्म की भी एक रोचक कहानी है । बात दरअस्ल उन दिनों की है जब लाहौर जैसे शहर में युवाओं के मनोरंजन के लिए यंगमैन क्रिश्चियन एसोसिएशन हुआ करती थी और आमतौर पर बुद्धिजीवी उसी में समय बिताने के लिए जाते थे एक बार लाला हरदयाल से क्लब के सचिव की कुछ कहासुनी हो गयी जिससे नाराज़ होकर लाला हरदयाल ने यंगमैंस इंडिया एसोसिएशन नाम के क्लब की स्थापना की । उस समय लाला हरदयाल गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में एम०ए० के छात्र थे जिसमें अल्लामा इक़बाल दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे लाला हरदयाल के उनसे संबंध काफ़ी अच्छे थे उन्होंने क्लब के उद्घाटन के मौक़े पर अल्लामा इक़बाल को अध्यक्ष के रूप में निमंत्रण दिया जिसे अल्लामा इक़बाल ने सहर्ष क़बूल किया । किसी समारोह के उद्घाटन के इतिहास में यह पहला मौक़ा था जब कार्यक्रम के अध्यक्ष ने अध्यक्षीय भाषण देने की बजाय कोई तराना सुनाया हो ।

यह तराना पहली बार मौलाना अब्दुल हलीम शरर की पत्रिका "इत्तिहाद" में 16 अगस्त 1904 को इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित हुआ "एक क्लब की स्थापना हुई है जिसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि हिन्दुस्तान के सभी समुदायों में मेल-जोल बढ़ाया जाए ताकि वे सब एकमत से देश के विकास और कल्याण की ओर आकर्षित हों । इस समारोह में पंजाब के प्रसिद्ध और कोमल विचार वाले शायर शेख़ मुहम्मद इक़बाल ने एक छोटी और पुरज़ोश कविता पढ़ी, जिसने श्रोताओं के दिलों को जीत लिया और सबके आग्रह पर इसको समारोह के प्रारंभ और समापन पर भी सुनाया गया। इस कविता से चूंकी एकता के उद्देश्य में सफलता मिली अत: हम अपने पुराने दोस्त और मौलवी मुहम्मद इक़बाल का शुक्रिया अदा करते हुए इत्तिहाद में इसे प्रकाशित कर रहे हैं" ('योजना' अगस्त 2007)

यह तराना सबसे पहले 'हमारा देश' शीर्षक से और फिर 'हिंदोस्तां हमारा' के शीर्षक से प्रकाशित हुआ, 15 अगस्त 1947 को जब देश आज़ाद हुआ तो मध्यरात्रि के ठीक 12 बजे हमारी संसद भवन समारोह में 'जन गण मण' के साथ ही इक़बाल का यह तराना सारे जहां से अच्छा 'हिंदोस्तां हमारा' भी समूह में गाया गया । आज़ादी की 25वीं वर्षगांठ पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने इसकी धुन व नाद

तैयार की । 1950 के दशक में सितार-वादक पंडित रवि शंकर ने इसे सुर-बद्ध किया । जब इंदिरा गांधी ने भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा से पूछा कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है, तो शर्मा ने इस गीत की पहली पंक्ति कही । 21 अप्रैल, 1938 को अल्लामा इक़बाल ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया । उनकी मौत के बाद दिल्ली की ''जौहर'' पत्रिका के इक़बाल विशेषांक में गांधीजी का एक पत्र छपा था, जिसमें उन्होंने लिखा था, डॉ॰ इक़बाल मरहूम के बारे में क्या लिखूं, लेकिन मैं इतना तो कह सकता हूं कि जब उनकी मशहूर नज़्म 'हिंदोस्तां हमारा' पढ़ी तो मेरा दिल भर आया और मैंने बड़ौदा जेल में तो सैकड़ों बार इस नज़्म को गाया होगा ।

यह वही तराना है जिसके ऊपर अशोक कुमार जी ने हाय-तौबा मचायी है और कहा है कि 'हम' से मतलब मुसलमानों से है न कि सारे भारतीयों से, उन्होंने अल्लामा इक़बाल को पाकिस्तान बनाने का समर्थक बताया है बाक़ायदा मुहम्मद अली जिनाह को लिखे उनके पत्र भी प्रस्तुत किये हैं ऐसे में सितंबर 2010 में दैनिक 'हिंदुस्तान' में प्रकाशित दिल्ली विश्वविद्यालय में उर्दू के सहायक प्राध्यापक मुहम्मद काज़िम के बयान को प्रासंगिक रूप से लिया जा सकता है जिसमें उन्होंने कहा था ''इक़बाल के बारे में कहीं ऐसा कोई उल्लेख नहीं आता कि उन्होंने कभी ऐसा कोई बयान दिया था जिसमें मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र बनाने का समर्थन किया हो । तत्कालीन राजनीतिज्ञों ने पाकिस्तान स्थापना के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस बात का दुष्प्रचार किया कि उन्होंने पाकिस्तान बनाने की सोच का समर्थन किया है । इक़बाल के बारे में यह दुष्प्रचार इसलिए किया गया क्योंकि वह सियालकोट से थे जहां मुसलमानों के लिए अंलग देश बनाने की मांग की जा रही थी । इक़बाल की शायरी को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर फिर से पढ़ने की ज़रूरत है । इससे स्पष्ट होगा कि उनकी कृतियों में साम्प्रदायिकता नहीं बल्कि इंसानियत, प्रेमभाव और प्रकृति की तरफ़ झुकाव है । इक़बाल ने अपनी शायरी सरल भाषा में लिखी और शायरी के लिए आसान विषय चुने ।''

यहां पर मैं अशोक कुमार जी के सामने कुछ प्रश्न रख रहा हूं जिस भारत विभाजन त्रासदी का ज़िम्मेदार जिनाह साहब' मुस्लिम लीग और इनके अनुसार अल्लामा इक़बाल को ठहराया गया है क्या उसके लिए नेहरू, पटेल और हिंदू महासभा ज़िम्मेदार नहीं थी ? क्या वे लोग बिल्कुल ज़िम्मेदार नहीं थे जो भारत को एक हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते थे/हैं ? कैसी विचित्र बात है कि ज़िनाह साहब ने पाकिस्तान की मांग की और उन्हें पाकिस्तान दे दिया गया, अगर.. अल्पसंख्यकों की इतनी ही फ़िक्र थी तो भिंडरवाला को ख़ालिस्तान क्यों नहीं दिया गया ? आंध्र प्रदेश में तेलंगाना बनाने की मांग की जा रही है उसे क्यों नहीं स्वीकार किया गया ? उत्तर प्रदेश में पश्चिमी उत्तर प्रदेश को बांटने की मांग की जा रही है उसे क्यों नहीं बांटा जा रहा है ? क्या केवल इसलिए कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मुस्लिम अधिक हैं ? अगर इसका बंटवारा हो गया तो यहां पर इन्हीं की सरकारें होंगी ? वास्तविकता तो यह है कि विभाजन केवल इसलिए कर दिया गया क्योंकि यहां से मनुवादी मानसिकता वाले बुद्धिजीवी ने यह सोचा कि मुसलमान तो पाकिस्तान चले जाएंगे और कुछ यहां रह भी गये तो उन्हें दंगे में सबक़ सिखा दिया जाएगा । अल्लामा इक़बाल के बहाने आपने जो सवाल 'तराना-ए हिंदी' पर उठाये हैं, क्या कभी वंदे मातरम् पर भी इस तरह के प्रश्न चिन्ह लगाये कि वह सांप्रदायिकता फैलाने वाला गीत है, वह एक धर्म विशेष के मानने वालों के ख़िलाफ़ बहुसंख्यक समाज को हिंसा सिखाता है ? तो फिर यह राष्ट्रीय गीत कैसे हो सकता है ?

क्या आपने कभी यह सवाल उठाया कि भारत यदि पंथनिरपेक्ष है तो सड़क का उद्घाटन नारियल तोड़कर ही क्यों किया जाता है ? मगर आपको इन सबसे कोई दिक़्क़त नहीं है, दिक़्क़त है, तो सिर्फ़ इक़बाल से । क्योंकि उन्होंने अपनी शायरी के ज़रिये मुस्लिमों को जागरूक करने की कोशिश की उन्होंने शिकवा लिखा, फिर चार साल बाद 'जवाब-ए शिकवा' लिखा मुस्लिम लिखी, जिसमें उन्होंने मुस्लिमों को ललकारा कि अपना अतीत याद करो कि तुम क्या थे और आज क्या हो गये हो । मैं अशोक जी से मालूम करना चाहता हूं कि इसमें उन्होंने ग़लत क्या किया ? क्या समाज को जागरूक करना अपराध है ? और अगर आपकी नज़र में यह अपराध है तो फिर राजा राममोहनराय, स्वामी विवेकानंद, सर सैयद अहमद ख़ां का आपकी नज़रों में क्या अहमियत है ? क्या केवल 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां' हमारा से ही आपकी दुश्मनी है, क्योंकि एक सदी बाद भी इसके जवाब का कोई मतअला अभी तक किसी शायर की क़लम से नहीं निकल पाया ?

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाजुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दा़वती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

'आध्यात्म' की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए

■ डॉ॰ जगदीश गांधी
(शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबंधक,
सिटी मोंटेसरी स्कूल, लखनऊ)

एक दैनिक समाचार पत्र में 'गोवा में स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य बनाए जाने की सिफ़ारिश' शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित किया गया है । इस समाचार के अनुसार गोवा सरकार द्वारा हाल ही में गठित की गयी समिति ने स्कूलों में नाबालिगों को दुष्कर्म और यौन उत्पीड़न की घटनाओं से बचाने के लिए सुझाव पेश किया है । इसके तहत यौन शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाए जाने की सिफ़ारिश की गयी है, जो कि आने वाले समय में देश की बाल एवं युवा पीढ़ी को ग़लत दिशा में ही ले जाने का काम करेगी ।

हमारा मानना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अर्पित मनुष्य की ओर से की जाने वाली समस्त संभव सेवाओं में से सर्वाधिक महान सेवा है–(अ) बच्चों की उद्देश्यपूर्ण शिक्षा, (ब) उनके चरित्र का निर्माण तथा (स) उनके हृदय में परमात्मा की शिक्षाओं को जानकर उन पर चलने का बचपन से अभ्यास कराना न कि स्कूलों में यौन शिक्षा देकर बच्चों को तन तथा मन का रोगी बनाना ।

यौन शिक्षा के अनिवार्य होने से विदेशों में बढ़ी हैं समस्याएं

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों से स्कूली बच्चों को यौन शिक्षा देने के परिणाम बुरे आ रहे हैं । इन देशों में अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यौन शिक्षा से, एच॰आई॰वी॰, एड्स आदि जैसे अनेक रोगों के प्रसार में कमी नहीं आयी है । लोग उन्मुक्त जीवन जीने को विवश हैं, जो कि एड्स जैसे महारोग को बढ़ाने का मुख्य क़ारण है । इसके अलावा इन देशों में विवाहित जोड़ों में दूसरी स्त्रियों तथा पुरुषों से अवैध संबंध बढ़ाने की प्रवृत्ति ज़ोर पकड़ चुकी है । इन सभ्य कहे जाने वाले पश्चिमी देशों की नक़ल करने में भारत भी बिना सोचे-विचारे लगा है । उन्मुक्त सेक्स की तरफ़ बढ़ती प्रवृत्ति के कारण विवाह जैसी पवित्र संस्था का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ता जा रहा है ।

आधुनिकता के नाम पर भारत में भी पांव पसार रही हैं समस्याएं

भारत में भी आज कल सभी टी॰वी॰ चैनलों एवं समाचार पत्रों में आधुनिकता के नाम पर युवक-युवतियों द्वारा बिना विवाह के लिव-इन-रिलेशन में साथ रहने के कारण युवतियों के गर्भवती होने व अबार्शन करवाने आदि

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama) Chairman — **(Prof. Inamul Huque)** Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

की घटनाएं लगातार सामने आती जा रही हैं । इसके बावजूद गोवा की सरकार अपने प्रदेश के विद्यालयों में यौन शिक्षा देने की तैयारी कर रही है । हमारा मानना है कि गोवा सरकार बच्चों की मन:स्थिति का आकलन किये बग़ैर बाल एवं युवा पीढ़ी को यौन शिक्षा देकर उनके मन-मस्तिष्क एवं चरित्र को पूरी तरह से नष्ट करने की तैयारी कर रही है ।

आध्यात्म का ज्ञान दें

परमात्मा ने मनुष्य और पशु में चार चीज़ें आहार, निद्रा भय व मैथुन तो समान रूप से दी है किन्तु उचित-अनुचित व ग़लत-सही का निर्णय करने की क्षमता केवल मनुष्य को ही दी है । यह क्षमता पशु में नहीं है । इसलिए बालक को आध्यात्मिक ज्ञान कराने से उसके मस्तिष्क में ईश्वरीय दिव्य प्रवृत्ति पैदा होती है । किन्तु यदि उसे आध्यात्मिक ज्ञान न हो तो उसके अंदर पशु प्रवृत्ति बढ़ जाती है और तब मनुष्य उचित-अनुचित व ग़लत-सही का निर्णय नहीं कर पाता है और मनुष्य का आचरण पशुवत हो जाता है। योग और आध्यात्म दोनों ही मनुष्य के तन और मन दोनों को सुन्दर एवं उपयोगी बनाते हैं । योग का मांयने हैं जोड़ना । योग मनुष्य की आत्मा को परमात्मा की आत्मा से जोड़ता है । इसलिए हमारा मानना है कि प्रत्येक बच्चे को बचपन से ही योग एवं आय्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए ।

यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित एवं पथ-भ्रष्ट करती है

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे विकसित देशों में विद्यालयों में यौन शिक्षा प्रदान करने से युवा पीढ़ी तन और मन से रोगी बनती जा रही है साथ ही उनका नैतिक तथा चारित्रिक पतन भी हुआ है । इस दुखदायी स्थिति से उबरने का योग तथा आध्यात्मिक शिक्षा ही एकमात्र समाधान है । हमारा मानना है कि यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित एवं पथ-भ्रष्ट करती है । यौन शिक्षा अनैतिक संबंधों को बढ़ावा देती है । यौन शिक्षा आत्मनियंत्रण की शिक्षा नहीं होती । यौन शिक्षा केवल यह बताती है कि यौन क्रिया करते हुए मां को गर्भवती होने से कैसे बचाया जा सकता है । इस तरह स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य बनाए जाने की तैयारी करना केवल अनैतिक आचरण को बढ़ावा देने वाला ही साबित हो सकता है । इस विषम सामाजिक स्थिति से अपने बच्चों को बचाने के लिए हमें स्कूलों में 'यौन शिक्षा की जगह पर आध्यात्मिक शिक्षा' अनिवार्य रूप से देने की अविलंब आवश्यकता है ।

आध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए

हमारा यह सामाजिक उत्तरदायित्व है कि हम अभिभावकों के सहयोग से बच्चों को भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करें क्योंकि ऐसे बालक आगे चलकर स्वस्थ व सभ्य समाज की आधारशिला रखेंगे। इसलिए मेरी गोवा सरकार के साथ ही भारत के अन्य प्रांतों की सरकारों के साथ ही भारत सरकार से भी अनुरोधा है कि यौन शिक्षा के स्थान पर आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा दें । बच्चों के कोमल मन को दे, मानवता का ज्ञान । तब होगा उत्थान जगत का, तब होगा उत्थान । आध्यात्मिक चेतना जगाये सबको सही दिशा दिखलाएं । बच्चे बने प्रकाश जगत का मन में ज्ञान की ज्योति जलाएं । वास्तव में बच्चों को केवल योग एवं आध्यात्म की शिक्षा देने से ही संयम, सुचिता, स्व-अनुशासन, नैतिकता, चारित्रिकता तथा आध्यात्मिकता के गुण विकसित होंगे अन्यथा मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर जाने से रोका नहीं जा सकेगा ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सूचना

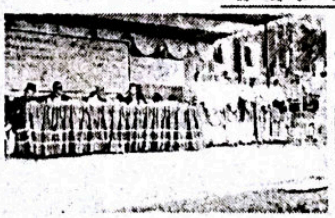

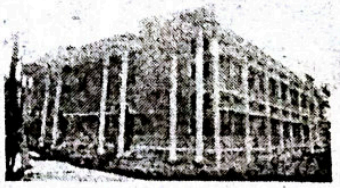

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाड़ी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लड़कीयों के लिए नायाब तोहफा

लड़कीयों के लिए 100 बेड का शानदार होस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एवं प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

स्वाभिमान

■ डॉ॰ सलीम ख़ान

दुनिया के एक हिस्से को सूना करके सुनामी की लहरें थम चुकी थीं । भारत सरकार की तरफ़ से महासंकट से निबटने की ख़ातिर बनाये गये उच्च स्तरीय आयोग की कार्यवाही शुरू हो चुकी थी । लातूर में आने वाले भूकंप के बाद इस ''राष्ट्रीय आपदा आयोग'' की घोषणा की गयी । गुजरात के भूकंप के पश्चात इसका गठन हुआ और सुनामी के बाद इसकी पहली बैठक हुई । पहले तो इस कमेटी में सेना के वरिष्ठ अधिकारियों और वैज्ञानिकों का समावेश किया गया, लेकिन बाद में कुछ राजनीतिक पक्षों को भी शामिल कर लिया गया ।

बैठक में सबसे पहले मरने वालों पर शोक व्यक्त करने के लिए दो मिनट का मौन धारण किया गया । इसके कुछ क्षणों के अन्दर राजनीतिक नेता एक-दूसरे को इस आपदा के लिए इस प्रकार दोषी ठहराने लगे मानो सुनामी के लिए उनके विरोधियों के अलावा कोई और ज़िम्मेदार ही नहीं है । विपक्षी सदस्य सरकार पर आरोप लगा रहे थे कि यह विनाश सरकार की लापरवाही और अक्षमता का परिणाम है । इसके जवाब में सत्ताधारी पक्ष ने गुजरात के भूकंप की राहतकारी में हुई घपलेबाज़ियों और संसाधनों के दुरुपयोग का उल्लेख शुरू कर दिया । कमरे में कोहराम मच गया । सुनामी को लोग भूल गये ।

सेना का एक वरिष्ठ अधिकारी बीच में बोला, ''इतनी बड़ी आफ़त के बाद हम लोग यहां जमा हुए हैं, मगर ऐसा लगता है कि आप लोगों ने अतीत की विफलताओं से कुछ भी नहीं सीखा । दरअस्ल हम पीड़ितों की सहायता के लिए यहां एकत्रित हुए थे, उनके प्रति हमारा क्या कर्तव्य बनता है और हमें उनके राहत के लिए क्या करना चाहिए, ये भूलकर हम आपस में लड़ने लगे ।

राजनीतिज्ञों ने जब देखा कि वे खुद तूफ़ानी लहरों की लपेट में आ गये हैं तो झट संभल गये और उन्होंने कहा, ''ये तो ठीक हैं लेकिन हम जनता के प्रतिनिधि हैं । उनके सामने हमें जवाब देना है । वे हम से पूछते हैं कि आपने हमें इस तरह के संकट से बचाने के लिए क्या किया ? हमें पहले से इसकी जानकारी क्यों नहीं दी गयी ताकि हम स्वत: अपने बचाव का प्रयत्न करते ?''

ये सुनकर प्रशासनिक अधिकारी घबरा गये । उन्होंने अपने बचाव में कहा, ''भाई ये तूफ़ान तो अचानक ही आ गया । हमें खुद भी पता नहीं चला तो हम दूसरों को कैसे बताते ?''

इस पर एक और नेता बोल पड़े, ''आप झूठ कहते हैं कि आपको पता नहीं था...? दुनिया के 26 देशों को इसकी ख़बर मिल गयी थी । उन्हें कैसे पता चल गया और हमारे वैज्ञानिक क्यों साये रहे ?''

अब एक वैज्ञानिक बोले, ''ये तो अन्याय है कि हमें ही दोषी ठहराया जा रहा है । हम क्या, सारा देश सोया रहा ।''

एक फ़ौजी अफ़सर खड़े हुए और उन्होंने कहा, ''यह बात ग़लत है कि ख़बर नहीं मिली । अंडमान निकोबार में हमारे फ़ौजी अड्डे की तबाही का समाचार हमने खुद मौसम विभाग को दिया परंतु वह उसका कोई उपयोग न कर सका ।''

वैज्ञानिक ने कहा, ''लेकिन मौसम विभाग के अधिकारी तो बहुत डींगे मारते हैं । वे तो कहते हैं कि हमारे पास इस काम के लिए अंतरिक्षयान है, अनुभवी वैज्ञानिक हैं इसलिए होना तो यह चाहिए था कि वे लोग फ़ौजी अड्डे को बाख़बर करते । परंतु हुआ इसका उल्टा और इसके बावजूद उन्होंने उस ख़बर का कोई उपयोग नहीं किया...यह लज्जास्पद है ।''

मौसम विभाग के वैज्ञानिक फिर गुस्सा गये । वे कहने लगे, ''देखिये हमारा सेटेलाइट बहुत पुराना हो गया है । नये के लिए अनुदान मांगे हुए दो साल हो गये हैं लेकिन इस पर सरकार ध्यान नहीं देती, सिर्फ़ घोषणा करके संतुष्ट हो जाती है । प्रधानमंत्री ने नयी प्रयोगशाला का भूमिपूजन तो करा दिया लेकिन बजट पर हस्ताक्षर नहीं किये, अब हम क्या करें ?''

दूसरा वैज्ञानिक बोला, ''अगर पुरानी सभी मशीनें काम नहीं कर रही हैं तो इन्हें फेंक दो और आप लोग भी अपने

घर चले जाओ । जब बजट पास हो जाए तो तो वेतन लेने आ जाना ।''

अब तो मौसम विभाग के अधिकारी और भी बिगड़ गये । उन्होंने कहा, ''आप अपनी ज़बान को लगाम दें । हमारा वेतन जनता के टैक्स से आता है, कोई आपकी जेब से नहीं आता और फिर ये भी तो देखें कि ये तूफ़ान रात के आख़िरी पहर में आया और तबाही प्रातःकाल शुरू हो गयी । हमारे अधिकारियों के कार्यालय में आने तक सब कुछ हो चुका था ।''

यह तर्क सुनकर एक ज़बरदस्त क़हक़हा लगा और एक साहब कहने लगे, ''हां-हां...ऐसा करते हैं कि आज की मीटिंग में एक प्रस्ताव पास करके ऊपर वाले को भेज देते हैं कि भविष्य में आसमानी आफ़तें दफ़्तरी समयानुसार ही आएं । इसके अलावा नहीं ।''

दूसरे ने कहा, ''अरे ये लोग दफ़्तर के समय में भी मुश्किल ही से वहां पाये जाते हैं । एक तो घर से आते नहीं और आते हैं तो केन्टीन में बैठकर चाय पीते हुए बेकार की गपशप करते रहते हैं ।''

फिर एक सरकारी अधिकारी को गुस्सा आ गया । उसने कहा, ''आख़िर आप लोगों ने अपने आपको समझ क्या रखा है । हमारे हाथ में कोई अधिकार तो है नहीं कि हम सूचनाओं को डायरेक्ट जनता तक पहुंचा सकें । हमने विज्ञान मंत्री को सूचना दी जिसके अंतर्गत हमारा विभाग काम करता है । उसने मौसम विभाग से संबंध स्थापित किया और उसने फिर दूरसंचार मंत्रालय को भेजा जिसने उसे दूरदर्शन पर प्रसारित करने की अनुमति दी । अब इस प्रक्रिया में समय तो लगता ही है ।''

''वह तो ठीक है...'' फ़ौजी अफ़सर बोला, ''लेकिन आपने सूचना भूतपूर्व मंत्री को भेजी । आप इतना भी नहीं जानते कि कई सरकार बन चुकी है और एक नये लोकसभा सदस्य को मंत्री बनाया जा चुका है ?''

''जी हां...हम ये जानते हैं...'' सरकारी अधिकारी ने बड़ी ढिठाई से कहा, ''परंतु भूतपूर्व मंत्री मेडिसिन के प्रोफ़ेसर थे । उनकी समझ में थोड़ी बहुत बात आती भी थी । ये नये मंत्री तो पेशे से वकील हैं । उनके लिए तो ये सब काला अक्षर भैंस बराबर है ।''

''तो क्या आप सारी सूचनाएं भूतपूर्व मंत्री को ही देते रहेंगे ?'' विज्ञान मंत्रालय का अधिकारी बोला, ''क्या यह व्यवहार जनप्रतिनिधि की अवमानना नहीं है ?''

''नहीं...ऐसी बात नहीं है । ये बात तो यूं ही चर्चा में आ गयी । ख़ैर जो हो चुका सो हो चुका । तबाही की सूचना प्राप्त करने और उसे दूसरों तक पहुंचाने से अधिक हमारे हाथ में है भी क्या ? और ऐसा करने से विनाश टल तो नहीं सकता था ।''

फ़ौजी बोला, ''यह तर्क दुरुस्त है लेकिन अगर जनता को पता चल जाता तो वह अपनी सुरक्षा का प्रबंध तो कर ही सकती थी ।''

''ख़ैर...जो हो चुका सो हो चुका...आगे विचार किया जाए कि अब क्या होना चाहिए ।''

इस बीच चपरासी ने आकर सूचना दी कि नाश्ता लग गया है । ये सुनकर सब नाश्ते की तरफ़ बढ़े और खाने-पीने में इतने व्यस्त हुए कि सुनामी की तबाही को पूरी तरह भूल गये ।

नाश्ते के बाद अयोग के अध्यक्ष ने बताया कि अमेरिका की सरकार की तरफ़ से सहायता की पेशकश की गयी है और हमारे प्रधानमंत्री उसे स्वीकार करने के पक्षधर हैं । परन्तु ये सहायता प्रभावितों को किस प्रकार उपलब्ध करायी जाए, इसकी उपाय योजना हमें करनी है, ताकि उसे हमारी सरकार अमेरिकी प्रशासन को भेज सके ।''

अब कार्य सूची में एक और वृद्धि हो गयी थी । सारे सदस्य अपनी परस्पर असहमति भुलाकर इस प्रश्न पर गंभीर हो गये और अलग-अलग सवाल पूछने लगे । प्रधानमंत्री कार्यालय से आये हुए अधिकारी ने कहा, ''इसमें ऐसी कौन-सी नयी बात है । दुनिया भर के देश सुनामी से प्रभावित लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं, इनमें से अमेरिका भी एक है । हमें इसकी सहायता का स्वागत करना चाहिए ।''

कर्नल साहब ने आपत्ति जताते हुए कहा, ''नहीं, यह समस्या ऐसी सरल भी नहीं है । निकोबार में हमारी फ़ौजी छावनी है । अमेरिकी जासूस सहायता के बहाने वहां आएंगे और हमारी गोपनीय जानकारी, यहां तक कि खुफ़िया नक़्शे भी अपने साथ ले जाएंगे । इसलिए अमेरिका के इस प्रस्ताव को हमें ठुकरा देना चाहिए ।''

कर्नल साहब की बात पर एक नेता ने एतिराज़ किया, ''ये कोई नयी बात तो नहीं है । पहले भी हम कई बार अमेरिका से ऐसी मदद हासिल कर चुके हैं । ऐसी आपत्ति

पहले तो कभी नहीं जतायी गयी ।''

कर्नल साहब बोले, ''उस समय की बात और थी, हालांकि वियतनाम और कोरिया में अमेरिकी सैनिक वहां के फ़ौजियों से लड़ रहे थे । लेकिन उनकी अस्ली लड़ाई सोवियत यूनियन और उसके समर्थकों तक ही सीमित थी ।

अब ईराक़ और अफ़ग़ानिस्तान में जिस तरह अमेरिका ने बिना कारण हस्तक्षेप किया है, उसके बाद तो अमेरिकी सरकार पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया जा सकता । उन लोगों की नीयत ठीक नहीं है । ईरान और सीरिया के विषय में वे अपने नापाक इरादों को ज़ाहिर भी कर चुके हैं । ऐसे में किसी भी तरह का ख़तरा मोल लेना समझदारी नहीं है ।''

अब फिर एक सरकारी बाबू उठे और कहने लगे, ''शायद हम लोग कुछ ज़्यादा ही शंका कुशंका का शिकार हो रहे हैं । दरअस्ल अमेरिका ने सुनामी जैसी आपदा का पता लगाने वाली मशीनें लगाने का प्रस्ताव दिया है । हम इन्हें हासिल करके अपने समुद्री तटों पर लगवा लेंगे ।''

इस पर आई॰एस॰आर॰ओ॰ के वैज्ञानिक उखड़ गये । उन्होंने कहा, ''अमेरिका क्या समझता है, हम ये नहीं कर सकते...? हमारे अन्दर क्षमता नहीं है...? नहीं, यह नहीं हो सकता ।

इस काम को करने के लिए हम सक्षम हैं । हम ख़ुद ऐसी मशीनें अपने देश में बना और लगा सकते हैं, और जैसा कि कर्नल साहब ने कहा, क्योंकि अमेरिकी मशीनों पर उनका अधिकार होगा इसके द्वारा वे हमारी जासूसी करेंगे । ये बात राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से ख़तरनाक है ।''

कमेटी में उपस्थित अमेरिकी समर्थकों को इतने विचारों से काफ़ी उलझन हो रही थी । इनमें से एक साहब उठे और उन्होंने अमेरिका के मानव प्रेम पर भाषण देने के बाद कहा कि अगर कोई इन्सानी हमदर्दी के नाते हमारी सहायता करना चाहता है तो उसे ठुकराना अच्छी बात नहीं है । हमें अमेरिका की इन्सानी दोस्ती पर शक नहीं करना चाहिए ।

कमेटी में मौजूद एक साम्यवादी दार्शनिक हंसा और कहने लगा, ''अमेरिका और मानव प्रेम...? अज़ी श्रीमान जितने लोग सुनामी में मरे हैं, उससे कहीं अधिक संख्या में मासूम इराक़ी अमेरिकी बमबारी का शिकार हुए हैं । अगर अमेरिका को वास्तव में इन्सानों से हमदर्दी होती तो वह हीरोशिमा और नागासाकी पर हमला नहीं करता । ये सब कहने की बातें हैं । अमेरिका से कहा जाए कि वह उन लोगों की मदद करके अपने पाप का प्रायश्चित करे जिन पर उसने बम बरसाये हैं और हमें अपनी सहानुभूति से माफ़ रखे । क्योंकि अमेरिका की यह नीति रही है कि वह जिसका विनाश चाहता है, पहले उससे दोस्ती करता है । तालिबान और सद्दाम, दोनों अमेरिका के मित्र थे और दोनों उसके अत्याचार का शिकार हुए । हमें दूसरों के परिणाम से सबक़ सीखना चाहिए ।''

अब विदेश मंत्रालय के राज्य मंत्री उठे । उन्होंने कहा, ''ये सब तो ठीक है लेकिन हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि आज अमेरिका दुनिया की अकेली महाशक्ति है और सहायता प्रस्ताव ठुकराने की राजनीतिक क़ीमत काफ़ी महंगी पड़ सकती है । इसलिए कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी ने सहायता का हाथ बढ़ाया हो और उसे ठुकरा दिया गया हो ।''

इसके जवाब में कर्नल साहब ने कहा, ''आदरणीय मंत्री साहब के प्रस्ताव में दो बातें हैं । दूसरी तो ये कि ऐसा कभी नहीं हुआ, ये बात हक़ीक़त के विरुद्ध है । ग्यारह सितम्बर के बाद सऊदी अरब के शहज़ादे वलीद बिन तलाल बिन अब्दुल अज़ीज़ की सहायता का चैक न्यूयार्क के राज्यपाल ने स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था । अगर अमेरिका ऐसा कर सकता है तो उसे दूसरों की तरफ़ से भी ऐसे व्यवहार की अपेक्षा करनी चाहिए...और उनकी पहली बात में धमकी है । इस धमकी के बारे में बस इतना कहना चाहता हूं कि अमेरिका अगर महाशक्ति है तो हम महान राष्ट्र हैं । हम स्वतंत्रता को दांव पर लगाकर भूख मिटाने वाले लोग नहीं हैं । हम ईंट का जवाब पत्थर से देना जानते हैं । जिस महाशक्ति को वियतनाम और तालिबान ने पराजित कर दिया वह हमारा क्या बिगाड़ लेगी । उनसे कह दो कि हम टूट तो सकते हैं मगर झुक नहीं सकते ।'' इसके पश्चात सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ और बैठक समाप्त हो गयी ।

अगले दिन समाचार पत्रों में ख़बर छपी कि भारत सरकार ने अमेरिका की सहायता को ठुकरा दिया है, और अमेरिका की टिप्पणी भी छपी कि कोई बात नहीं, हम देखेंगे कि भारत का तथाकथित स्वाभिमान कब तक हमारे अहंकार का मुक़ाबला करता है ।

रमज़ान : नेकियों का मौसमे बहार

■ डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

रमज़ान का चांद दिखायी देते ही मुसलमानों के बीच खुशी की लहर दौड़ जाती है । हर व्यक्ति एक-दूसरे को मुबारकबाद देने में पहल करना चाहता है । बच्चों में रमज़ान का विशेष आकर्षण होता है, रात में उठ कर बड़ों के साथ सहरी के तरह-तरह के व्यंजन जो खाने को मिलते हैं । और फिर शाम को इफ़्तार (रोज़ा खोलने) के समय की प्रतीक्षा और समय होते ही सबसे पहले खजूर खाने और शरबत पीने की होड़।

रमज़ान, अरबी चन्द्र आधारित कैलेंडर का 9वां महीना है । यह महीना विशेष रूप से दुनिया भर के मुसलमानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । महत्वपूर्ण तो यह सभी मनुष्यों के लिए है । क्योंकि इसी महीने में ईश्वर ने अपने अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर अपनी अन्तिम पुस्तक (कुरआन) अवतरित की, जिसमें उसने सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण का मार्ग बताया है । कुरआन में है, "ऐ ईमान वालो ! तुम पर रमज़ान के रोज़े (उपवास) अनिवार्य कर दिये गए हैं, जिस प्रकार तुम्हारे पूर्वजों पर किये गये थे, ताकि तुम्हारे अन्दर ईश-परायणता और ईश-भय पैदा हो ।" (कुरआन, 2:183) यही वह आदेश है जो इस महीने में अनवार्य रूप से रोज़े रखने की प्रेरणा देता है ।

इस्लाम की इमारत जिन पांच स्तंभों पर खड़ी होती है वे हैं–

ईमान : अर्थात इस बात पर दृढ़ विश्वास कि ईश्वर एक है और उसका कोई साझी नहीं, ईश्वर ने मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए हर युग में अपने दूत भेजे हैं और इस सिलसिले की अन्तिम कड़ी हज़रत मुहम्मद (उन पर ईश्वर की ओर से सलामती और कृपा हो) हैं तथा हर व्यक्ति को मरने के पश्चात पुनः जीवित करके ईश्वर के समक्ष उपस्थित किया जाएगा और उसे वहां अपने सभी कर्मों का हिसाब देना होगा और उन्हीं के अनुसार उसे पुरस्कार अथवा दंड दिया जाएगा ।

सलात : या नमाज़, अर्थात दिन भर में पांच बार ईश्वर की आराधना उस ढंग से करना जो अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया है ।

सौम : अर्थात रोज़ा, रोज़े में सुबह सूर्योदय के पूर्व से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने और यौन संबंधों से अपने आप को रोके रखना ।

ज़कात : अर्थात पवित्रता धारण करना, इसके अन्तर्गत हर व्यक्ति जिसके पास 7.5 तोला सोना या 52.5 तोला चान्दी, या दोनों, या नक़द रक़म, या कारख़ाने का कच्चा माल आदि मिला कर (इनमें से जिसका मूल्य कम हो) उसके बराबर हो और वह उसके पास साल भर रहे तो उसे उसके मूल्य का 2.5 प्रतिशत भाग अनिवार्य रूप से साल में एक बार निर्धनों और ज़रूरतमन्दों के लिए निकालना होगा ।

हज : अर्थात काबा की यात्रा, हर स्वस्थ और साधन सम्पन्न व्यक्ति के लिए अनिवार्य है कि वह जीवन में एक बार मक्का में स्थित पवित्र घर काबा की यात्रा करे ।

ये वे अनिवार्य इबादतें हैं जिनमें से किसी एक को भी यदि कोई जान-बूझकर, सामर्थ्य होने पर भी छोड़ दे तो वह व्यक्ति मुसलमान नहीं रहता ।

रोज़े का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य में ईशपरायणता और ईश-भय पैदा करना है । इसके अतिरिक्त अन्य इबादतों में तो व्यक्ति का आचरण लोगों की निगाह में होता है परन्तु यदि कोई प्रकट में तो रोज़ा रख ले और छुपकर कुछ खा-पी ले, तो उसका यह आचरण केवल ईश्वर ही जानता है । रोज़े की हालत में व्यक्ति हर पल यह महसूस करता है कि ईश्वर मुझे देख रहा है, यदि मैंने छुप कर भी कुछ खा-पी लिया तो उसे अवश्य ज्ञात हो जाएगा । ईश्वर के होने और उसके हर खुले और छुपे का जानने वाला होने का एहसास इससे अधिक कोई और चीज़ नहीं दिला सकती । ईश्वर यही एहसास रमज़ान गुज़र जाने के बाद भी मनुष्य में पैदा करना चाहता ताकि वह खुले और छुपे हर समय ईश्वर द्वारा देखे जाने के भय से कोई अपराध न करे ।

रमज़ान नेकियों का मौसमे बहार है । वैसे तो रोज़ा सभी

ईद की ख़ुशियों से कोई वंचित न रहे

लोग व्यक्तिगत रूप से रखते हैं, परन्तु पूरी दुनिया के मुसलमान जब एक साथ रोज़ा रखते हैं तो फिर पूरा वातावरण ही भलाइयों और नेकियों से भर जाता है । हर व्यक्ति बुरे कामों से बचने का प्रयत्न करता है और अधिक से अधिक भले काम करने का प्रयास करता है । इस महीने में सभी अपने ग़रीब भाइयों का विशेष ध्यान रखते हैं । किसी को रोज़ा इफ़्तार कराना बड़ा पुण्य कार्य है और किसी असहाय, निर्धन को यदि इफ़्तार कराया जाए तो यह और भी अधिक पुण्य का कार्य समझा जाता है । रमज़ान के अन्त में ईद आती है, ईद से पहले सदक़तुल फ़ित्र के नाम से अनिवार्य रूप से हर व्यक्ति जो सामर्थ्य रखता हो प्रति व्यक्ति के हिसाब से ग़रीबों को पहुंचाता है ताकि कोई भी ईद की ख़ुशियों से वंचित ने रहे ।

रोज़े में हम दूसरों की भूख और प्यास का स्वयं अनुभव करते हैं इससे हमारे दिल में मनुष्य मात्र के प्रति करुणा एवं दया पैदा होती है । इस महीने में दान करने का पुण्य अन्य दिनों की अपेक्षा 70 गुणा अधिक बताया गया है, अत: लोग अधिक से अधिक दान करते हैं जिससे ग़रीबों की आर्थिक सहायता होती है । रोज़ा अपराध रोकने में भी सहायक है, क्योंकि रोज़े की हालत में लड़ना तो दूर, क्रोध करना और गाली देने से भी रोज़े के ख़राब होने का भय होता है । रोज़े से विश्व बंधुत्व भी भावना का विकास होता है क्योंकि इस माह में जो भी दान किया जाता है वह बिना किसी भेदभाव के किया जाता है ।

रमज़ान क़ुरआन का महीना है क्योंकि इसी महीने में क़ुरआन ईश्वर की ओर से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित होना प्रारंभ हुआ था । अत: इस महीने में क़ुरआन का बड़े पैमाने पर पाठ किया जाता है और उसकी शिक्षाओं को अत्मसात करने का प्रयत्न किया जाता है । इशा (रात की अन्तिम नमाज़) के बाद इस महीने में अतिरिक्त नमाज़ पढ़ी जाती है जिसे तरावीह कहते हैं । इस नमाज़ में महीने भर में पूरा क़ुरआन सुनाया जाता है ।

आज हमारे देश में कन्या भ्रूण हत्या एक बड़ी समस्या बनी हुई है । क़ुरआन ने आज से 14 सौ साल पूर्व ही इस समस्या को ज़ड़ से समाप्त कर दिया था । "और जब जीवित गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा, बता तुझे किस अपराध में मारा गया" (क़ुरआन, 81:8)। अर्थात अपनी बेटी की हत्या करने वाले से ईश्वर इतना कुपित होगा कि वह उससे बात करना तक पसन्द नहीं करेगा अपितु उसके सामने स्वयं उस बेटी से ही पूछेगा कि बता तुझे किस अपराध में मारा गया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बेटियों के लालन-पालन और बेटे व बेटी में अन्तर न करने वाले को स्वर्ग की शुभसूचना दी है । अत: यदि क़ुरआन की शिक्षाओं को अपनाया जाए तो इस बड़ी समस्या का हल सहज ही हो जाता है ।

पर्यावरण संरक्षण के संबंध में भी इस्लाम में स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं । क़ुरआन में ईश्वर कहता है कि उसने मनुष्य को धरती में प्रतिनिधि बनाया है, (क़ुरआन, 2:30)। अत: उसे आदेश दिया गया है कि वह धरती में संतुलतन स्थापित करे और ईश्वर के स्थापित किये हुए संतुलन में व्यवधान उत्पन्न न करे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने स्पष्ट निर्देश दिया कि यदि तुम समुद्र के किनारे भी हो तो भी पानी कम ख़र्च करो और कहा कि यदि क़ियामत के आने में एक दिन भी बाक़ी रह जाए तो भी, तुम्हारे हाथ में जो पौधा हो उसे धरती में रोप दो । उन्होंने अपनी सेनाओं को भी निर्देश दे रखे थे कि वे जब विजेता के रूप में किसी बस्ती में प्रवेश करें तो वहां खड़ी फ़सलों और हरे पेड़ों को क्षति न पहुंचाएं । ये और ऐसी बहुत-सी शिक्षाएं हैं जिन्हें अपना कर हम अपने देश ही नहीं वरन् संसार की सभी समस्याओं का प्राकृतिक रूप से समाधान कर सकते हैं ।

आइये इस रमज़ान में हम अपने पालनहार को इस प्रकार भी प्रसन्न करने का प्रयास करें कि पर्यावरण को संतुलित रखें और बेटे व बेटी में कोई अन्तर न करें तथा क़ुरआन में ईश्वर के आदेशानुसार समस्त मनुष्यों को अपना भाई समझ कर उनसे सद्व्यवहार करें । ईश्वर हमारे रोज़ों को स्वीकार करे ।

रमज़ान के रोज़ों का महत्व

O मौलाना राबेअ हसनी नदवी

रमज़ानुल मुबारक का महीना ख़ैर और बरकत का महीना है । ईमान और इबादत का महीना है । मुसलमान को मुसलमान बनकर और अपने कर्मों को ख़ुदा की ख़ुशनूदी के मुताबिक़ ढालने की कोशिश का महीना है । धनवानों के अपने धन के द्वारा ख़ुदा को राज़ी और ख़ुश करने का महीना है और ग़रीब को अपनी ग़रीबी के बावजूद अच्छा कर्म करने का महीना है । यह महीना आता है तो पूरा वातावरण नूर (प्रकाश) से भर जाता है । ईमान वालों में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है । मुसलमानों की सुबह और शाम दोनों में अजीब रौनक़ नज़र आती है । बड़ी आयु के लोग पूरे ख़ुलूस के साथ नेकी पर चलने लगते हैं । छोटी आयु के लोग इस महीने की लज़्ज़तदार इफ़्तारी का मज़ा लेते हैं । फ़ज्र से पहले खायी जाने वाली सेहरियां, सूर्यास्त के समय की इफ़्तारियां, रातों का ज़िक्र और इबादतें, दिन में क़ुरआन मजीद की तिलावतें इस महीने के रौनक़ को बढ़ा देती है । फिर इन सब बातों से हासिल होने वाला अज्र (बदला) हर ईमान वाले व्यक्ति के दिल को हर्ष व उल्लास (सुरूर) से भर देता है क्योंकि अल्लाह तआला की ओर से उस पर विशेष अज्र देने का वादा है ।

रमज़ान का रोज़ा वास्तव में तरह-तरह के कर्मों का मिला-जुला रूप है । इसमें मुसलमान को अपने पालनहार की ख़ुशी के लिए अपनी मनोकामना को मारना पड़ता है । इसमें आख़िरत (पारलौकिक जीवन) के अज्र के लिए अपने माल को ख़र्च करने, अपने पालनहार की याद को दिल में जगाने के लिए नमाज़ और तिलावते क़ुरआन पाक का विशेष अवसर मिलता है । अपनी ज़ुबान को ख़ूबी और नेकी का पाबन्द बनाने का माहौल मिलता है । अपने समय को सुथरे और पाकीज़ा कामों के साथ जोड़ने की प्रेरणा मिलती है और अच्छा कर्म करने की तौफ़ीक़ (दैवयोग) होती है । रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह तआला के आदेश से शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है । शैतान जिनका काम बस यह है कि वह इन्सानों को अच्छे कामों से भटकाये और बुरे कामों के सब्ज़ बाग़ दिखाये । इस महीने में वे अपने इस ज़ालिमाना और गन्दे काम से रोक दिये जाते हैं । इसके नतीजे में नेकी करने वालों को नेकी करने में आसानी होती है और बुराई अपनाने वालों में बुराई करने के प्रति इतनी चाह नहीं रह जाती जितना रमज़ान के अलावा अन्य दिनों में होती है ।

हर इन्सान नफ़्स और नफ़सानियात (मनोकामनाओं एवं भावनाओं) का सम्मिश्रण होता है । इन्सान का नफ़्स लज़्ज़त का भूखा और ऐश पसन्द होता है । उसमें लालच का भी कुछ तत्व मौजूद होते हैं और ख़ुदग़र्ज़ी की भावनाएं भी पायी जाती हैं । जीवन में बहुत-सी बुराइयों को अपनाने में इन्सान की अपनी मनोकामना ही प्रेरक बनती है । यह केवल शैतान की कोशिशों पर ही निर्भर नहीं करता शैतान तो केवल इसमें बढ़ावा देता है और ताक़त पहुंचाता है और आगे बढ़कर बड़ी बुराइयों को करने के लिए उभारता है और फिर उसमें सहयोग देता है । रमज़ान में जो बुराइयां की जाती हैं वह इसलिए कम होती हैं कि...वे केवल मनोकामना के कारण होती हैं । उनको शैतान का सहारा नहीं मिलता ।

लेकिन इन्सान की मनोकामना कुछ लोगों में कुछ अवसरों पर इतनी बढ़ जाती है कि उसे बुरे कामों के लिए क़दम बढ़ाते समय शैतान के सहारे की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं होती । इस तरह की मनोकामना रमज़ान के महीने में भी अपना काम कर सकती है और करती है । लेकिन अल्लाह तआला ने रोज़े में भी यह असर रखा है कि मनोकामना को कमज़ोर कर दे और उसके बुरे प्रभाव को रोके और उसके प्रभाव को कम कर दे, क्योंकि रोज़ा वास्तव में मनोकामना के कुप्रभाव को तोड़ने का अमल है । इन्सान का पेट जब ख़ाली होता है और प्यास क शिद्दत होती है तो बुराइयों की ओर से उसका रुझान कमज़ोर पड़ जाता है । इन्सान में भरे पेट के साथ...ग़लत कामों की ओर जो रुचि होती है वह ख़ाली पेट रहने पर नहीं होती । इसलिए अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने ऐसे व्यक्ति को, जिसमें वासना होती हो, लेकिन उसके पास वैवाहिक जीवन व्यतीत करने की आर्थिक सामर्थ्य न हो,

रोज़े रखने पर ज़ोर दिया है ताकि वह अपने कामेच्छा पर क़ाबू पा सके और इसके लिए ग़लत कामों में न फंसे ।

रोज़े की संरचना अल्लाह तआला ने ऐसी बनायी है कि वह नेकियों की राह बनाता है और गुनाहों के रास्ते को रोकता है, लेकिन रोज़े का प्रभाव और उसके नेक वातावरण उसी समय अपना प्रभाव दिखाते हैं जब रोज़े को उसके आदाब और उसके तय किये गये एहतियातों के साथ रखा जाए । वह ख़ुदा के लिए हो, अपने किसी भौतिक या ख़ुदग़र्ज़ी के भरे उद्देश्य के लिए न हो । रोज़े में जो बातें मना की गयी हैं उनसे पूरा परहेज़ किया जाए और रोज़े के वातावरण को क़ायम करने के लिए जो कर्म बताये गये हैं वे अपनाये जाएं ।

रोज़ा यूं तो ज़ाहिर में फ़ज्र (पौ फटने) के वक़्त से सूर्यास्त तक खाने-पीने और सहवास के अमल से बचने का नाम है । लेकिन इसके साथ-साथ झूठ से, ग़ीबत से और ज़ुबान और हाथ के दूसरे गुनाहों से पूरा परहेज़ करने का भी नाम है । चुनांचे हदीस में आया है कि किसी ने रोज़ा रखा और खाने से परहेज़ किया, लेकिन ग़ीबत (परनिन्दा) झूठ जैसे कामों से परहेज़ नहीं किया तो उसको क्या ज़रूरत थी कि वह भूखा-प्यासा रहे । इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे व्यक्ति का रोज़ा बेकार गया । इसलिए फ़िक़्ह के कुछ इमामों के यहां झूठ बोलने और ग़ीबत करने से भी रोज़ा टूट जाता है । लेकिन सारे इमाम इस पर एकमत नहीं हैं । वे कहते हैं कि रोज़ा का ज़ाहिरी अमल तो पूरा हो जाता है क्योंकि अस्ल शर्त पूरी हो गयी, लेकिन उसका सवाब जाता रहता है, क्योंकि उसके आदाब का ख़याल नहीं किया ।

रोज़े को अल्लाह तआला ने नेकियों का मौसम बनाया है । उसमें जितने भी नेकियों के पहलू निकलते हैं, दूसरे कर्म में मुश्किल से ही बनते हैं । इसमें तो स्वयं रोज़ा ही एक बड़ा आचार है । फिर उसमें नमाज़ें हैं, क़ुरआन मजीद की तिलावत है । ग़रीबों की सहायता है । बिना रोक-टोक, हर समय खाने-पीने से रोक है और ज़ाहिदों जैसी कैफ़ियत अपनाने का अवसर है ।

फिर इस महीने में नेकी करने का सवाब सत्तर गुना कर दिया गया है । रमज़ान के अलावा किसी महीने में की जाने वाली एक नेकी और रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी के सवाब में सत्तर गुना का फ़र्क़ होता है ।

फिर रमज़ान में रोज़े रखना चूंकि तमाम मुसलमानों पर एक ही समय में ज़रूरी कर दिया गया है, इसलिए मुस्लिम समाज में इस पूरी अवधि में हर ओर एक ही वातावरण बन जाता है और वह वातावरण नेकी, हमदर्दी, सहनशीलता, नम्रता, आख़िरत में हिसाब की धारणा और इबादत का होता है । इसलिए रमज़ान में जिन लोगों की बीमारी या यात्रा आदि के कारण रोज़े में छूट दी गयी है उन्हें भी इसकी अनुमति नहीं कि वह खुल्लमखुल्ला खाएं । उनके लिए आदेश है कि वे सबसे अलग जाकर ऐसा करें ताकि रोज़े का वातावरण प्रभावित न हो ।

रमज़ान अस्ल में मनोकामना पर क़ाबू पाने और उसकी बुरी ताक़त को कमज़ोर करने की एक वार्षिक प्रशिक्षण व्यवस्था है । इस व्यवस्था से हर मुसलमानों को साल में एक बार गुज़रना पड़ता है । ज़रूरत है कि जिस तरह हम ज़िन्दगी की ज़रूरतों के लिए किसी भी वार्षिक प्रशिक्षण केन्द्र में समय लगाते हैं, ध्यान केन्द्रित करते हैं और उस पर अमल करते हैं, रमज़ान की इस व्यवस्था में उसके आदाब और आदेशों के अनुसार वक़्त गुज़ारा करें । ताकि हम इस सालाना प्रशिक्षण केन्द्र से पूरी तरह कामयाब होकर और एक सच्चे और नेक मुसलमान बनकर निकला करें ।

रोज़े के महत्व की यह एक बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे कर्मों के मुक़ाबले में उसके प्रति अधिक पसन्दीदगी का इज़हार किया है । हदीस शरीफ़ में अल्लाह तआला का यह आदेश बयान किया गया है–

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रोज़े की महत्ता बताते हुए फ़रमाया कि "आदमी की हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है ।" मगर अल्लाह तआला का इरशाद है कि : रोज़ा इस आम क़ानून से हटकर और उच्च है । वह बन्दे की ओर से ख़ास मेरे लिए एक तोहफ़ा है और मैं ही (जिस तरह चाहूंगा) उसका अज्र (बदला) और सवाब दूंगा । मेरा बन्दा मेरी ख़ुशी के लिए अपनी मनोकामना को और खाने-पीने को छोड़ देता है (अत: मैं स्वयं ही अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उसकी इस क़ुरबानी और मनोकामना को दबाने का बदला दूंगा ।

रमज़ान में क़ुरआन उतारा गया

रमज़ान व महीना है, जिसमें कुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है । और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य व असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली हैं । अत: अब जो व्यक्ति इस महीने को पाये, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे । और जो कोई बीमार हो या यात्रा पर हो तो वह दूसरे दिनों में रोज़ों की संख्या पूरी करे । अल्लाह तुम्हारे साथ नर्मी करना चाहता है, सख़्ती करना नहीं चाहता । इसलिए यह तरीक़ा तुम्हें बताया जा रहा है ताकि तुम रोज़ों की संख्या पूरी कर सको और जिस सीधे मार्ग पर अल्लाह ने तुम्हें लगाया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई का इज़हार और स्वीकार करो और कृतज्ञ बनो ।

(कुरआन, 2:185)

1. यात्रा की हालत में रोज़ा रखना या न रखना आदमी की स्वेच्छा पर छोड़ दिया गया है । नबी (सल्ल०) के साथ जो सहाबा (साथी) यात्रा में जाया करते थे, उनमें से कोई रोज़ा रखता था और कोई न रखता था और दोनों पक्षों (गिरोहों) में से कोई दूसरे पर आपत्ति न करता था । स्वयं आप (सल्ल०) ने भी कभी यात्रा में रोज़ा रखा है और कभी नहीं रखा है । एक यात्रा के अवसर पर एक व्यक्ति बदहाल होकर गिर गया और उसके गिर्द लोग एकत्र हो गये । नबी (सल्ल०) ने यह हाल देखकर पूछा : "क्या मामला है ?" निवेदन किया गया–रोज़े से है । आप (सल्ल०) ने कहा : "यह नेकी नहीं है ।" युद्ध के अवसर पर तो आप (सल्ल०) हुक्म देकर रोज़े से रोक दिया करते थे, ताकि शत्रु से लड़ने में कमज़ोरी न आये । हज़रत उमर (रज़ि०) की रिवायत है कि हम नबी (सल्ल०) के साथ दो बार रमज़ान में युद्ध पर गये । पहली बार बद्र के युद्ध में और अंतिम बार मक्का-विजय के अवसर और दोनों बार हमने रोज़े छोड़ दिये । इब्ने उमर का बयान है कि मक्का-विजय पर आप (सल्ल०) ने कहा था कि "शत्रु से मुक़ाबला आसन्न है ।"

सामान्य यात्रा के मामले में यह बात कि कितनी दूरी की यात्रा पर रोज़ा छोड़ा जा सकता है, आप (सल्ल०) के किसी कथन से स्पष्ट नहीं होता और सहाबा किराम का अमल इस बात से भिन्न है । सही यह है कि जिस दूरी को जनसामान्य यात्रा मानते हों और जिसमें यात्री जैसी हालत इन्सान की हो जाए, वह इफ़्तार (रोज़ा छोड़ने) के लिए काफ़ी है । इस बात पर सर्वसहमति है कि जिस दिन आदमी यात्रा शुरू कर रहा हो, उस दिन का रोज़ा इफ़्तार कर लेने का उसे इख़्तियार है–चाहे तो घर से खाना खाकर चले और चाहे तो घर से निकलते ही खा ले । दोनों अमल सहाबा (रज़ि०) से साबित हैं । यह बात कि यदि किसी नगर पर शत्रु का हमला हो, तो क्या लोग रहने के बावजूद जिहाद की ख़ातिर रोज़ा छोड़ सकते हैं, उलेमा के बीच विभिन्न राएं हैं । कुछ उलेमा इसकी इजाज़त नहीं देते, मगर अल्लामा इब्ने तैमिया ने अत्यंत कथनीय प्रमाणों के साथ फ़त्वा दिया था कि ऐसा करना बिल्कुल जायज़ है ।

2. अर्थात अल्लाह ने केवल रमज़ान ही के दिनों (रोज़ा) ख़ास नहीं किया, अपितु जो लोग रमज़ान में किसी शरई उज़्र (विवशता) के कारण रोज़े न रख सके, उनके लिए दूसरे दिनों में उसकी क़ज़ा कर लेने का रास्ता भी खोल दिया है ताकि क़ुरआन की जो नेमत उसने तुमको दी है, उसका कृतज्ञता-ज्ञापन करने के बहुमूल्य अवसर से तुम वंचित न रह जाओ ।

यहां यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि रमज़ान रोज़ों को केवल इबादत और तक़वा (ईशपरायणता) का प्रशिक्षण ही नहीं ठहराया गया है, अपितु उन्हें तद्अधिक उस महान मार्गदर्शन की नेमत पर अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता भी ठहराया गया है, जो क़ुरआन के रूप में उसने हमें प्रदान की है । वास्तविकता यह है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए किसी नेमत की कृतज्ञता और किसी एहसान के स्वीकार की बेहतरीन सूरत यदि हो सकती हो, तो वह केवल यही है कि वह अपने आपको उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक से अधिक तैयार करे, जिसके लिए प्रदान करने वाले ने वह नेमत प्रदान की हो ।

(व्याख्याकार : **मौलाना अबुल आला मौदूदी**)

ईदुल फ़ित्र इस्लामी संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक

■ मुहम्मद अली शाह शुऐब

हमारा देश भारत विभिन्न जातियों और धर्मों के मानने वालों का देश है । इन विभिन्न जातियों और धर्मों के मानने वाले लोगों के मध्य कुछ बातें तो सर्वसामान्य हैं, जैसे रहने-सहने का ढंग, खान-पान के तरीक़े, विभिन्न क्षेत्रों में भाषा की समानता इत्यादि, किन्तु कुछ बातें ऐसी भी हैं कि उनमें समरूपता नहीं भी पायी जाती है । जैसे पूजा के तरीक़े, रस्म-रिवाज और त्योहार इत्यादि । इसीलिए कहा जाता है कि भारत में अनेकता में एकता है । यहां विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग अपने-अपने तरीक़े से यहां त्योहार मनाते हैं । कुछ त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाए जाते हैं और कुछ संजीदगी और शालीनता से । हर जाति और धर्म के मानने वालों के अपने कुछ विशेष त्योहार होते हैं । वास्तविकता यह है कि ये त्योहार किसी भी जाति या धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं । अत: यह कहा जा सकता है कि यदि किसी जाति या धर्म के बारे में जानना हो तो उसके त्योहार को देख लीजिए । आपको उसकी गहराई का पता लग जाएगा ।

त्योहार का संबंध वास्तव में मनुष्य की भावनाओं से होता है । मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा होती है कि वह प्रसन्नता प्रकट करे । फिर इस प्रसन्नता को वह कभी अकेले भी व्यक्त करता है और सामूहिक रूप से भी । त्योहार वास्तव में इसी प्रसन्नता को सामूहिक रूप से प्रकट करने का दूसरा नाम है । उन भावनाओं और अनुभूतियों का संबंध, जो किसी त्योहार की आत्मा की हैसियत रखती हैं, या तो किसी व्यक्तित्व से होता है या किसी विशेष मौसम या किसी विशेष ऐतिहासिक घटना से या फिर उनके पीछे कोई परंपरा या अंधविश्वास काम कर रहा होता है ।

देशवासियों में से मुसलमान भी एक लंबे समय से यहां रहते चले आ रहे हैं । इनका धर्म इस्लाम है, जो एक सर्वव्यापक और विश्व स्तरीय धर्म की हैसियत रखता है । इस धर्म के सभी आदेशों एवं निर्देशों में सार्वभौमिकता और विश्व स्तरीय शान पायी जाती है । यह एक स्वाभाविक धर्म है । चूंकि प्रसन्नता प्रकट करना मनुष्य का स्वभाव है, तो इस्लाम धर्म ने भी मनुष्य के इस स्वभाव का ध्यान रखते हुए दो त्योहार रखे हैं–ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा । इनके अतिरिक्त शबेबरात, मुहर्रम और बारह वफ़ात इत्यादि सब मुसलमानों के अपने गढ़े हुए हैं, उनकी कोई धार्मिक हैसियत नहीं है । ईदुल-फ़ित्र इस्लामी कैलेंडर के अनुसार रमज़ान माह के 30 या 29 रोज़े रपखने के बाद शव्वाल माह की पहली तारीख़ को मनायी जाती है ।

ईदुल-फ़ित्र को सामूहिक रूप से मनाया जाता है । चाहे किसी रंग और नस्ल के हों, कोई भाषा भी बोलते हों, दुनिया के किसी भी क्षेत्र में रहते हों, किसी क़बीले और ख़ानदान से संबंध रखते हों और चाहे किसी भी हैसियत के हों, सभी मुसलमान बिना किसी भेदभाव के सामूहिकता की भावना के साथ इस त्योहार को मनाते हैं । इस त्योहार को मनाने का तरीक़ा भी तमाम मुसलमानों का एक ही है । इसको मनाने में संजीदगी और शालीनता अद्वितीय है । किसी प्रकार का कोई शो-गुल नहीं, कोई ढोल-ताशा नहीं, कोई गाना-बजाना नहीं, कोई राग-रंग नहीं । केवल ईश्वर की महान सत्ता की स्तुति और गुणगान को इसमें सम्मिलित करके मानो त्योहार को भी इबादत का स्थान दे दिया ।

वास्तविकता यह है कि यह त्योहार जगत के पालनहार ईश्वर के समक्ष धन्यवाद प्रेषित करने का त्योहार है । धन्यवाद इस बात पर कि जगत के पालनहार ने मनुष्य के मार्गदर्शन हेतु एक पवित्र ग्रंथ 'क़ुरआन' प्रदान किया । एक भटके हुए इन्सान के साथ यदि कोई व्यक्ति सबसे उत्तम नेकी करना चाहे तो वह नेकी वास्तव में इसके अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकती कि उसका मार्गदर्शन उसके गंतव्य

या मंज़िल की ओर कर दिया जाए और सीधे रास्ते पर डाल दिया जाए । अतएव करुणामय और दयामय ईश्वर ने यह पुस्तक 'क़ुरआन' अवतरित करके मनुष्य के ऊपर महान उपकार किया है । तो क्यों न इस महान उपकार का शुक्र अदा किया जाए और प्रसन्नता व्यक्त की जाए ।

ईद के दिन सभी स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, अमीर-ग़रीब सुबह स्नान करते हैं । अच्छे-अच्छे और साफ़ कपड़े पहनकर खुशबू लगाते हैं और ईदगाह जाने की तैयारी करते हैं । जिनको ईश्वर ने धन प्रदान किया है उन पर ईदगाह जाने से पूर्व अपने माल में से एक निश्चित मात्रा में 'सदक़ा-ए-फ़ित्र' अदा करना अनिवार्य है, ताकि वे मुसलमान भाई जो किसी कारणवश आर्थिक दौड़ में पीछे रह गये हैं, इस प्रसन्नता में सम्मिलित हो सकें । सब लोग बस्ती से बाहर ईदगाह या बस्ती के अन्दर ही बड़ी मस्जिद का रुख़ करते हैं । रास्ते में ईश्वर की महान हस्ती का गुणगान करते हुए संजीदगी और शालीनता के साथ चलते हैं और मस्जिद में पहुंचकर नमाज़ अदा करते हैं ।

वास्तविकता यह है कि खुशी और प्रसन्नता अपने ठीक अर्थों में उसी समय व्यक्त होती है जब बन्दे एक ही क़तार में खड़े होकर ईश्वर के समक्ष नतमस्तक होते हैं और जगत के पालनहार का शुक्र बजा लाते हैं । नमाज़ पूर्ण हो जाने के पश्चात इमाम साहब भाषण देते हैं और मुसलमानों को अच्छी-अच्छी नसीहतें करते हैं और नैतिकता को अपनाने, ग़रीबों का ख़याल रखने और केवल एक ईश्वर की पूजा-उपासना करने की शिक्षा देते हैं । उसके पश्चात सभी लोग उसी संजीदगी और शालीनता के साथ अपने-अपने घरों को लौट जाते हैं । घर जाकर सब एक-दूसरे के साथ मिलकर सेवइयां, मिठाई और पकवान इत्यादि खाते-खिलाते हैं ।

यह त्योहार हमें यह सीख देता है कि सारे इन्सान एक ही परिवार के सदस्य की हैसियत रखते हैं । उनमें परस्पर हमदर्दी और प्रेम का संबंध होना चाहिए । इस त्योहार में हमदर्दी और एक-दूसरे के काम आने को बड़ी महत्व प्राप्त है । आदेश है कि रोज़ेदारों के रोज़े ईश्वर के यहां स्वीकार नहीं होते जब तक कि वे (जो धनवान हैं) सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा न करें ।

वास्तव में यह त्योहार अपने दामन में सारी इन्सानियत को समेट लेना चाहता है । सारे इन्सानों को आपस में प्रेम करने वाले और एक-दूसरे के काम आने वाले और प्रसन्नचित्त देखना चाहता है । यदि ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और देखा जाए तो ईद इस्लाम के सत्य धर्म होने की पूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करती है । इस त्योहार से जहां एक ओर इस्लाम का पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है, वहीं अज्ञान का निषेध भी होता है ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

अमीरी रेखा की ज़रूरत

■ रोशनलाल अग्रवाल
(संस्थापक, आर्थिक न्याय मंच)

देश की सारी प्राकृतिक सम्पदा जल जंगल ज़मीन खनिज और सारी धन-संपत्ति पर देश के सब लोगों का समान मूलभूत अधिकार है जिसे घटाया या बढ़ाया भी नहीं जा सकता । अत: इस अधिकार का संबंध नागरिक की योग्यता, क्षमता या सक्रियता से भी नहीं है । इसलिए न्याय के आधार पर एक नागरिक का मूलभूत संपत्ति अधिकार केवल औरत सीमा तक ही होना चाहिए ।

किन्तु आज समाज गंभीर आर्थिक असमानता का शिकार है । देश के सारे प्राकृतिक संसाधनों और संपत्ति पर केवल मुट्ठी भर लागों का ही क़ब्ज़ा हो गया है तथा सारे प्राकृतिक संसाधन खुली लूट का शिकार हैं । देश की कुल संपत्ति का 72 प्रतिशत भाग केवल 12 लाख लोगों के पास है और शेष 121 करोड़, लोगों के पास मात्र 27 प्रतिशत संपत्ति है । देश की सारी अर्थव्यवस्था और सत्ता पर भी इन्हीं लोगों ने अपने धन के बल पर क़ब्ज़ा जमा लिया है । आम नागरिक अपने धन और अधिकार से वंचित होकर उनका गुलाम बनकर रह गया है । वह नितांत, ग़रीबी, बेरोज़गारी, बदहाली, अभाव, शोषण, लाचारी, अपमान और अन्याय का पशुवत जीवन जी रहा है ।

आम आदमी को इस ख़राब हालत का एक मात्र कारण हमारे ग़लत क़ानून हैं । देश की सारी अर्थव्यवस्था झूठ, पाखंड, बेईमानी, षड्यंत्र और अन्याय पर टिकी है । देश की कर प्रणाली आम आदमी का ख़ून चूस रही है । देश की संपत्ति का झूठा हिसाब दिया ज़ा रहा है । अर्थात देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभाध्यक्ष, मुख्य न्यायाधीश, उद्योगपति, व्यापारी, बड़े-बड़े किसान, शासक, प्रशासक व बुद्धिजीवी अपनी राय और संपत्ति का झूठा विवरण दे रहे हैं । अरबों रुपयों के मूल्य की संपत्ति का मूल्य बहुत ही कम बताकर देश के बाक़ी लोगों का हक़ मार रहे हैं ।

ये संपन्न लोग अरबों-खरबों की संपत्ति के मालिक होते हुए भी नाम मात्र का संपत्ति कर दे रहे हैं या दे ही नहीं रहे हैं । जबकि भूखे नागरिक की रोटी पर, नंगे की लंगोटी पर, भिखारी के भीख के कटोरे पर और मुर्दे के कफ़न पर भी टैक्स है । इससे जहां अमीरों की अमीरी बढ़ रही है वहीं ग़रीबों की ग़रीबी भी बढ़ रही है । यह अन्याय पूर्ण आर्थिक असमानता समाज के सारे ताने-बाने को भी ख़त्म कर रही है । जिससे लोगों की आपसी विश्वास, सद्भाव, सहयोग और एकता नष्ट हो रहे हैं । आपसी टकराव विस्फोटक रूप ले रहा है । जघन्य अपराधों की बाढ़ आ रही है । पूरा समाज भयभीत है और असुरक्षा का भी शिकार है । यह स्थिति किसी के भी हक़ में नहीं है ।

अमीरी रेखा : इस गंभीर और भयावह समस्या का न्यायपूर्ण समाधान अमीरी रेखा है । अत: अब ग़रीबी रेखा नहीं अमीरी रेखा बननी चाहिए । और इस रेखा से अधिक संपत्ति रखने वाले नागरिकों पर ब्याज की दर से टैक्स लगाया जाना चाहिए । बाक़ी सभी प्रकार के टैक्सों को ख़त्म कर दिया जाना चाहिए । इससे न केवल मुट्ठी भर लोगों पर ही टैक्स लगाना पड़ेगा बल्कि इससे भारी धन राशि भी प्राप्त होगी । यह टैक्स न्याय की कसौटी पर भी खरा है ।

एक अनुमान के अनुसार देश के मात्र 12 लाख अरबपति व खरबपतियों की संपत्ति पर ब्याज की दर से टैक्स लगाने पर एक वर्ष में कम से कम 200 लाख करोड़ रुपये की आय हो सकती है जो आज सारे टैक्सों से होने वाली 20-25 लाख करोड़ रुपये की आय की 8-10 गुनी है । यह देश के सारी अर्थव्यवस्था और संसाधनों से मिला शुद्ध लाभ है ।

लाभांश बांटो : इस लाभ में से शासन के बजट का ख़र्च काट कर शेष सारा लाभ देश के सारे नागरिकों में बिना किसी भेदभाव के समान रूप से बांटा जाना चाहिए । इससे देश के हर नागरिक को 10 हज़ार रुपया हर माह आसानी से दिया जा सकता है ।

न्यायपूर्ण अधिकार : इस प्रकार का लाभांश पाना देश के सभी नागरिकों का जन्मसिद्ध अधिकार है क्योंकि वे ही इस देश की सारी धन-संपत्ति व संसाधनों के मूल स्वामी

हैं । इसलिए इनसे मिलने वाला लाभ इन्हें मिलना ही चाहिए । अमीरी रेखा से अधिक धन रखने वाला हर आदमी इनका बटाईदार है । इनसे मालिकों को मालिकाना हक़ मिलना ही चाहिए । यह विकास की न्यायपूर्ण हिस्सेदारी है ।

मालिक के दो अधिकार : मालिक का पहला अधिकार अपने सारे साधनों व संपत्ति से मिलने वाले लाभ का पूरा हिसाब-किताब लेना व दूसरा शुद्ध लाभ को बांटना ही है । न कि रोज़गार मांगना । इसलिए अब नागरिकों को और कुछ भी मांगने की बजाय ये दो अधिकार ही मांगने चाहिए । ये अधिकार मिलने पर उनकी सारी ग़रीबी, बेरोज़गारी, अभाव, अन्याय, शोषण, लाचारी और अपमान अपने आप ख़त्म हो जाएगा । इससे देश का हर नागरिक भय मुक्त, अभाव मुक्त, सम्मान युक्त, सुरक्षा व सुख-शांति का जीवन जी सकेगा । अन्याय से पैदा होने वाले अनेक प्रकार के अपराध, आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद, विवाद, टकराव और युद्ध भी समाप्त हो जाएंगे ।

कैसे मिलेगा यह अधिकार : इस अधिकार को पाने का सबसे सरल मार्ग वोट देने का नागरिक का अधिकार है । देश के सभी मतदाता धर्म, जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, दल या निजी संबंधों के आधार पर वोट देने की बजाय इसी अधिकार को पाने के लिए अपना वोट दें । जब देश के सारे मतदाता इसके लिए ही वोट देंगे तो इसे मानने वाले ही चुनाव जीत सकेंगे और संसद में जाकर उचित क़ानूनी बदलाव करके सब नागरिकों को उनका यह मौलिक अधिकार प्रदान कर देंगे । हिंसा के द्वारा यह अधिकार नहीं लिया जा सकता । इस बात को सबको समझाना बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों और सभी सज्जनों व संतों की ज़िम्मेदारी है ।

गोपनीयता का काला क़ानून : देश में गोपनीयता का काला क़ानून तुरंत ख़त्म किया जाना चाहिए । यह लोकतंत्र और नागरिकों का अपमान तो है ही सारे षड्यंत्रों, बेईमानी, झूठ, पाखंड और पापों की भी जड़ है । यह साम्राज्यवाद का अवशेष है । अस्ली लोकतंत्र में इसका कोई औचित्य नहीं है ।

संपन्न वर्ग को भी लाभ : इससे न केवल समाज के कमज़ोर वर्ग को लाभ मिलेगा बल्कि संपन्न वर्ग को भी लाभ मिलेगा । उन्हें अपराध बोध से समाज की घृणा और अपनी असुरक्षा के भय से, मुक्ति मिलेगी । उनका भय और तनाव समाप्त होगा । षड्यंत्र रचने और झूठ बोलने की मजबूरी समाप्त होगी । समाज उन्हें अपने कमाऊ सपूत की तरह पूरा सम्मान और आत्मीयता देगा । उनकी संपन्नता, सुख में बदल जाएगी और उसमें कोई कमी भी नहीं आएगी । उनकी योग्यता, प्रतिभा और कर्मठता का सही मूल्यांकन होगा और उन्हें सही भूमिका भी मिल सकेगी । इससे प्रकृति का विनाश रुक जाएगा और वह समृद्ध होगी । देश की अर्थव्यवस्था को चार-चांद लग जाएंगे । पूरा समाज एक परिवार बन सकेगा, जिसमें सभी सुखी और संतुष्ट होंगे । कोई भी दुखी नहीं होगा ।

आर्थिक न्याय के लिए आधारभूत प्रस्ताव

1. व्यवस्था में पूरी पारदर्शिता होनी चाहिए । अत: सारी आर्थिक, राजनैतिक और प्रशासनिक गोपनीयताओं को समाप्त कर दिया जाना चाहिए । गोपनीयता सारे षड्यंत्रों की जननी है ।
2. एक नागरिक को औसत सीमा तक मूल्य की संपत्ति रखने का मूलभूत अधिकार होना चाहिए ।
3. औसत सीमा से उसकी अधिक मूल्य की संपत्ति पर ब्याज की दर से कर लगाया जाना चाहिए ।
4. बाक़ी सारे करों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए ।
5. संपत्ति का मूल्यांकन बाज़ार की वर्तमान दरों पर होना चाहिए ।
6. सरकार के सारे बजट का ख़र्च क़ाटकर बाक़ी सारी रक़म देश के सारे नागरिकों में समान रूप से बांट दी जानी चाहिए ।

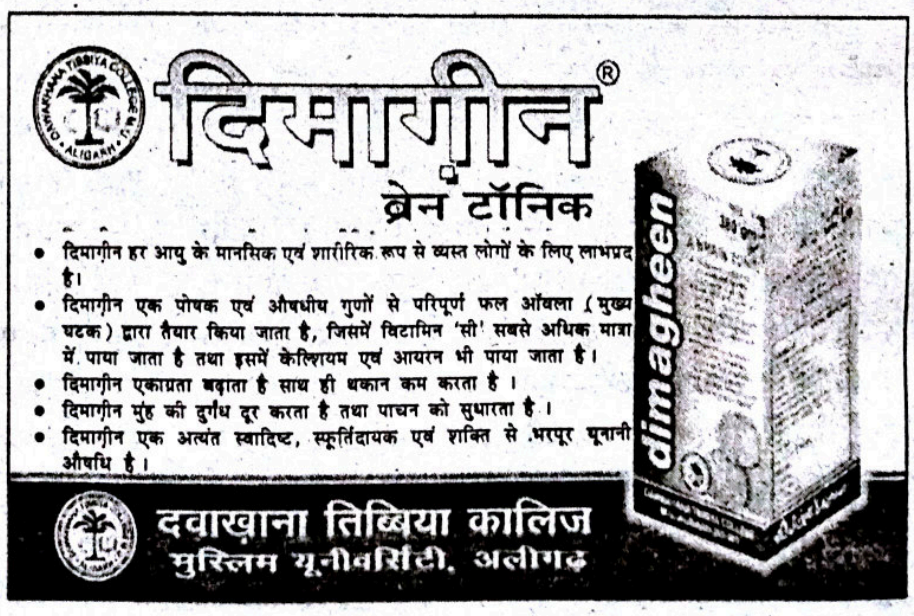

ऐच्छिक है वंदेमातरम्

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

वंदेमातरम् की धुन बजाये जाने पर लोकसभा का बहिष्कार करने वाले बसपा सांसद शफ़ीक़ुर रहमान बर्क़ के अमल को ऐच्छिक क़रार देते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने पिछले दिनों जनहित याचिकाओं को ख़ारिज कर दिया । याचिकाओं में वंदेमातरम् के निरादर का सवाल उठाकर बर्क़ के ख़िलाफ़ कार्रवाई की मांग की गयी थी । अदालत ने कहा कि यह मामला जनहित-प्रावधानों के तहत नहीं आता । मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एस॰ के॰ सिंह और जस्टिस वी॰ के॰ अरोड़ा की दो सदस्यीय पीठ ने इन याचिकाओं पर सुनवाई से इन्कार कर दिया । उल्लेखनीय है कि इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने सात सितम्बर 2006 को वंदेमातरम् के गायन पर यह साफ़ कर दिया था कि गाने के लिए कोई बाध्य नहीं कर सकता और न ही कोई गाता है तो रोक सकता है ।

इसी प्रकार सुप्रीम कोर्ट ने बिजोय अम्मानुयेल बनाम केरल राज्य मुक़दमे [A.I.R. 1987 S.C. 748] में भी ऐसी ही व्यवस्था दी गयी थी । इस मुक़दमे में कुछ विद्यार्थियों को स्कूल से इसलिए निकाल दिया गया था क्योंकि उन्होंने राष्ट्र-गान-जन गण मन को गाने से मना कर दिया था । ये विद्यार्थी स्कूल में राष्ट्रगान के समय इसके सम्मान में खड़े होते थे तथा इसका सम्मान करते थे पर गीत को गाते नहीं थे । गाने के लिए उन्होंने मना कर दिया था । सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका स्वीकार कर ली और स्कूल को उन्हें वापस लेने को कहा । कोर्ट का कहना था कि यदि कोई व्यक्ति राष्ट्रगान का सम्मान तो करता है पर उसे गाता नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि वह इसका अपमान कर रहा है । अतः इसे न गाने के लिए उस व्यक्ति को दंडित या प्रताड़ित नहीं किया जा सकता । चूंकि वंदेमातरम् इस देश का राष्ट्रगीत है फिर भी इसको ज़बरदस्ती गाने के लिए मजबूर करने पर भी यही क़ानून व नियम लागू होगा ।

अदालतों की इन व्यवस्थाओं और आदेशों से यह बात भी स्पष्ट हुई है कि लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार की उक्त सांसद को दी गयी चेतावनी ग़ैर-क़ानूनी और लोकतंत्र की मर्यादा के बिल्कुल ख़िलाफ़ थी । 8 मई 2013 को लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार माननीय सांसद के इस क़दम पर कड़ी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए उन्हें भविष्य में ऐसा न करने की सख़्त चेतावनी देते हुए कहती है कि 'एक माननीय सांसद वंदेमातरम् की धुन बजने के दौरान सदन से बाहर चले गये । मैंने इसका गंभीर संज्ञान लिया है । मैं जानना चाहूंगी कि ऐसा क्यों किया गया । ऐसा आगे कभी भी नहीं होना चाहिए ।' इस वाक़िये पर मीरा कुमार जैसी ही राय रखने वाले कई लोग अपनी प्रतिक्रिया जताने लगे, यहां तक कि पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने भी वंदेमातरम् के विरोध पर कड़ी टिप्पणी की । कोई ऐसा समझदार नहीं दिखायी पड़ा, जो क़ानून और संविधान सम्मत

जीवन उद्धार

दुखो से डर कर कभी, देखो तुम मायूस न होना,
दूसरों की खुशनसीबी देख कभी आंखें नम न करना ।

इस स्वार्थी जगत में, निंदा से कभी विचलित न होना,
सत्य डगर मुश्किल है, झूठ के आगे न कभी शीश नवाना,

उच्च चिंतन के बहाव में, समाज सुधार हेतु सदैव प्रेरित होना,
जीवन की सुख-दुख धारा में, तुम ज्ञान की ज्योत जलाना ।

दीन दुखियों की सेवा में, अपनी निंदा सुन तुम कभी हतास न होना,
दूसरों के जीवन उद्धार में, कभी तुम अपना ईमान न डगमगाना ।

ख़तरों से घबराकर, कर्तव्य पथ से कभी तुम विमुख न होना,
स्वहित त्याग कर तुम भी सबके संग हरदम मुस्कुराना ।

● सुनीता शर्मा

बात करे । क्या हो गया है लोगों को ? ये लोग इस देश को किस रूप में देखना चाहते हैं ? वंदेमातरम् को देशप्रेम का मानक कदापि नहीं माना जा सकता । बर्क़ साहब कहते हैं, 'यह सच है कि मैं सांसद हूं, पर मुसलमान पहले हूं । मैं इस्लाम के ख़िलाफ़ नहीं जा सकता । इसलिए मैं लोकसभा छोड़कर चला गया । अगर भविष्य में भी ऐसी स्थिति आयी तो मैं वही करूंगा, जो आज किया है ।' समाजसेवी अन्ना हज़ारे और बाबा रामदेव के वंदेमातरम्-नाद पर भी मुसलमानों ने आपत्ति की थी और साफ़ कहा था कि इसके साथ-साथ मुसलमानों का समर्थन कदापि नहीं हासिल किया जा सकता है ।

यह खुली हुई हक़ीक़त है कि वंदेमातरम् इस्लाम की तौहीद अर्थात विशुद्ध एकेश्वरवाद की मौलिक शिक्षा के बिल्कुल ख़िलाफ़ है । अंग्रेज़ों ने 1870 के दौरान भारत में 'गॉड सेव द क्वीन' गीत गाया जाना अनिवार्य कर दिया था । कहा जाता है कि बंकिमचन्द्र चटर्जी ने इसके विकल्प के तौर पर धार्मिक गीत की रचना की, जिसके सिर्फ़ संस्कृत में दो ही पद लिखे । इसकी रचना 7 नवम्बर 1876 को बंगाल के कांतल पाडा गांव में की गयी । बाद में 1882 में 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास में इसे विस्तार देकर शामिल कर लिया गया । यह एक साम्प्रदायिक उपन्यास है, मुस्लिस-विरोध के केन्द्रीय विषय पर टिका है ।

कथानक में एक संन्यासी भवानन्द इस गीत को गाता है । यह भी कहा जाता है कि पहले इसका कथानक मुस्लिम विरोध न होकर अंग्रेज़ विरोध था । बाद में इसे बदल डाला गया । इसका सबसे पहला विरोध कांग्रेस के 1905 के बनारस अधिवेशन में हुआ था, परंतु इसे कुछ सुलझा लिया गया था और श्रीमती सरला देवी चौधरानी जी ने पूरा वंदेमातरम् गाया । इसका बाक़ायदा विरोध 1908 में मुस्लिम लीग ने अपने अमृतसर अधिवेशन में किया और 1937 तक आते-आते यह उसके एजेंडे का विषय बन गया । कम्युनिस्ट जन भी इसके विरोधी थे । उन्होंने इसकी जगह 'इन्क़िलाब-ज़िन्दाबाद' को अपनाया ।

1923 में मुहम्मद अली जो कि कांग्रेस के तत्कालीन अधिवेशन के अध्यक्ष थे, ने वंदेमातरम् के गान का ज़ोरदार विरोध किया । वंदेमातरम्-गान का विरोध इतना अधिक बढ़ गया कि कांग्रेस के हरिपुर अधिवेशन में वंदेमातरम्-गान पर विचार करने हेतु 4 लोगों की एक समिति बनायी गयी और इस समिति ने यह तय किया कि वंदेमातरम्-गान के पहले 2 पद ही गाये जाएंगे । यही पद संविधान में शामिल किये गये ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में 24 जनवरी 1950 में 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाने संबंधी वक्तव्य पढ़ा जिसे स्वीकार कर लिया गया । डॉ॰ इक़बाल के 'सारे जहां से अच्छा...' को भी राष्ट्रगीत (क़ौमी तराना) का दर्जा दिया गया ।

ईमानदारी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि॰) एक बहुत मशहूर ख़लीफ़ा हुए हैं । आप सरकारी ख़ज़ाने को जनता की अमानत समझते थे और उसकी बड़ी हिफ़ाज़त करते थे एक दिन सरकारी ख़ज़ाने में बहुत से सेब आये, आप दस्तूर के मुताबिक़ उनको लोगों में बांट रहे थे, इतने में आपका छोटा बच्चा इधर आ निकला । वह अभी नासमझ था, उसे क्या पता कि ये सेब किसके हैं । अपने अब्बा मियां को बांटते देखा, समझा हमारे होंगे । एक सेब उठा कर खाने चला ।

सेब तो सरकारी थे और सरकारी चीज़ पर सारे लोगों का हक़ होता है । ख़लीफ़ा भला अपने बच्चे को क्यों लेने देते । यह तो जनता के माल में ख़ियानत होती, इसलिए उन्होंने बच्चे से सेब ले लिया । बच्चा रोने लगा । आपने बहलाया मगर बच्चा रोता हुआ अन्दर चला गया और अपनी मम्मी से शिकायत कर दी । मां ने बेटे के आंसू पोंछे और बाज़ार से सेब मंगा कर बहला दिया ।

ख़लीफ़ा जब अन्दर आये तो उन्हें सेब की ख़ुशबू मालूम हुई । बीवी से पूछा कि घर में कोई सरकारी सेब तो नहीं आया है ।

बीवी ने कहा : "सरकारी सेब तो नहीं, हां मैंने बाज़ार से सेब मंगा कर बच्चे को खिलाया है । आपने इससे सेब ले लिया था, वह रोता हुआ मेरे पास आया । किसी तरह बहल नहीं रहा था, मैंने बाज़ार से मंगा कर बहला दिया ।"

उन्होंने कहा : "क्या करता सेब सरकारी ख़ज़ाने के थे, मैंने बच्चे से सेब इसलिए छीन लिया था कि एक सेब के लिए कहीं अल्लाह के यहां बेईमान न ठहरूं ।"

ख़लीफ़ा की इस बात पर उनकी बीवी ख़ामोश हो गयीं ।

भारत-बंगलादेश सीमा पर सिसकती इन्सानियत

■ मुशर्रफ़ अली

प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह सितम्बर 2011 ई॰ में जब बंगलादेश गये थे, तो वहां की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना वाजिद के साथ इस ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किया था कि दोनों देशों के बीच सीमा का निर्धारण कर लिया जाएगा और इन्कलेव की समस्या का समाधान हो जाएगा। इस सिलसिले में 21 महीने बीत जाने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गयी है। 1947 ई॰ में देश के विभाजन के बाद से ही भारत और पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) की सीमा के दोनों ओर एक लाख से अधिक इन्सान ऐसे बसते हैं, जो किसी देश के निवासी नहीं हैं और इसलिए बिल्कुल बुनियादी सुविधाओं से भी महरूम हैं, यहां तक कि उनकी कोई पहचान भी नहीं है।

दोनों ओर स्थित इन्कलेवों में अधिकतर आबादी मुसलमानों की ही है। पश्चिम बंगाल के ज़िला कूच बेहर के क्षेत्र में स्थित मशालडंगा इन्कलेव के निवासी 44 वर्षीय मुहम्मद अज़ीज़ कहते हैं कि इससे पहले भी चार बार ऐसे समझौते हो चुके हैं। अब इन समझौतों से कोई उम्मीद नहीं रही, ज़मीन पर कोई काम हो तो बात बने।

इसी क्षेत्र में धोबाल गढ़ी इन्कलेव के शाह जमाल कहते हैं कि "यह एक चिड़िया घर है। हम जानवरों की तरह हैं जो पिंजड़े में क़ैद हैं। हमें बाहर निकलने की इजाज़त नहीं है, लेकिन हमें बाहर से लोग देखने आते हैं।" इनकी बातों में इनका दर्द महसूस किया जा सकता है।

यह कहानी केवल मशालडंगा या धोबाल गढ़ी की नहीं है, बल्कि भारत-बंगलादेश सीमा पर ऐसे छोटे-बड़े 173 इन्कलेव हैं। 102 भारतीय इन्कलेव हैं, जो बंगलादेश की सीमा में हैं और 71 बंगलादेशी इन्कलेव हैं, जो भारत की सीमा में हैं। इन्कलेव उस भू-भाग को कहते हैं, जो एक राज्य के अधीन हो, लेकिन चारों ओर से दूसरे राज्य द्वारा घिरा हुआ हो।

अब जो बंगलादेशी इन्कलेव भारतीय सीमा के भीतर हैं, वहां भारत की ओर से कोई काम इसलिए नहीं किया जाता कि वे भारत का हिस्सा नहीं हैं। वे विदेशी भू-भाग के हैं, जिनकी ज़िम्मेदारी भारत पर नहीं आती, बंगलादेश वहां कोई काम इसलिए नहीं कर पाता है कि वे उसकी सीमा से बाहर हैं। बंगलादेश अगर इन इन्कलेव में कोई विकास कार्य करना भी चाहे तो उसे भारत की सीमा में प्रवेश करना होगा, जो कि नहीं किया जा सकता।

कुल मिलाकर उनकी हालत एक बड़े पिंजड़े में क़ैद जानवरों जैसी है, जैसा हम जैविक उद्यानों में देखते हैं, लेकिन जैविक उद्यानों में रहने वाले जानवरों के खाने-पीने की व्यवस्था बाहर से की जाती है, लेकिन इन इन्साननुमा जानवरों के लिए ऐसी भी कोई व्यवस्था नहीं है।

इस प्रकार इन्कलेव निवासी दोनों ओर से कोपभाजित होते हैं। कहने को वे बंगलादेशी निवासी हैं, मगर उनके पास ऐसा कोई दस्तावेज़ नहीं जो उन्हें बंगलादेश का निवासी बता सके। 66 वर्षों से उनका अपने देश से कोई संपर्क नहीं है दूसरी ओर वे अपने गांव (इन्कलेव) से बाहर नहीं निकल सकते, क्योंकि उनके गांव के बाहर चारों ओर भारत है और वे भारतीय नहीं हैं।

कुल मिलाकर उनकी हालत एक बड़े पिंजड़े में क़ैद जानवरों जैसी है, जैसा हम जैविक उद्यानों में देखते हैं लेकिन जैविक उद्यानों में रहने वाले जानवरों के खाने-पीने की व्यवस्था बाहर से की जाती है, लेकिन इन इन्साननुमा जानवरों के लिए ऐसी भी कोई व्यवस्था नहीं है।

यही स्थिति सीमा की दूसरी ओर भी है। 66 वर्षों से

ये लोग बिजली, पानी, सफ़ाई, शिक्षा आदि बुनियादी सुविधाओं से तो महरूम हैं ही, इनकी कोई पहचान भी नहीं है। विडम्बना यह भी कि ये लोग इन सुविधाओं की प्राप्ति के लिए या अपनी पहचान के लिए लड़ाई भी नहीं लड़ सकते हैं, क्योंकि इसके लिए उन्हें गांव से बाहर निकलना होगा और उनके पास गांव से निकलने का भी अधिकार नहीं है। कोई नेता उनके गांव में आकर झूठे वादे भी नहीं कर जाता, क्योंकि ये वे बदनसीब लोग हैं जो मताधिकार से भी वंचित हैं। मताधिकार तो दूर, कहीं के जनसंख्या रजिस्टर में भी उनका नाम नहीं है।

इन इन्कलेवों में अपराध भी अपनी चरम सीमा पर है, क्योंकि वहां कोई क़ानून व्यवस्था नहीं है। अपराध से प्रभावित कोई व्यक्ति अगर शिकायत करना चाहता है, तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के उस पार जाना होगा और सीमा पार जाने के लिए उसे दस्तावेज़ों की ज़रूरत होगी जो उसके पास नहीं हैं। उसके पास तो गांव से बाहर निकलने का भी अनुमति पत्र नहीं है।

सीमा पर इस असामान्य स्थिति का इतिहास भी बड़ा दुखद है। वास्तव में ये दो रजवाड़े थे—रंगपुर और कोच विहार। अठारहवीं सदी के आरंभ में रंगपुर के महाराजा और कूच बेहर के राजा के बीच बड़ी दोस्ती थीं। वे एक-दूसरे के पास आते-जाते थे और शतरंज की बाज़ियां भी चलती थीं। उन्हीं बाज़ियों में कुछ गांव महाराजा रंगपुर ने कूच बेहर बेहर के जीत लिए और कुछ गांव राज कूच बेहर ने रंगपुर के जीत लिए। गांव तो जहां थे वहीं रहे केवल उनका स्वामित्व बदल गया। यह स्थिति 1947 तक रही और कोई ख़ास अन्तर नहीं पड़ा, लेकिन जब देश का विभाजन हुआ तो रंगपुर पूर्वी पाकिस्तान के हिस्से में चला गया जो अब (1971 के बाद) बंगलादेश है और देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की कोशिशों से 1949 ई० में कूच बेहर भारत का अंग बन गया। इस प्रकार इन दोनों रजवाड़ों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय रेखा खिंच जाने के बाद स्थिति गंभीर हो गयी। पिछले 66 वर्षों से लाखों लोग उन दो राजाओं के खेल की क़ीमत चुका रहे हैं।

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों
और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत
دعوت
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि
वार्षिक
स्वदेश में
: Rs. 220/-
विदेशों में
30 अमेरिकी
डॉलर
आजीवन
: Rs. 5,000/-

ماہنامہ زندگی نو
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

हकीम अब्दुल हमीद देहलवी (रह०)

❖ मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

अरस्तु, जालीनूस, ज़हरावी, इब्ने सीना और राज़ी ने जिस चिकित्सीय वृक्ष को अपना सब कुछ देकर परवान चढ़ाया था, उस वृक्ष को बार-बार आंधियों और तूफ़ानों ने जड़ से उखाड़ फेकने की कोशिश की, मगर हमेशा ही किसी न किसी ने उसको गिरने से बचा लिया । कभी ये तूफ़ान भीतरी अशांति के रूप में आये और कभी हकिमों के आपसी मतभेद के कारण ।

भारत की सरज़मीन पर भी यूनानी चिकित्साशास्त्र का पौधा ख़ूब फला-फूला । यहां इसका सिंचन हकीम मुहम्मद शरीफ़, हकीम महमूद ख़ान देहलवी, हकीम अब्दुल हमीद ख़ान और हकीम अजमल ख़ान जैसे प्रतिभाशाली हकीमों ने किया । सन 1857 का ज़माना भारत के लिए कष्टदायक यातना लेकर आया था, तो यूनानी चिकित्सा किस तरह सुरक्षित रह सकती थी । अंग्रेज़ों ने यहां की हर चीज़ को बदलने की कोशिश की और 1910 ई० में मेडिकल रजिस्ट्रेशन एक्ट का क़ानून लागू करने की कोशिश की । उस समय हकीम अजमल ख़ान के नेतृत्व में यूनानी चिकित्सा और आयुर्वेदिक चिकित्सा ने मिलकर उसका सामना किया । वे अंग्रेज़ों के सामने चट्टान बनकर खड़े हो गये ।

सन 1947 का ज़माना सन 1857 से भी ज़्यादा दुखदायी था, जब देश के बंटवारे के साथ दिल भी बट गये । जब आज़ादी मिली और तिब्बे यूनानी पर बुरा वक़्त आया, तो उसने साथ छोड़ दिया । इस वजह से यूनानी चिकित्सा रूपी कश्ती बीच भंवर में डगमगाने लगी । इस बार जिस व्यक्ति ने इस चिकित्सा रूपी कश्ती को न केवल किनारे पर लगाया, बल्कि उसके पतवारों को ऐसी मज़बूती दी कि आंधी-तूफ़ान मिलकर भी उसका कुछ नुक़्सान न कर सकें । उस प्रतिभावान व्यक्ति का नाम था "हकीम अब्दुल हमीद देहलवी (रह०)।"

आपका जन्म 14 सितम्बर 1908 ई० में दिल्ली में हुआ । अभी आप जवान भी न हुए थे कि आपके पिता का साया आपके सर से उठ गया । मात्र 13 वर्ष की आयु में ही परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी आपके कंधों पर आ पड़ी । आपने हिम्मत, हौसला और सब्र के साथ घर की ज़िम्मेदारियों को अदा करने का निर्णय लिया । आप नियमित रूप से दवाख़ाने पर बैठते, मरीज़ों को देखते और उनके ठीक होने के लिए अल्लाह से दुआ करते । आपके इलाज से मरीज़ों को फ़ायदा पहुंचता । इस तरह आपका दवाख़ाना दिन दूनी, रात चौगुनी तरक़्क़ी करता गया ।

आपने अपने दवाख़ाना अर्थात हमदर्द दवाख़ाना की तरफ़ से एक पत्रिका भी सन 1933 ई० में जारी की । जिसका नाम "रिसाला हमदर्दे सेहत" था । जो इस समय पाकिस्तान में प्रकाशित हो रहा है और भारत में 'हमदर्द' के नाम से छपता है । इस पत्रिका में आपने जनकल्याण हेतु चिकित्सा व स्वास्थ्य से संबंधित बहुत-सी जानकारियों को प्रकाशित किया, जिससे लोग घर बैठे-बैठे लाभांवित होते रहें ।

हकीम अब्दुल हमीद एक प्रतिभावान व्यक्ति थे । वे केवल एक हकीम ही नहीं, बल्कि समाज सेवक और साहित्य प्रेमी भी थे । उन्होंने सन 1957 ई० में "इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इस्लामिक इस्टडीज़" के नाम से एक संस्था की स्थापना की, जिसके द्वारा इस्लामी विषयों पर शोध किया गया । विभिन्न स्थानों पर सेनीनार आयोजित किये गये । इसके द्वारा शिक्षा के महत्व को बताया गया । सन 1963 ई० में हिस्ट्री ऑफ़ मेडिसिन और मेडिकल रिसर्च सेन्टर स्थापित किया गया, जिसका उद्घाटन उस वक़्त के प्रधानमंत्री श्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने किया ।

सारांश यह कि आपने हमदर्द अस्पताल के साथ हमदर्द तिब्बिया कॉलेज, हमदर्द पब्लिक स्कूल, हमदर्द कॉलेज ऑफ़ फार्मेसी की भी स्थापना की, जिससे लोग आज भी लाभांवित हो रहे हैं ।

आपको देश के प्रतिष्ठित अवार्ड "पद्मश्री" से नवाज़ा गया । रूसी सरकार ने भी आपको रूस के सबसे बड़े तिब्बी अवार्ड "इब्ने सीना अवार्ड" से नवाज़ा । यूनानी चिकित्सा से लोगों की सेवा करते हुए सन 1999 ई० में आपकी मृत्यु हुई ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

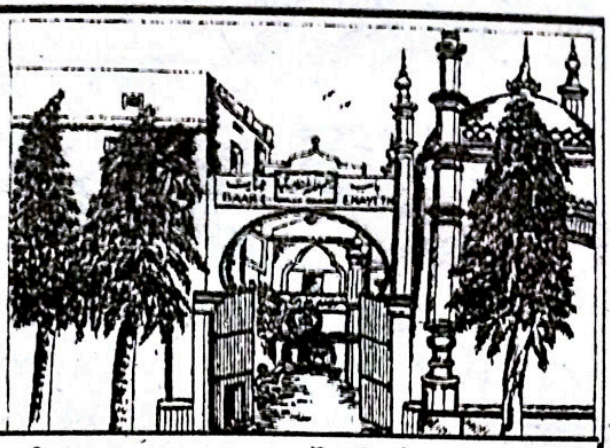

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2013-2014 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें--उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक-ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम ज़ोरो शोर से जारी है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें--THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO. : 300402010010581, ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हिन्दी कविता की प्रीतभरी सुवास

पुस्तक का नाम	: प्रीत मंजरी (काव्य-संग्रह)
लेखिका का नाम	: डॉ॰ प्रीत अरोड़ा
प्रकाशक	: देवभूमि प्रकाशन, नैनीताल
पुस्तक मूल्य	: 10 रुपये
समीक्षक	: गिरीश पंकज

इधर लिखी जा रही अधिकांश हिंदी कविता में एक ख़ास क़िस्म की जड़ता है । नयी कविता का तानाबाना ऐसा है कि नया पाठक कविता की बगिया में जाकर भी वहां के फूलों से जुड़ नहीं पाता । न सौंदर्य, न गंध और न सौंदर्य । लगता है काग़ज़ के सुमन खिले हुए हैं । कविता की मंजरी ही नक़ली है । ऐसा इसलिए है कि अब अधिकांश कविताएं दिल से नहीं, दिमाग़ से लिखी जा रही हैं, जबकि कविता कोमल अनुभूतियों की उपज होती है । जब तक अंतस में प्रीत न जगे, कविता संभव नहीं हो पाती । एक सार्थक कविता आत्मदर्पण भी होती है । वह चंद शब्दों का असंगत कोलाज भर नहीं होती, वह जीवन का जीवंत चित्र होती है । और आत्मा का अनगाया राग भी होती है । मन की बातों को अनुगुंजन है कविता । जबकि समकालीन कविताओं में कविता के अनिवार्य तत्व लगभग अनुपस्थित हैं । यही कारण है ये कविताएं पाठकों से दूर हैं । कविता की प्यास पुरानी कविताओं के पाठ से ही बुझ पाती है लेकिन ऐसा नहीं है कि सारी कवि-बिरादरी एक ढर्रे पर चल रही है । कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो कविता को शिल्प के स्तर पर और भाव के स्तर पर भी जीने की कोशिश कर रहे हैं । इनके यहां कविता बिल्कुल कविता की तरह ही उपस्थित होती है । इन लोगों में डॉ॰ प्रीत अरोड़ा सुपरिचित नाम बनता जा रहा है ।

इस युवा कवयित्री ने अपनी कविता-यात्रा को एक प्रखर संभावना में तब्दील कर दिया है । प्रीत की कविताई में आडंबर नहीं है । सादगी है । और वह दिल से अपनी बात कहती है । चाहे वह प्रकृति को देखे, या जीवन के विविध आयामों को । प्रीत की हर कविता प्रभविष्णुता के निकष पर खरी उतरती है । सभी कविताएं अर्थवान हैं । इन्हें पाठक हृदयंगम कर लेगा । अधिकांश कविताओं को मैं फेसबुक या विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में देखता-पढ़ता रहा हूं । कविता की सफलता इसी में है कि वह पढ़ते साथ ही भाव लोक से अर्थलोक की यात्रा करा दे । यह समझना न पड़े कि कविता के गूढ़ार्थ क्या हैं । कविता अपने अर्थ को नदी के जल की तरह पारदर्शी बनाए । एक फूल की तरह सुवास को प्राण तक पहुंचा दे । कविता के अर्थलोक तक पहुंचने के लिए पाठक अतिरिक्ति ज्ञान की कुंजी का सहारा न ले । प्रीत ने कविता की सही रीत से अपना रिश्ता जोड़ा है । उसने कविता को सरल किया । अपनी गहनतम अनुभूतियों को सरलतम अभिव्यक्ति दी है ।

प्रीत की कविताओं की मंजरी मेरे सामने हैं । हर कविता की पंखुड़ी चटक रंग से भरी है । यह मंजरी अपनी सुवास बिखेर रही है । आकर्षित कर रही है । वह जीवंत है । यहां भावनाएं नाना रूपों में सामने आती हैं । कभी कविता नव चेतना जगाती है, तो कभी संस्कारों से रिश्ता जोड़ती है । बेटियों की महत्ता पर विमर्श करती है तो मां के अवदान पर भी अभिभूत होकर उसका गुणगान करती है । कविता नन्हीं चिड़िया से भी बतियाती है तो प्रकृति का विहंगावलोकन भी करती है । प्रीत की कविता में नैतिक मूल्यों की बहुलता है । वह संस्कारों पर ज़ोर देती है । प्रीत की स्त्री भी मुक्तिकामी है लेकिन संस्कारों के साथ । यह बड़ी बात है । क्योंकि इधर की अनेक कवयित्रियां पूरी तरह से मुक्त होने पर आमादा हैं । वे देह से मुक्त हो रही हैं, परिवार से मुक्त हो रही हैं । मुक्ति की ग़लत परिभाषा को दिमाग़ में बिठा कर कविताएं कर रही हैं । जबकि प्रीत की कविताएं दिशा देती हैं और स्त्री को उसकी अस्मिता से प्रतिबद्ध रखती हैं । संस्कारों की जीत कविता में स्त्री का दर्द भी है और आगे बढ़ाने की ललक भी । लेकिन अंततः जीतते हैं संस्कार । यही संस्कार कविता को बड़ा बनाते हैं, कवयित्री को भी भीड़ से अलग कर देते हैं । महान कवयित्री महादेवी वर्मा का स्त्री विमर्श भी कुछ इसी तरह का है । महादेवी भी मुक्ति के लिए बेचैन हैं मगर वे

संस्कारों को नहीं छोड़ती । वह भारतीयता को नकारती नहीं । वे श्रेष्ठ परम्पराओं से बंध कर त्याग भी करती है । वे नीर भरी दुख की बदली भी है मगर नयी रागिनी भी हैं । प्रीत भी इन्हीं स्थितियों का चित्र खींचती है कि–

''मन कहता उसका, बग़ावत करने को
तभी गूंजने लगती कानों में मां की शिक्षा
और संस्कार देने लगते दुहाई
ठंडी आह भर कर
पुनः कोशिश करती
लड़ती अपने विचारों से
आख़िर
जीत जाते संस्कार और हार जाती वो
आदर्श समझाते और समझ जाती वो ।''

कविता में इस तरह मूल्यवत्ता का आग्रह अद्‌भुत है । इधर की अधिकतर कवियित्रियों में यह बोध ग़ायब है । अब कितनी कवयित्रियां नैतिकता की बातें करती हैं ? नैतिकता एक हास्यस्पद शब्द बनकर रह गया है । यह स्त्री विमर्श से लगभग अनुपस्थित होता जा रहा है । क्योंकि बहुत-सी औरतें नैतिकता को भी बंधन मानती हैं । जबकि प्रीत की कविता में नैतिकता केन्द्रीय स्वर बनकर उभरता है । प्रीत घर की बात करती है । नवचेतना भी जगाती हैं मगर उसके पीछे लोक मंगल है । सुधर जाने की वकालत है । कविता घर को जोड़ने के पक्ष में खड़ी है जबकि अब घर से मोहभंग होने की कविताएं भी रची जा रही है । कुल मिलाकर इस वक़्त जबकि कवयित्रियां क्रांति के नाम पर सब कुछ छिन्न-भिन्न करने पर आमादा नज़र आती हैं, प्रीत की कविताएं जोड़ने का मंत्र देती हैं । सही कविता जोड़ती है तोड़ती नहीं । वह क्रांति करती है लेकिन सृजन का वातावरण बनाकर । लोगों की चालाकियों को कवयित्री बख़ूबी समझती है इसलिए वह आगाह करती है कि–

''जरा संभल के रोनी सूरत बनाकर
लोग अक्सर हमदर्दी बटोर लेते हैं
भोली सूरत बनाकर
लोग अक्सर दूसरों को लूट लेते हैं
हुस्न के जलवे दिखाकर
लोग अक्सर बरबाद कर देते हैं
यारों, ज़रा संभल के रहना इन ज़माने वालों से
लोग अक्सर निर्दोष को बलि का बकरा बना देते हैं ।''

मतलब यह कि प्रीत की कविताएं सबको संदेश देती है ताकि बेहतर दुनिया रची जा सके। घर को, मां को, जीवन मूल्यों को प्रीत ने अधिक महत्व दिया है । लेकिन ऐसा भी नहीं है कि प्रीत निरीह स्त्री के पक्ष में है । वह स्त्री की मज़बूती का आग्रह करती है और मुहिम चलाने पर भी ज़ोर देती है । वह दो टूक कहती है कि बेटी हूं पर कमज़ोर नहीं/ मा-बाप का अभिमान हूं मैं/नये संकल्प और नयी सोच से, देश का मान बढ़ाऊंगी/होंगें सबके सपने पूरे/ये विश्वास दिलाऊंगी/अत्याचारों से लड़कर/जीत का बिगुल बजाऊंगी/ सत्कर्म, सद्‌भावना से/आगे बढ़ती जाऊंगी/ करना होगा सब का उत्थान, प्रीत-मंजरी के संग, ऐसी मुहिम चलाऊंगी ।''

मुझे उम्मीद है कि 'प्रीत' की यह काव्य-'मंजरी' लोगों को पसंद आएगी । इन ताज़ा युवा कविताओं में परम्परा के दर्शन हैं और आधुनिकता का संस्पर्श भी । बग़ावती तेवर भी हैं तो संस्कारों के प्रति प्रबल आग्रह भी । इस संग्रह की तमाम कविताओं पर सुदीर्घ विमर्श हो सकता है लेकिन अपनी बात को यहीं पर विराम दे रहा हूं, इस विश्वास के साथ कि समकालीन कविता की गुमराह दुनिया में प्रीत की कविताएं रास्ता सुझाएंगी और मरती हुई नयी कविता को प्राणवान बनाने का काम करेंगी । यह अतिरंजित तारीफ़ नहीं है, दिल से निकली भावनाएं है क्योंकि इस तरह की सरल, तरल और नैतिक कविताएं दुर्लभ होती जा रही हैं ।

मुक्तक

क्या गंतव्य मिलेगा जब अभिलाषा बदला करती है ।
समाधान क्या होगा जब जिज्ञासा बदला करती है ।
गिरगिट-सा व्यवहार व्यक्ति का, क्या विश्वास किया जाए,
आए दिन जब निष्ठा की परिभाषा बदला करती है ।

भाग्य से जो भी मिला हंसकर सहेंगे हर समय ।
हों भले ही गर्दिशें मिलकर रहेंगे हर समय ।
कारवां हो मुश्किलों का, या अभावों का सफ़र,
भूख को हम भीख से बेहतर कहेंगे हर समय ।

मछुहारों की मजबूरी भी जान गये ।
परिवर्तन की व्यथा-कथा पहचान गये ।
इस दुनिया में जो भी कुछ हो जाए कम है,
जाल मछलियां भी रखती हैं, मान गये !

कमल किशोर 'भावुक'
लखनऊ (उ०प्र०)

निजी अनुभव पर आधारित

तंत्र-मंत्र के चक्कर में फंसते हताश लोग

❖ सी॰ के॰ रहमानी

14 मई, 2013 को समाचार पत्रों में पढ़ा कि दिल्ली के सेवा नगर में दो परिवारों के घर से शनि की महादशा का कोप दूर करने के लिए एक पंडित जी ने हवन किया और 11 तोले सोने के जेवर लेकर उड़न छू हो गयें। पुलिस ने सर्विलांस का सहारा लिया और बिहार तक की खाक छान आयी लेकिन पंडित जी महाराज का सुराग़ नहीं लगा। यह अपने तरह की पहली या आख़िरी घटना नहीं है। हर रोज़ इस तरह की ठगी के मामले सामने आते रहते हैं आगे भी होते रहेंगे इसकी पूरी संभावना नहीं बल्कि यक़ीन है।

सभी समस्याओं का समाधान, नौकरी में बाधा, बशीकरण का पूरा इन्तिज़ाम, प्रेमी-प्रेमिका को बस में करना, गढ़े धन का पता लगाना, सौतन से छुटकारा, बीमारी में दवा का न लगना, भूत-प्रेत से छुटकारा, विदेश यात्रा, शादी में रुकावट, नौकरी लगकर छूट जाना, व्यापार में घाटा, शत्रु पर विजय प्राप्त करना, मुक़दमे में जीत, पति प्रेम नहीं करता है, किसी दूसरी औरत से फंसा हुआ है, किसी ने कुछ कर दिया है, पैसा आता है लेकिन घर में रुकता नहीं, गृह क्लेश, बॉस ख़ुश नहीं है, घर नहीं बन पा रहा, नौकरी में तरक़्क़ी नहीं हो रही है जैसी तमाम समस्याओं के लिए पूरे देश भर में बाबाओं-तांत्रिकों का जाल फैला हुआ है। गांवों, शहर-क़स्बों से लेकर महानगरों में जगह-जगह इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए बाबा, तांत्रिक गली-कूचों में मिल जाते हैं। अगर गली मुहल्लों में नहीं मिल पा रहे तो टी॰वी॰ पर मौजूद हैं। यहां एक से एक पहुंचे हुए तांत्रिक बाबा, ज्योतिषी मिल जाएंगे। कई हज़ार मंत्रों से सिद्ध किया हुआ लॉकेट, अंगूठी, यंत्र मिल जाएंगे।

सब मानते हैं और जानते हैं कि यह सब ठगी है, अंधविश्वास है और इससे कुछ होने वाला नहीं है, फिर भी धंधा चल रहा है, चल ही नहीं रहा दौड़ रहा है। हर रोज़ लोग ठगे जा रहे हैं, फिर भी लोग बाबाओं के पास जा रहे हैं। दरअस्ल, इस धंधे के चलने के कई कारण हैं। एक, मानवीय स्वभाव है कि हम समस्या से जूझने के बजाय उसके हल का आसान तरीक़ा तलाशते हैं। ऐसा तरीक़ा जिसमें महेनत न हो, हो तो कम हो और समय भी न लगे, अगर लगे तो बहुत कम। यह रास्ता अंधविश्वास और छाड़-फूंक, ताबीज़-गंडा की तरफ़ जाता है, क्योंकि यही शार्टकट है। दो, आदमी चारों ओर से जब निराश, हताश, असफल हो जाता है तब वह इनका सहारा लेता है, सोचता है चलो इसको भी आजमा कर देख लिया जाए, क्योंकि इसको इस तरह प्रचारित किया जाता है कि समस्या का समाधान घंटों में हो जाएगा। यानी हताश, निराश, नाकाम, असुरक्षित व्यक्ति बाबाओं के पास जाता है, टोटके आजमाता है और ठगा जाता है।

दरअस्ल निराशा और हताशा आदमी को भाग्यवादी बनाती है। हमारे देश में भाग्यवादियों की कमी नहीं है, क्योंकि यहां घनघोर ग़रीबी है। ग़रीब चमत्कार की उम्मीद करता है और चमत्कार दिखाने का दावा बाबा करते हैं। यही कारण है कि लगभग हर अख़बार, दैनिक और साप्ताहिक भविष्यफल छापता है। लोग रोज़ उसे पढ़ते हैं और उस पर भरोसा भी करते हैं।

तीसरे यह कि लालच भी आदमी को तांत्रिकों के पास ले जाता है। भौतिक सुख की चाह और जल्द धनी होने की लालसा भी शार्टकट ढूंढ़ती है, वह शार्टकट बाबा हैं। जब आदमी भाग्यवादी बनता है तो उसे ख़ुद पर और अपने कर्म पर भरोसा नहीं रह जाता। फिर वह अल्लाह पर नहीं कथित रूप से चमत्कार करने वाली ताक़तों के आगे झुकने लगता है।

निराश आदमी के जीवन में विज्ञापन की यह लाइन 'सब जगह से निराश हो चुके लोग ही मिले' हथौड़े की तरह वार करती है। इस लाइन में अघोषित रूप से सौ प्रतिशत गारंटी का भाव छिपा है। दूसरी बात, जो लोग ठगे और छले जा चुके हैं उनमें से 99 प्रतिशत बताते ही नहीं है कि वे ठगे

गये हैं क्योंकि वह जानते हैं कि लोग उसकी मूर्खता पर हंसेंगे ।

पूर्व रेल मंत्री पवन कुमार बंसल ने भी असुरक्षा की भावना के चलते ही बकरे की पूजा या बलि चढ़ाई थी । (टी०वी० में बकरे को दिखाया गया था) यानी जो व्यक्ति असफल और असुरक्षित है वह बाबाओं और तांत्रिकों की शरण में जाता है । सौतन से छुटकारा दिलाने, बांझपन दूर करने, बच्चा पैदा करने या फिर पति को बस में करने के नाम पर तांत्रिक कई युवतियों की इज़्ज़त लूट चुके हैं और आगे ऐसा नहीं होगा इस बात की कोई गारंटी नहीं है ।

मेरा निजी अनुभव है कि व्यक्ति हताशा में इनका शिकार होता है । यह अलग बात है कि ठगी कम ज़्यादा व्यक्ति के विवेक पर होती है । मेरा बड़ा बेटा दस साल से नशे का आदी है । कई साल तक यह पता नहीं लगा कि वह नशा करता है लेकिन उसकी हरकतें अजीब थीं । दीवार में सिर मारना, रास्ता चलते या सोते हुए उछल पड़ना, बिस्तर से न उठना, चीखना चिल्लाना शामिल है । इससे पूरा घर परेशान ।

दिल्ली के कई जाने-माने अस्पतालों में उसे दिखाया लेकिन कोई लाभ नहीं । तभी किसी ने पत्नी को बताया कि 'ऊपरी चक्कर' है, फलां मुल्लाजी, फलां मज़ार पर जाकर ठीक हो जाएगा । चूंकि चारों ओर से निराश हो चुके थे इसलिए पत्नी और बहू के दबाव में न चाहते हुए यह सोचकर कि शायद इन्हीं का 'हाथ' लग जाए और घर का तनाव ख़त्म हो जाए, इस उम्मीद से बाबाओं का सहारा लिया ।

यह भी सोचा कि जो हम तिल-तिलकर मर रहे हैं शायद उससे मुक्ति मिल जाए । जिसने जहां बताया वहां गये । तमाम मज़ारों और मुल्लाओं के दर की ख़ाक छान मारी । कई ज्योतिषियों और बाबाओं के पास गये । सबने ठीक करने की गारंटी दी लेकिन हुआ कुछ नहीं । सब तंत्र-मंत्र ताबीज़-गंडे बेकार साबित होने थे सो हुए । बाद में किसी ने बताया कि आपका बेटा भांग खाने का आदी है इसलिए ऐसी हरकतें करता है । इसके बाद कई नशा मुक्ति केन्द्रों में भर्ती कराया लेकिन कुछ नहीं हुआ । अब भी यह उम्मीद पाले बैठे हैं कि शायद कहीं कोई चमत्कार हो जाए तो उसके बच्चों को रोटी कपड़ा मिलने लगे, क्योंकि नशे का आदी आदमी काम तो करता नहीं है । यह बताने की ज़रूरत नहीं कि ऐसे घर में हर समय क्लेश रहता है । समाज में अपमान और आर्थिक विपन्नता अलग । ऐसा भी नहीं है कि लोगों ने उसकी मदद नहीं की ।

ऐसे घोर निराशा के दौर में यदि कोई विज्ञापन सामने आता है कि फलां आदमी ठीक कर देगा तो घर वाले वहां ले की सोचने लगते हैं या उससे बहुत उम्मीद बंधने लगती है । इसलिए यह बात निकलकर आयी कि आदमी निराशा, हताशा और असुरक्षा में ही इस रास्ते को चुनता है । दिल्ली के सेवा नगर में जो ठगी हुई उसके पीछे भी ऐसी ही कहानी थी । उस परिवार का बड़ा बेटा कोई काम नहीं करता था । इस पर पंडित जी ने कहा कि बेटे पर शनि की महादशा चल रही है इसलिए वह कोई कामकाज नहीं कर रहा है । अगर घर में हवन कर लिया जाए तो शनि की महादशा का प्रकोप ख़त्म हो जाएगा । पंडित जी के कहने पर युवक के मां-बाप ने हवन कराया और उस हवन को कामयाब बनाने के लिए पंडित जी के कहे अनुसार उन लोगों ने घर के जेवर भी हवन स्थल पर रख दिये जिसे लेकर पंडित जी चलते बने ।

हिन्दी ग़ज़ल

लग रहा है आदमी अब सिर्फ़ सोना खाएगा
या वो चांदी से लिपट सुनसान में सो जाएगा

बांधकर परमाणु बम को तितलियों के पंख से
प्यार के आभास को नर भून करके खाएगा

पांव से चट्टान लिपटी है अंधेरे की मगर
अगले पल मां की दुआओं का दिया जल जाएगा

है ज़रा मुश्किल मगर फूटेगी ट्रक मीठी नदी
जब पहाड़ों से हमारा हौसला टकराएगा

हो गया बूढ़ा तो यह पैनी कुल्हाड़ी आ गयी
फलसफ़ा दुनिया का ये कटता शजर बतलाएगा

सिर्फ़ 'यायावर' रहेगा या वही बूढ़ा कबीर
पोथियों के साथ पंडित एक दिन मर जाएगा ।

डॉ० यायावर
86, तिलक नगर, बाईपास रोड,
फ़ीरोज़ाबाद-283203 (उ०प्र०)

शीतल पेय के रूप में बिक रही बीमारियां

❖ विद्या प्रकाश

गर्मी का मौसम चल रहा है । तपती धूप से झुलसते मौसम में सूखते गले को तर करने के उद्देश्य से गन्ने और आम के जूस, बेल के शरबत, लस्सी, पना तथा भांति-भांति के कोल्ड ड्रिंक से दुकानें सज उठी हैं । शीतल पेय पदार्थों के दुकानदार ग्रीष्म तथा पिपासा से व्याकुल जन के शुष्क कंठ को शीतल पेय से तत्काल तृप्त तथा तर तो कर देते हैं, नाना प्रकार की संक्रामक बीमारियों को परोसने तथा न्योता भी देने में पीछे नहीं रहते हैं । गर्मी के इस मौसम की शुरुआत होते ही विभिन्न शहरों के बाज़ारों में तरह-तरह के शीतल पेय पदार्थों की शक्ल में खुलेआम बीमारियां बिक रही हैं ।

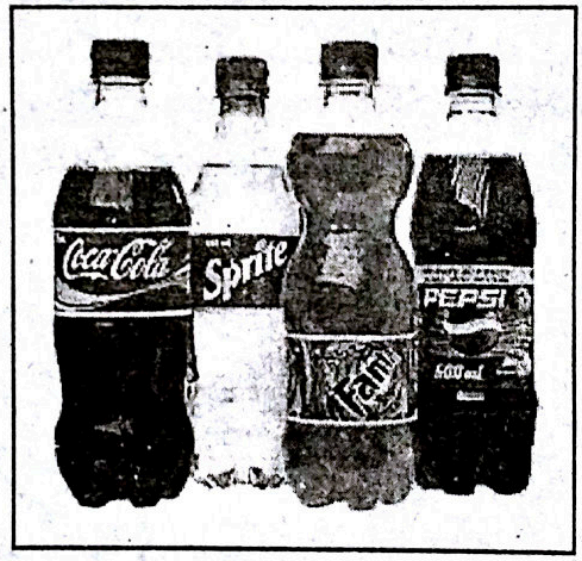

मौसमी शीतल पेय बेचने के लिए कुछ लोगों ने बाज़ारों में अपनी दुकानें खोल ली हैं तथा कुछ लोग ठेले के साथ मुहल्लों तथा बाज़ारों में घूम-घूमकर शीतल पेय का कारोबार करते हैं । विद्यालय खुला रहने पर रंगीन आइस गोला का धंधा करने वाले कारोबारी स्कूल कॉलेज के आसपास तथा बाज़ारों में ठेला लेकर खड़े हो जाते हैं तथा पेपर प्लेट, कुल्हड़ या प्लास्टिक मग में बर्फ़ के चूर्ण में मिठास तथा ख़ूबसूरती के लिए सैक्रीन तथा लाल, हरा या पीला रंग डाल देते हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक तथा रोगकारक होता है । गन्ने के रस विक्रेता अर्थ लाभ के लोभ में गन्ना की पेराई वाली मशीन में जुयें तथा घुन के आकार वाले काले कीटयुक्त लाल चकत्तीदार रुग्ण ईक्षुदंड भी पेरने से बाज नहीं आते ।

इसी प्रकार बेल के शरबत तथा मैंगो जूस को स्वादिष्ट, मीठा तथा स्वाभाविक रंग युक्त बनाने के लिए दुकानदार सैक्रीन तथा विभिन्न रासायनिक कृत्रिम पदार्थों का बेख़ौफ़ तथा बेहिचक इस्तेमाल करने में ज़रा भी नहीं चूकते भले इनका सेवन करने वाले ग्राहकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव क्यों न पड़े ।

इन कारोबारियों ने अपने थोड़े से फ़ायदे के लिए इन्सानी तथा अख़्लाक़ी क़ायदा बिगाड़ कर रख दिया है । इस प्रकार के सड़े फलों के जूस तथा मिलावटी शरबत के पीने से व्यक्ति धीरे-धीरे अनेक संक्रामक तथा ख़तरनाक बीमारियों के आगोश में जकड़ जाता है तथा लीवर और गुर्दा सहित शरीर के विभिन्न अंगों की कार्य क्षमता प्रभावित होने लगती है तथा व्यक्ति को आंत्रशोथ, दमा, कैंसर, पीलिया, तपेदिक वग़ैरह नाना प्रकार के रोगों के होने की संभावना बढ़ जाती है । ऐसे फलों के मिलावटी जूस तथा दूषित शरबत के सेवन से व्यक्ति तत्काल तरावट तथा शीतलता का अनुभव तो करता है मगर आगे चलकर स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव की शक्ल में उसे घातक परिणाम भोगना पड़ता है । आश्चर्य है कि एक तरफ़ शासन-प्रशासन के स्तर पर लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा, संरक्षण तथा बेहतरी के लिए अनेकानेक योजनाएं संचालित हैं और दूसरी तरफ़ बाज़ार में खुलेआम बिकने वाले तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से घातक तथा हानिकारक प्रदूषित पेय पदार्थ की तरफ़ से खाद्य निरीक्षक तथा स्थानीय प्रशासन उदासीन तथा बेख़बर है या महीना बंधा होने के कारण वह ऐसे अपमिश्रित पेय पदार्थ विक्रेताओं के ख़िलाफ़ कार्रवाई नहीं करना चाहता ।

सीलबन्द कोल्ड ड्रिंक की अपेक्षाकृत सस्ता तथा किफ़ायती होने के कारण गन्ने, बेल तथा आम के चूस तथा बर्फ़ के कृत्रिम रंग युक्त सैक्रीनदार शरबत की बाज़ारों में ज़्यादा खींच और खपत है । ग्रीष्म में शीतल पेय के नाम पर परोसी जाने वाली बीमारियों की रोकथाम तथा बचाव हेतु जनजागरूकता की आवश्यकता है ।

انگریزی اور ہندی میں

رمضان کے تحفے

Towards Understanding the Qur'an

Surahs1-3 Vol.I [HB]	سیّد ابوالاعلیٰ مودودیؒ	175.00
Surahs 4-6 Vol.II [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	160.00
Surahs 7-9 Vol.III [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	180.00
Surahs 10-16 Vol.IV [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	175.00
Surahs 17-21 Vol.V [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	150.00
Surahs 22-24 Vol.VI [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	170.00
Surahs 25-28 Vol.VII [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	160.00
Surahs 29-31 Vol.VIII [HB]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	125.00
Towards Understanding the Qur'an [20x26/08]	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	460.00
[20x26/16]		250.00
Eid-ul-Fitr Address	سیّد جلال الدین عمری	8.00
Fundamentals of Islam Part -III	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	28.00
Worship and Festival in Islam	سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	28.00
The Institution of Fasting	محمد مظہر حسینی	35.00
अनूदित क़ुरआन मजीद 23 X 36 / 16	सैयद अबुल आला मौदूदी	280.00
तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग- 1	तलख़ीस: मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	450.00
तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग- 2	तलख़ीस: मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	350.00
ईदुल-फ़ित्र किसके लिए ?	सैयद अबुल आला मौदूदी	8.00
ख़ुतबात-३ (नमाज़, रोज़ा की हक़ीक़त)	सैयद अबुल आला मौदूदी	23.00
रोज़ा और उसका असली मक़सद	सैयद अबुल आला मौदूदी	6.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें ?	ख़ुर्रम मुराद	20.00



مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

मोक्ष की प्राप्ति क्यों और कैसे ?

■ श्याम नारायण चौहान
(चंदौली, उ०प्र०)

मानव के पास केवल प्राण और जीवन ही नहीं होता बल्कि इसके साथ कुछ मूलभूत समस्याएं भी होती हैं । इन समस्याओं का अनुभव प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को होता है । इन मूलभूत समस्याओं का समाधान जिस मार्ग के द्वारा संभव हो वही मुक्ति मार्ग है । जिन उपकरणों और साधनों से यह मार्ग सुगम हो उन्हीं साधनों को हम मुक्ति का साधन कह सकते हैं ।

सबसे पहले हम इस पर विचार करें कि मानव है क्या ? आप देखेंगे कि मानव के व्यक्तित्व का निर्माण तीन चीज़ों से होता है । प्रत्येक दशा में उसके कुछ विचार और मान्यताएं होती हैं । विचार के अतिरिक्त उसे भाव, गुण भी प्राप्त है और मानव की तीसरी विशेषता यह होती है कि वह कर्म की योग्यता भी रखता है जीवन के इन तीनों पहलुओं में एकात्मता और संतुलन ही नहीं इनमें से प्रत्येक का अपने स्थान पर शुद्ध और यथार्थ होना भी आवश्यक है । इनके बिना मानव का व्यक्तित्व दूषित ही रहता है न तो उसे पूर्णता प्राप्त होती है और न ठीक दिशा में उसका विकास हो पाता है । जहां तक मानव की विचारशीलता का संबंध है वह जानना चाहता है कि संसार क्या है ? और स्वयं उसके अपने जीवन का वास्तविक आशय और अभिप्राय क्या है ? वह कौन-सी मंज़िल है जिसका वह मुसाफ़िर है ? वह कौन-सा लक्ष्य है जिसे उसको प्राप्त करना है । वह संसार की और अपने जीवन की ऐसी अभिव्यंजना (Inter Pretation) ढूंढ़ता है । जिससे उसकी समस्त शंकाओं का निवारण हो सके जिसके अनुकूल वह अपने संकल्प एवं कर्म आदि को बनाकर अपने को कृतार्थ समझ सके । हम तनिक और अधिक विस्तार में जाएं तो पाएंगे कि मानव को साधारणतया जो चीज़ें मिली हैं वह धन-जन आदि सुख-सामग्री के रूप में हों या किसी और रूप में वे सब अस्थायी और अनित्य एवं नाशवान दीख पड़ती हैं । यहां तक कि स्वयं उसका जीवन भी अनित्य दिखायी पड़ता है । हालांकि कामना वह अनित्य की नहीं नित्य की करता है । फिर सीमित जीवनकाल में भी उसे प्राप्त वस्तुओं से वह संतोष और आनन्द नहीं मिल पाता जिसकी उसकी आत्मा इच्छा करती है । उसे प्राप्त वस्तुओं के अतिरिक्त कोई और ज़रूरत सताती है । वह किसी ऐसी चीज़ की अपेक्षा करता है जिससे उसके मन के सूक्ष्म व्यापार चल सकें । वह देखता है कि भौतिक वस्तुएं इस सिलसिले में कुछ अधिक योगदान नही दे पातीं मानव के विचार लोक से आगे जब हम उसकी भाव संबंधी समस्याओं को देखते हैं तो यह समस्या विचार संबंधी समस्याओं से कम महत्वपूर्ण नहीं दीख पड़ती । भाव ही मानव का सबसे महत्वपूर्ण और कोमल अंग है इसके बिना संपूर्ण जीवन निस्सार तथा निरर्थक होकर रह जाता है मानव आत्मा या मानव हृदय ऐसे सत्य मधुर और सुन्दर एवं कल्याणकारी भावों का अभिलाषी है जो विचार एवं ज्ञान के अनुकूल हीन हो बल्कि वे उसके लिए वरदान सिद्ध हो सकें उनके कारण उसका संपूर्ण जीवन आनन्दमय हो जाए और वह यह महसूस करने लगे कि वर्तमान जीवन में कुछ

इस अभीष्ट शाशवत जीवन के निर्माण में मानव को अपना योग देना है और योगदान यही है कि वह उस अनंत और मृत्युहीन आनन्द या सत्य अथवा असीम से अपना संबंध विचार, भाव और कर्म आदि प्रत्येक स्तर पर स्थापित करे । आनन्द और आनन्द रूप से उसका यह संबंध स्वयं उसे भी पूर्ण और सुन्दर बना देगा और उसे ऐसे लोक में स्थान दिया जाएगा जहां वह सब कुछ उसे मिल सकेगा जिसकी वह कामना करता है और इसके अतिरिक्त ऐसी वस्तुएं भी प्रदान होंगी जिसकी आज कल्पना करना भी हमारे लिए संभव नहीं है ।

पाने को अब शेष नहीं रहा वह यह जान ले कि उसके हाथ वह धन लग गया जिसके मुक़ाबले में संसार का सारा वैभव धूल के सदृश है । फिर मानव को ऐसी कर्म-पद्धति चाहिए जो विचार एवं ज्ञान और उसके भावनात्मक पहलुओं से अलग या विपरीत न होकर उसके अनुकूल हों । कर्म का क्षेत्र भी अत्यंत विस्तृत है उसका संबंध मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों पहलुओं से है । इस सिलसिले में नाना प्रकार की जटिल समस्याएं मानव के सामने उपस्थित होती हैं इसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में होता है ।

अभी तक हमने मानव और उसकी मूलभूत समस्याओं की ओर संकेत किया है उन समस्त समस्याओं का समाधान जिस व्यक्ति के जीवन में सही रूप में हो गया वह मुक्त अवस्था को प्राप्त हो गया । यह धर्म की उद्घोषणा नहीं है बल्कि अन्य विचारकों और वैज्ञानिकों को भी स्वीकार करना पड़ा है कि वर्तमान जगत और मानव जीवन की व्याख्या इसके बिना संभव नहीं कि एक ईश्वर की सत्ता स्वीकार की जाए । परम सत्ता और परम अस्तित्व को माने बिना किसी प्रकार से इस प्रत्यक्ष लोक की कोई व्याख्या नहीं की जा सकती । यह जो प्रकाशमान जगत है यह इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि ईश्वर का मृत्युहीन आनन्द है जो रूप धारण करके प्रकाशित हो रहा है ।

क़ुरआन में है, "अल्लाहु नुरुस्समावाति वल अर्ज़ कुल्लु यौमिन हुवफ़ीशानं" अल्लाह आसमानों एवं ज़मीन का नूर (प्रकाश) है नित वह नयी शान व कार्य में है । उसी का भाव एवं आनन्द इस क्रियाकलाप में व्यक्त हो रहा है । ज्ञानहीन मानव की दुर्बलता यह है कि वह अपनी जड़ता, मूढ़ता तथा ग़लत संस्कारों के कारण केवल रूप को देखता है उस आनन्द को नहीं देख पाता जो इस रूप में प्रकाशित हो रहा है । यही कारण है कि पग-पग पर उसे विपदाएं घेरती हैं तरह-तरह की बाधाओं का उसे सामना करना पड़ता है । ईश्वर के क्रियारत आनन्द के साथ अपना योग देना ही यथार्थ मुक्ति है और इसी में यथार्थ आनन्द है इसी में हमारे समस्त प्रयोजन पूरे होते हैं । इसी से हमारा संपूर्ण जीवन सार्थक और मुक्त रूप हो जाता है । मुक्ति इसका नाम नहीं मनुष्य जीवन और अस्तित्व के बंधन से ही छुट्टी पा ले, क्योंकि इस दशा में मुक्ति अमुक्ति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता ।

यह विश्व हमारे लिए उसी समय तक कारगर है जब तक हम में प्रेम जागृत नहीं होता जब तक हम उस आनन्द को नहीं पाते जो संपूर्ण विश्व में प्रकाशित हो रहा है । इस व्यापक आनन्द के दर्शन के लिए आवश्यक है कि हम अपने मन और आत्मा के विस्तार के लिए तैयार हों । संकुचित मन और तंगदिली के साथ हमारे अंत: को व्यापक आनन्द एवं सत्य ज्योति का आभास कैसे हो सकता है । इसलिए इस मुक्ति के लिए स्वार्थ त्याग, अहंकार, त्याग, आदि पर बल दिया गया है और क्षमा, दया और प्रेम आदि की शिक्षा दी गयी है, हृदय विशालता के बिना इस मार्ग में एक क़दम नहीं चला जा सकता इसीलिए क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है ।

इसी बात को हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने इन शब्दों में व्यक्त किया है कि, "मैं तुम से सच कहता हूं कि (लोभी) मालदार स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते । फिर मैं तुम से कहता हूं कि ऊंट का सूई के नाके से निकलना आसान है (लोभी) मालदार का आसमानी बादशाहत में दाख़िल होना मुश्किल है । आसमानी बादशाहत या ईश्वरीय राज्य ये प्रवेश पाना अपने वास्तविक अर्थ में मुक्ति प्राप्ति ही का दूसरा नाम है । प्रेम का मूल लक्षण आत्म समर्पण है । ईश्वर के प्रति अपने को अर्पण करना जीवन की परमसाधना व श्रेष्ठतम यज्ञ है । यह आत्म समर्पण किसी अनिष्टता एवं विवशता का सूचक कदापि नहीं है, बल्कि यह मानव आत्मा का सबसे मधुर और सुखकर व्यापार है इसी के द्वारा परमात्मा के साथ वास्तविकता के स्तर पर संपर्क स्थापित होता है । यह आत्म समर्पण मानव को उस आनन्द एवं सत्य के निकट कर देता है ।

अंत में हमें इस समस्या पर भी विचार कर लेना है कि मानव के अन्दर जब इच्छा और कामना शाश्वत जीवन की पाई जाती है तो फिर उसे संसार में नाशवान जीवन क्यों दिया गया ? यहां की समस्त वस्तुएं उसे ऐसी मिली हैं जो अनित्य हैं सदैव रहने वाली नहीं है हालांकि कामना उसे अनित्य की नहीं नित्य की प्रदान की गयी है । क़ुरआन के अध्ययन से मालूम होता है कि नित्यता, ऐसा गुण है जो अत्यंत पूर्णता का परिचायक है जब वह प्राप्त होगा तो अपनी समस्त विशेषताओं के साथ प्राप्त होगा उस समय कोई चीज़ छुपी न रहेगी । यहां तक कि स्वयं ईश्वर के दर्शन भी प्रत्यक्षत: मानव को प्राप्त होंगे । फिर कोई बाधा या कठिनाई या दुख और पीड़ा मानव के जीवन में शेष नहीं रहेगी । न लोगों की शक्ति

क्षीण होगी न उनकी जवानी ख़त्म होगी, न अपने किसी प्रिय के वियोग का दुख कभी झेलना पड़ेगा और न मृत्यु कभी जीवन का अंत कर सकेगी ।

इस अभीष्ट शाशवत जीवन के निर्माण में मानव को अपना योग देना है और योगदान यही है कि वह उस अनंत और मृत्युहीन आनन्द या सत्य अथवा असीम से अपना संबंध विचार, भाव और कर्म आदि प्रत्येक स्तर पर स्थापित करे। आनन्द और आनन्द रूप से उसका यह संबंध स्वयं उसे भी पूर्ण और सुन्दर बना देगा और उसे ऐसे लोक में स्थान दिया जाएगा जहां वह सब कुछ उसे मिल सकेगा जिसकी वह कामना करता है और इसके अतिरिक्त ऐसी वस्तुएं भी प्रदान होंगी जिसकी आज कल्पना करना भी हमारे लिए संभव नहीं है । यह ऐसा मोक्ष की प्राप्ति है जिससे बड़ा और यथार्थ मोक्ष कोई नहीं है । ईश्वर का सामीप्य सदैव के लिए उसे प्राप्त होता है, ईश्वर उससे खुश एवं राज़ी होगा और उसे प्रत्यक्षत: अपने दर्शन भी देगा और कह दिया जाएगा ।

''ज़ालिका यौमुल खुलूद'' यह है नित्य दिवस अर्थात यह है वह दिन जिसकी तुम्हें तलाश थी, जिसकी तुम्हारी आत्मा प्रतीक्षा कर रही थी । लेकिन यदि कोई ईश्वरीय योजना के विरुद्ध आचरण करता है और ईश्वर का विद्रोही बन जाता है या उसके पद पर दूसरों को आसीन करता है तो उस अन्यायी के हिस्से में पीड़ा, यातना और अनुताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं आ सकता । ईश्वर दयावान है और वह न्याय करने वाला भी है, उसके गौरव और सम्मान का निरादर करके कोई व्यक्ति पनप नहीं सकता ।

अभीष्ट शाशवत जीवन एक वृक्ष के सदृश है जिसकी पौध वर्तमान जीवन में लगायी जाती है जो परलोक में हरे-भरे वृक्षके रूप में हमारे सामने आएगा । यह पौधा मानव के वे सत्कर्म हैं जो ईश्वरीय इच्छा के अनुकूल हों । कर्मों की सार्थकता का एक प्रत्यक्ष लक्षण यह है कि वे कर्म मानव के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध हुए हों । वे यूं ही दिखावटी न हों उसके पीछे ईश्वर के प्रति मानव के सच्चे आत्म समर्पण की भावना क्रियाशील रही हो । फिर तो यह संभव नहीं कि उसके कर्म निष्फल हो जाएं । वह ईश्वर जो ज़मीन में दबे बीजों से पौधे उपजाता है और उन्हें फल-फूल वाले वृक्ष के रूप में परिवर्तित कर देता है उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह मानव के सत्कर्मों और उसके सुन्दर भावों को विनष्ट कर देगा यह बात केवल वही व्यक्ति सोच सकता है जिसे ईश्वर के गुणों और स्वभाव का परिचय न हो, जो वर्तमान विश्व काव्य के श्रवण और इसके समझने में असमर्थ हो ।

प्रिय सज्जनों हमने मोक्ष के विषय पर इस्लामी दृष्टिकोण से जो विचार व्यक्त किये हैं उस पर आप विचार करेंगे तो पाएंगे कि ये विचार हम भारतवासियों के लिए अजनबी नहीं हैं इनकी पुष्टि में भारतीय ग्रंथों से बहुत कुछ जुटाया जा सकता है । इसका कारण यह है कि क़ुरआन किसी अछूते नये धर्म को प्रतिपादित करने के लिए नहीं उतरा है बल्कि वह उसी धर्म की पुष्टि करता है जो आदि से बसी हों पैग़म्बरों और सच्चे लोगों का धर्म रहा है चाहे वे किसी काल या देश में हुए हों । क़ुरआन का अपना बयान यह है कि वह मुहैमिन है अर्थात वह पिछले समस्त ईश्वरीय ग्रंथों का रक्षक है अर्थात उसके द्वारा पिछले ईश्वरीय ग्रंथों की शिक्षाओं को सुरक्षा प्राप्त हुई है । क़ुरआन में एक जगह है, ''व इन्दहु लफ़ी जुवरिल औवलीन'' वह अगली किताबों में समाया हुआ है अर्थात वह अगले ईश्वरीय ग्रंथों से अलग कोई मार्गदर्शन नहीं लेकर आया है ।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि विचार भाव और कर्म आदि प्रत्येक स्तर पर आनन्द एवं अनन्त रूप ईश्वर से तदस्यू स्थापित करना ही मोक्ष है क्योंकि इसी रूप में हमारी आला विकास की चरम सीमा को छू लेती है और इसी में उसके समस्त प्रत्यक्ष और निहित प्रयोजनों की पूर्ति होती है । इस तदात्म्य का लक्षण है प्रेम, आत्म-समर्पण, विनयभाव एक ईश्वर की दासता उसकी आज्ञा का पालन, संतुलित जीवन, पूर्ण व्यक्तित्व आदि । इस आनन्द स्वरूप के स्पर्श से मानव भी अमरता और अभीष्ट शाशवत जीवन का अधिकारी हो जाता है ।

संक्षेप में मोक्ष का बाह्य और आंतरिक रूप आपके सामने आ गया । इस सारी वार्ता को अगर समेट कर एक वाक्य में कहना चाहे तो कह सकते हैं कि मुक्त एवं आनन्द रूप इष्ट प्रभु की रक्षात्मक अनुभूति का नाम मोक्ष है । यह अनुभूति इस लोक में भी होती है और पूर्ण रूप में यह अनुभूति परलोक या आख़िरत में होगी ।

यही कारण है कि निष्कर्षात्मक पुकार दुनिया और आख़िरत में ज्ञानियों की यही होगी । ''अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'' सारी प्रशंसा एवं स्तुति अल्लाह के लिए है जो सारे जग का पालनकर्ता प्रभु है ।

ख़तरे में है डॉल्फ़िन

हट्टा-कट्टा शरीर । वज़न 150 किलोग्राम से भी अधिक लेकिन बेहद फुर्तीली, मगर नज़र बेहद कमज़ोर । यह है डॉल्फ़िन जिसे सोंस अथवा अंधी डॉल्फ़िन के नाम से भी जाना जाता है । भारत, नेपाल तथा बंगलादेश की नदियों में पायी जाने वाली डॉल्फ़िन की संख्या में विगत कुछ वर्षों के दौरान ज़बरदस्त कमी आयी है । इसे देखते हुए इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ़ नेचर ने इसे विलुप्तप्राय जीव घोषित कर दिया है । अब इनकी संख्या लगभग 1800 तक सिमट कर रह गयी है ।

गंगा की डॉल्फ़िन देश के सात राज्यों–असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल में पायी जाती है । गहरे पानी में रहने वाली ऐसी डॉल्फ़िन के शरीर पर बड़े फ़्लिपर मौजूद होते हैं जो उन्हें तैरने में मददगार होते हैं । मज़ेदार बात यह है कि यह एक ही साइड से तैरती है, ताकि फ़्लिपर से निचली सतह वाली कीचड़ हटा सके तथा वहां छिपे छोटे-छोटे जीवों तथा कीड़ों का शिकार कर सके ।

अपने शिकार को यह अनोखे तरीक़े से पकड़ती है । इसके मुंह से निकली अल्ट्रासोनिक आवाज़ शिकार तक पहुंचती है जिसके आधार पर इसके दिमाग़ में शिकार का प्रतिबिंब बनता है तथा यह उसे पकड़ने की कोशिश करती है । लगभग 30 से 120 सेकेंड के बीच गहरे पानी में रहने के बाद यह सांस लेने के लिए पानी की सतह पर आती है । यह जलचर प्राणी है ।

इस्लामी पुस्तकें

सहाबा किराम की रोशन ज़िन्दगियाँ	(अब्दुल रहमान पाशा)	₹200
68 सहाबा की ईमान अफ़रोज़ दास्ताँ- पेज 512		
नराशंस और अन्तिम ऋषि	(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)	₹20
कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब	(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)	₹20

पुस्तक विक्रेता और दावती काम करनेवालों के लिए विशेष छूट

KHALID BOOK DEPOT

Head Office: Chander Ghata, Maqbara, Kota - 6 (Raj.)
Ph.: 0744-2381650, 08233318955 E-mail: mkkhan123456@gmail.com

Branch Office: **JAMAL BOOK DEPOT**
25/B-1 (Basement) Rehman Complex, Batla House Chowk, Jamia Nagar, N.Delhi-25 | Ph.: 9990507638

संकट में शरीर फुला लेती है पफर मछली

भारतीय महासागर में पूर्वी अफ़्रीक़ा के तट से लेकर आस्ट्रेलिया तक तथा प्रशांत महासागर में हवाई से लेकर जापान तक पायी जाने वाली पफर मछली मछलियों की एक ऐसी विशेष प्रजाति है जो ज़रा-सा ख़तरे का आभास होने पर अपने शरीर को पफ कर लेती है यानी गुब्बारे की भांति फुला लेती है । इसकी इसी विशेषता के कारण ही इस मछली को पफर के नाम से जाना जाता है ।

इस मछली के शरीर पर छोटे-छोटे कांटे होते हैं जो इसका शरीर फूलने पर खड़े हो जाया करते हैं । किसी प्रकार का ख़तरा भांपते ही अपने शरीर को गुब्बारे की भांति फुलाने की प्रक्रिया पफर मछली अत्यधिक मात्रा में यापी पीकर करती है । टीड, टोबीज तथा फूगू मछलियां इसी प्रजाति में आने वाली मछलियां है ।

हालांकि पफर मछलियों को विश्व के अनेक भागों विशेषकर जापान में बड़े चाव से खाया जाता है लेकिन इस मछली के कई अंग जैसे जिगर, आंत, रक्त आदि बेहद ज़हरीले होते हैं जिसके कारण प्रति वर्ष जापान में अनेक लोग इस मछली के सेवन से मृत्यु का ग्राम बनते हैं । इस मछली का विष मानव शरीर में प्रविष्ट होने के पश्चात उसके स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) को निष्क्रिय कर सकता है जिससे व्यक्ति को पक्षाघात भी हो सकता है । इस विष के प्रभाव को समाप्त तथा नियंत्रित करने वाली कोई औषधि अब तक नहीं बन पायी है । यही वजह है कि इस मछली को केवल पाक कला विशेषज्ञ बावर्ची ही सावधानीपूर्वक पका सकते हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

APPEAL FOR

Banat Foundation Gaya (Regd.)

Date of Registration-June 1, 2000-2001 under Societies Registration Act, 21, 1860, Registration No. 264

1. Name : The name of the Society is "Banat Foundation" Gaya.
2. Registered Office : The registered office of the Society is Jamiatul Banat Campus, Khandail, P.O. Cherki (Gaya) Bihar, Pin-824237
3. Aims and Objective, The aims and objective of the Society for which it is Formed and established are as follows :

a) To uplift the women in general and Muslim girls in particular in the field of modern as well as religious education and to achieve the objects, to establish, administer and control educational institutions under the article 29 and 30 of Indian constitution.

b) To establish administer and control professional and vocational institutions in all fields of modern science for girls and women, to establish women care home and orphan girl's care home.

c) To establish and maintain libraries, reading rooms and hostels for girls and women.

d) To ward prizes, scholarships and financial assistance to girl students for better education and outstanding social services to uplift the lot of the women.

e) To undertake aid and cooperate different activities of social services for women like eradication of evil, elimination of discrimination against women and other related programmes for general welfare of women.

Kindly donate generously, Cheque and Draft should be addressed to "Banat Foundation" Current A/c No.-2299582276, Central Bank of India, Khandail Branch. CBI Code No.-282454

Your sincerely,

Prof. Zeyarat Hussain Khan
Secretary

Prof. Zeyarat Hussain Khan
Secretary

Mob. : 09431085602
Email ID-taleem95@gmail.com

Posted on 20-21 July 2013
August 2013
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.7.2013

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

COMMITMENT TO QUALITY

THE FOUNDATION STONE OF OUR EVERY VENTURE

AFFLUENCE
PRIME OFFICE SPACES, VADDEM



GRANDEUR
2 & 3 BEDROOM APARTMENTS & PENTHOUSES, DABOLIM



Serenity
Luxurious Three Bedroom Row Villas, Dabolim



The Mohidin Group is committed to excellence in quality and value for money since 1958. Be it residential or office spaces, we deliver world-class structures with the most contemporary designs and high-quality fittings. With foundations as strong as these, it is needless to say what the final outcome will be.

MOHIDIN
PROPERTIES
& HOLDINGS

0-1, FIRST FLOOR, COMMERCE CENTRE, NEXT TO OLD BUS STAND, VASCO-DA-GAMA, GOA, INDIA - 403802
PHONE : +91 9373113145, 0832 - 2512415, 2512418, 2514755 FAX : +91 832 2514755
EMAIL : groupmail@mohidins.com | www.mohidinproperties.com